त्रिमूर्ति (एडवांस कोर्स)

बाबा ने संदेशियों के साक्षात्कार के आधार पर जो चार चित्र बनवाये वे हैं- त्रिमूर्ति, सृष्टिचक्र, कल्पवृक्ष, लक्ष्मी-नारायण। ये सभी पुराने चित्र लगभग 30X40 साइज के थे। इनमें मुख्य है त्रिमूर्ति का चित्र; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है-

· पहले-2 तो त्रिमूर्ति पर ही समझाना है।... पहले-2 तो परिचय देना है बाप का।

(मु.5.11.71 पृ.1 अंत)

- एक बात जब समझे तब और समझाना है। (मु.5.11.71 पृ.2 मध्य)
- पहले मुख्य बात है- मात-पिता की पहचान देनी है।... मुख्य बात है मात-पिता का परिचय दिया। अब समझा है तो लिखो, नहीं तो गोया कुछ नहीं समझा। हड्डी (दिल से) समझाकर फिर लिखवाना चाहिए। बरोबर यह जगतअम्बा, जगतपिता है। वह लिख दे बरोबर बाप से वर्सा मिलता है।... एक ही त्रिमूर्ति चित्र पर पूरा समझाना है। निश्चय करते हो यह तुम्हारा माँ-बाप है। इससे वर्सा मिलना है। (मु.12.3.87 पृ.2 मध्यांत)
- पहली मुख्य बात बुद्धि में बिठानी है कि भगवान कौन है। यह बात जब तक बुद्धि में नहीं बैठी है तब तक और कुछ भी समझाने से कुछ असर नहीं होगा। (मु.25/4/90 पृ.1 म.)

यह चित्र शिवबाबा के डाइरैक्शन से बने हैं। मु.ता.1.1.75 पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है- 'बाप के डाइरैक्शन से ही यह चित्र आदि बनाये जाते हैं। बाबा दिव्य-दृष्टि से चित्र बनवाते थे। कोई तो चित्र अपनी बुद्धि से भी बनाते रहते हैं।' इन चित्रों के चित्रण में भी गुह्य अर्थ है। जिसके लिए इसी मुरली के पृ.3 के मध्य में बाबा ने बोला है- 'तुम्हारे यह चित्र सब अर्थ सहित हैं। अर्थ बिगर कोई चित्र नो नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ नहीं तब तक कोई समझ न सके। समझाने वाला समझदार, नॉलेजफुल एक बाप ही है।' इन चित्रों में समझाने के लिए लिखत भी दी हुई है। मु.ता.30.4.71 पृ.2 के अंत में बाबा ने बोला है 'अरे, यह तो बाप ने चित्र बनाये हैं। तुम चित्रों से लिखत निकाल देते हो, तुम तो कोई डैमफुल दिखाई पड़ते हो।'

एडवांस नॉलेज

अधिकांश ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ समझते हैं कि शिवबाबा की मुरलियाँ तो सीधी-सादी सरल अर्थ वाली हैं। उनमें ऐसा कोई गुह्य अर्थ नहीं है जिसको समझने के लिए विचार-सागर-मंथन करने की आवश्यकता हो। जबकि बाबा ने मुरलियों में जहाँ एक ओर सामान्य ज्ञान (प्राइमरी नॉलेज) दिया है वहीं दूसरी ओर उन्हीं मुरलियों में विशिष्ट ज्ञान (एडवांस नॉलेज) भी दिया है। इसलिए बाबा 11.2.75 की मुरली के अंत में कहते हैं- 'बेहद का बाप बेहद की बात ही समझाते

हैं।' बेहद की बातों को वही बच्चे समझ सकते हैं जो बाबा के महावाक्यों का मनन-चिंतन-मंथन करते हैं। बाबा मुरलियों में डाइरैक्शन देते हैं- 'बच्चे, तुम त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण आदि चित्रों के सामने बैठो। रोज अमृतवेले विचार-सागर-मंथन करो तो बुद्धि में बहुत नई-2 प्वाइंट्स आती रहेंगी।' मु.ता.22.3.74 पृ.3 के अन्त में बाबा ने कहा है- 'तुमको विचार-सागर-मंथन करने की आदत पड़ती रहेगी तो प्वाइंट्स बहुत आती रहेंगी।' मु.ता.31.8.73 पृ.4 के मध्यांत में बाबा ने कहा है कि 'मुरली बच्चों को 5-6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए, तब ही बुद्धि में बैठेगी।' मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के एक-2 वर्शन्स पर विचार-सागर-मंथन करने के बाद, चित्रों की लिखत व चित्रण को उनसे टैली करने पर जो सार निकलता है, गुह्य राज़ प्रकट होता है वही एडवांस नॉलेज या नया ज्ञान है।

श्रीमत

त्रिमूर्ति के चित्र में एडवांस नॉलेज के बतौर पहली मुख्य बात श्रीमत की है। ता.21.1.69 पृ.20 की अव्यक्त वाणी में ही बाबा ने बताया है श्रीमत क्या है? -'जो ब्रह्मा का तन मुकर्रर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है वही मुरली है और संदेशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है। इसलिए जो भी मुरलियाँ चल चुकी हैं वह सभी रिवाइज़ करनी हैं।'

आबू से ब्रह्मा मुख द्वारा चलाई गई शिवबाबा की प्रमाणित मुरलियों को ही श्रीमत कहा जावेगा। श्रीमत है ब्रह्मा के थ्रू परमात्मा शिव की। वो है हमारी गीता माता और वो गीता माता भी अगर गुलज़ार दादी में प्रवेश करके प्रत्यक्ष होती है, धारणा की वाणी सुनाती है तो वो भी हमारे लिए श्रेष्ठ मत ही है। ऐसे नहीं है कि गुलज़ार दादी के द्वारा ब्रह्मा की जो कुछ बोली गई वाणी है, वो हमारे लिए माननीय नहीं है; लेकिन माननीय होते हुए भी वो हमारी समझ से बाहर है। जब तक परमात्मा स्वयं आकर उसकी व्याख्या न करें, तब तक हमारे लिए वो श्रीमत नहीं है; क्योंकि श्रीमत के लिए मुरलियों में भी बोला है- 'बाप सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं।' (मु.8.3.83 पृ.3 म.) तो हमारे लिए सन्मुख श्रीमत कहाँ हुई? सन्मुख माना मुख के सामने। तो मुख के सामने आकर परमात्मा जो श्रीमत देता है, वो टीचर और सद्गुरु के रूप में देता है। इसलिए वाणियों में बोला हुआ है- 'श्रीमत पर चलना होता है कदम-2 पर।' (मु.3.3.77 पृ.1 म.) कदम-2 का मतलब क्या हुआ? यानी अपने जीवन में जो भी कार्य करने के लिए कदम उठायें, उस हर कार्य को करने के पहले परमात्मा बाप से श्रीमत लें। यह कब सम्भव हो सकता है? जब परमात्मा सन्मुख इस सृष्टि पर विराजमान होगा, तभी तो श्रीमत लेंगे, नहीं तो कैसे लेंगे?

प्रश्न उठता है कि साकार बाबा की अनुपस्थिति में हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों को किसके डाइरैक्शन पर चलना चाहिए? इसका सीधा जवाब है 'मुरली' के डाइरैक्शन पर; क्योंकि मुरली ही हमारी लाठी है, जिसके आधार से हमें चलना है। • मुरली है लाठी। इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जावेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा; लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं; लेकिन लगन से।... सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी। मुरली से लगन अर्थात् सच्चा ब्राह्मण, मुरली से लगन कम अर्थात् हाफकास्ट ब्राह्मण। (अ.वा.23.10.75 पृ.220 अं.)

• हरेक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है, तो नोट करना चाहिए। बच्चे मुरली से नोट तो करते नहीं हैं, फिर बैठकर बाबा से वही बातें पूछते हैं। (मु.8.10.72 पृ.2 म.)

• सबका आधार मुरली पर है ही। मुरली तुमको न मिलेगी तो तुम श्रीमत कहाँ से लावेंगे? (मु.11.2.76 पृ.3 आ.)

• जो साकार की मुरली है, वही मुरली है। जो मधुबन से श्रीमत मिलती है, वही श्रीमत है। बाप सिवाय मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता।... अगर कहाँ भोग आदि के समय संदेशी द्वारा बाबा का पार्ट चलता है तो यह बिल्कुल राँग है। (अ.वा.11.4.82 पृ.365 म.)

• श्रीमत एक बाप की है।... दादी की, दीदी की श्रीमत नहीं कहेंगे।

(अ.वा.31.3.90 पृ.206 अंत)

• सम्मुख सुनना है नं.वन, टेप से सुनना है नं.टू, मुरली से पढ़ना नम्बर थ्री।

(मु.27.1.73 पृ.3 अं.)

• भगवान पढ़ाते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखना चहिए। कितना पढ़ना चाहिए। कई बच्चे हैं, पढ़ाई का शौक नहीं।... मीठे बच्चे, बाप रिक्वेस्ट करते हैं- अच्छी रीति पढ़ो तो अच्छा पद पायेंगे। बाप के दाढ़ी की लाज रखो। (मु. 26/4/85 पृ.2 अंत, 3 मध्य)

• अगर कोई भी क्वेश्चन उठता है या कोई भी समस्या सामने आती है तो मुरली से रेसपॉन्स मिलता है। (अ.वा.18.02.94 पृ.168 मध्य)

• आत्मा की कमज़ोरी से माया को जन्म मिल जाता है। कारण है अपनी कमज़ोरी और उसका निवारण है- रोज़ की मुरली। मुरली ही ताज़ा भोजन है, शक्तिशाली भोजन है। (अ.वा.14.10.81 पृ.61 अंत)

तभी तो मु.20.5.77 पृ.1 की वाणी में बाबा ने कहा है- 'मुरली द्वारा सर्व समस्याओं का हल मिल सकता है।' • मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार।' (अ.वा.18.1.07 पृ5 मध्य) जो

मुरलीधर शिव है वो माँ के रूप में इस सृष्टि पर पहले आता है। वो माँ है हमारी मुरलियाँ। स्पष्ट है कि व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए भी किसी देहधारी गुरू के पास भटकने की दरकार नहीं।

- नाम ही है श्रीमत। श्री का अर्थ है श्रेष्ठ। (अ.वा.24.09.92) 'श्रीमत' अर्थात् श्रेष्ठ बुद्धि। तो श्रेष्ठ बुद्धि किसकी होगी? ज़रूर परमात्मा से ज्यादा श्रेष्ठ बुद्धि किसी की भी नहीं हो सकती। वही बुद्धिमानों की बुद्धि है, ज्ञान दाता है। मु.ता.2.6.73 पृ.3 के मध्य में बाबा ने बोला है-' श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी हैं आसुरी मत, जिससे असुर ही बनते हैं।'' मु.ता.17.3.68 पृ.1 के आदि में बाबा ने कहा है- 'तुमको तो सिर्फ़ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे, ओरली पढ़ना है।'
- हर एक को अपने-2 लिए बाबा से पूछना है; क्योंकि हर एक के सरकमस्टांसेज अपने हैं। (मु.17/5/76 पृ.2 मध्यादि)

श्रीमत पर चलने से लाभ और न चलने से हानि भी होती होगी।

- अगर श्रीमत पर कदम होगा तो कभी भी अपना मन असंतुष्ट नहीं होगा। मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होगी। स्वतः श्रीमत पर चलने से नैचुरल(वास्तविक) खुशी रहेगी।... मनमत पर चलने वाले के मन में हलचल होगी। श्रीमत पर चलने वाला सदा हल्का और खुश होगा। (अ.वा.29.5.77 पृ.194 आदि)
- सिवाय श्रीमत के कोई भी श्रेष्ठाचारी बन नहीं सकता। (मु.1.11.78 पृ.3 मध्य)
- जो कुछ श्रीमत के आधार बिगर करते हैं तो बहुत डिससर्विस करते हैं। बिगर श्रीमत करेंगे तो गिरते ही जावेंगे। बाबा ने शुरू से माताओं को निमित्त रखा है। (मु.3.1.76 पृ.1 अंत)
- तुम बच्चों को भी कब सुनी-सुनाई बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए। बाप से पूछो, यह ऐसे कहते हैं। सत्य है? बाप बता देंगे।... बाबा जानते हैं, ऐसे बहुत होता है। उल्टी-सुल्टी बातें सुनाकर दिल को ख़राब कर देते। इसलिए कब भी झूठी बातें सुन अंदर में चलना न चाहिए। पूछो, फलाने ने मेरे लिए ऐसे कहा है? सफाई हो जानी चाहिए। सुनी-सुनाई बातों पर भी दुश्मनी रख देते। बाप मिला है तो बाप से पूछना चाहिए ना। (मु.18/8/70 पृ.3 आदि)

जिसके लिए गीता में भी एक श्लोक आया है -

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिव्र्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।। अध्याय 2/52

जब तेरी बुद्धि सुनाई जाने वाली और सुनी हुई बातों के मोह रूपी कीचड़ को पार कर जाएगी, तब परम वैराग्य को तू प्राप्त हो जावेगा।

श्रीमत देने वाले परमात्मा का प्रैक्टिकल रूप कौन?

अब प्रश्न यह उठता है कि परमात्मा का वह प्रैक्टिकल साकार रूप किसका है जिसके द्वारा हमें कदम-2 पर श्रीमत लेनी है, ओरली पढ़ना है? क्योंकि परमात्मा का जो रूप त्रिमूर्ति के चित्र में दिखाया गया है वह अरूप है। जिस ज्योतिर्बिन्दु की तरफ उन तीनों मूर्तियों की स्मृति रूपी लकीरें दिखाई गई हैं वह निराकार है। निराकार का कोई चित्र नहीं खींचा जा सकता है। तो जिसका कोई चित्र नहीं, आकार नहीं, वह फिर मत भी कैसे देगा? क्योंकि चित्र तो होता ही है साकार का। इसलिए मु.ता.20.8.78 पृ.1 के अन्त में बाबा कहते हैं- 'मैं ज्ञान का सागर हूँ; परंतु मैं निराकार ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ? ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए, प्रेरणा से स्टूडेंट को पढ़ा सकेंगे? ज़रूर स्कूल में आना पड़े ना।' क्योंकि 8.8.76 पृ.3 मुरली के अन्त में बोला है- 'प्रेरणा से अगर योग और ज्ञान सिखलाना होता फिर तो बाप कहते मैं इस गन्दी दुनिया में आता क्यों? प्रेरणा-आशीर्वाद यह सब भक्तिमार्ग के अक्षर हैं।'

• तुम कहेंगे हम हैं ईश्वरीय मत पर। प्रेरणा की तो बात ही नहीं। ईश्वरीय प्रेरणा और ईश्वरीय मत में रात-दिन का फ़र्क है। प्रेरणा का कोई अर्थ ही नहीं। प्रेरणा अर्थात् विचार। बस हम तो डाइरैक्ट ईश्वर के मत पर चलते हैं। (मु.ता.25.6.68 पृ.1 मध्य) इसलिए मु.ता.16.3.75 पृ.3 के आदि में बाबा कहते हैं- 'अभी (संगमयुग पर) मैं सन्मुख हूँ। मैं भी ट्रस्टी बन फिर तुमको ट्रस्टी बनाता हूँ। जो कुछ करो, पूछकर करो। मैं तो जीता-जागता हूँ ना। बाबा हर बात में राय देते रहेंगे।' स्पष्ट है कि निराकार बाप शिव जब तक साकार रथ में सन्मुख न हो तब तक वे राय भी कैसे दे सकते हैं? बच्चे उनसे पूछकर कार्य कैसे कर सकेंगे? ओरली कैसे पढ़ेंगे? क्योंकि मु.ता.30.6.75 पृ.3 के मध्य में बाबा स्पष्ट रूप से कहते हैं- 'शरीर बिगर बाप बात कैसे करेंगे? सुनेंगे कैसे? आत्मा को शरीर है तब सुनती-बोलती है। बाबा कहते, मुझे ऑरगन्स ही नहीं तो सुनूँ, देखूँ, जानूँ कैसे?' तो निराकार बाप शिव इस साकार सृष्टि पर साकार पुरुष तन से प्रत्यक्ष होते हैं। सन्मुख आकर श्रीमत देते, पढ़ाई पढ़ाते व सद्गति का रास्ता बताते हैं। इसलिए बाबा मुरली में कहते हैं तुम बच्चों को सिर्फ़ शिव जयंती नहीं कहना चाहिए; क्योंकि जयंती होती है साकार की। जिसका कोई साकार रूप नहीं, आकृति नहीं, उसकी जयंती भी नहीं हो सकती; इसलिए शिवबाबा कहते हैं मेरी जयंती के साथ तीन मूर्तियाँ जुड़ी हुई हैं। यानी जब मेरी प्रत्यक्षता रूपी जयन्ती होती है तो मैं अकेला नहीं आता हूँ बल्कि उस समय तीन मूर्तियाँ साथ

में होती हैं। वो तीनों मूर्तियाँ चित्र में दिखाई गई हैं- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। गीता में भी आया है कि-

'..भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।।' 13/16।।

वह परमात्मा प्राणियों का भरण-पोषण करने वाला विष्णु, विनाशकर्ता शंकर और उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा माना जाता है।

ता.27.9.75 पृ.3 के आदि की मु. में बोला है 'ज्ञानदाता, सर्व की सद्गति दाता, त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव ही है। ब्र॰वि॰शं॰ तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ़ शिव जयंती नहीं है; परंतु त्रिमूर्ति शिवजयंती।'

इन तीन मूर्तियों को सूक्ष्मवतन के तीन तबक्कों में भी दिखाया गया है। ब्रह्मापुरी, उससे ऊपर विष्णुपुरी और उससे ऊपर शंकरपुरी। वो तबक्के ऊपर-नीचे क्यों दिखाए गए? ज़रूर ये बुद्धि की स्टेज दिखायी गयी है। ब्रह्मा से भी ज्यादा ऊँची स्टेज विष्णु की और विष्णु से भी ज्यादा बुद्धि की ऊँची स्टेज शंकर की दिखाई गयी है। नहीं तो चित्रों में उस बुद्धि की स्टेज को कैसे दिखाया जाए। इसलिए तीन पुरियों के रूप में दिखा दिया गया। वास्तव में त्रिमूर्ति शिव की तीनों मूर्तियाँ इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ही अपना पार्ट बजाती हैं; परंतु बच्चों के आगे नम्बरवार प्रत्यक्ष होती हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर- ये तीनों उत्तरोत्तर एक से ऊँचे एक देवता माने गए हैं। भक्तिमार्ग में भी कहा जाता है- 'देव-देव फिर महादेव। ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः, फिर कहते हैं शिव परमात्माय नमः।' तो इससे ही साबित हो जाता है कि परमात्मा का जो असली रूप है, वो इन तीन मूर्तियों में ब्रह्मा के द्वारा भी संसार में प्रत्यक्ष नहीं होता है; अगर ब्रह्मा के द्वारा वो परमात्मा का रूप संसार में प्रत्यक्ष हुआ होता और सारी दुनिया उसके सामने झुकी होती तो उसके भी मंदिर होते, उसकी भी मंदिरों में पूजा हुई होती और उसकी भी मूर्तियाँ होनी चाहिए; लेकिन न मंदिर मिलते हैं, न मूर्तियाँ हैं और न कहीं शास्त्रों में पूजा दिखाई गई है। रही विष्णु की बात, वो तो हमें बताया गया है- विष्णु कोई अलग से चार भुजाओं का व्यक्तित्व नहीं होता। यह तो चार आत्माओं के भाव-स्वभाव-संस्कार का कम्बीनेशन है। यह विष्णु भी सतयुग का देवता है। यह कोई संगमयुग में भगवान के रूप में प्रत्यक्ष होने वाला व्यक्तित्व नहीं है; क्योंकि जब एक सेकेण्ड में ब्रह्मा सो विष्णु बनेगा, उस समय वो देवता का रूप होगा। देवताएँ सतयुग में होते हैं और मनुष्य संगम में होते हैं; लेकिन परमात्मा का रूप फिर क्या है? परमात्मा है गुप्त। इन तीन मूर्तियों में जो महादेव की मूर्ति है, वो ही परमपिता शिव/परमात्मा का बड़ा बच्चा है और हमारी भारतीय परम्परा में हमेशा जितने भी राजायें हुए

हैं, उनमें यह परम्परा रही है कि बड़े बच्चे को ही हमेशा राजाई दी जाती रही; क्योंकि बड़ा बच्चा और बच्चों के मुकाबले ज्यादा प्यूरिटी की पावर से जन्म लेता है। लम्बे समय के ब्रह्मचर्य की पावर से पहले बच्चे का जन्म होता है, तो उसमें शक्ति ज्यादा होती है, प्यूरिटी की पावर ज्यादा होती है; इसलिए उस बड़े बच्चे को ही राजाई देने का विधान आरम्भ से ही चला आया है। इसका भी फाउंडेशन शिवबाबा संगमयुग में आकर डालते हैं। इसलिए मुरली में बोला है- गॉड इज वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं। (मु.10.2.72 पृ.4 म.) तो बड़ा बच्चा कौन हुआ? शंकर हुआ तीन देवताओं में बड़ा देव महादेव और वही देवता संगमयुग में, संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया के बीच में, संसार में विश्व का पिता कहो, विश्वपति कहो या विश्वनाथ कहो, इस रूप में प्रत्यक्ष होता है। जैसे गायन है-"हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे।"

श्रीमद्भगवद्गीता में भी यह बात आई है -

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।।13/ 22 ।।

अर्थात् इस प्रजापिता ब्रह्मा की देह में स्थित परम पुरुष, समीप से देखने वाला, कार्यों की अनुमति देने वाला, यज्ञवत्सों का भरण-पोषण करने वाला, भोग की वासना लेने वाला, महान् ईश्वर और परमात्मा इस तरह कहा जाता है।

इसका अर्थ गीता के श्लोक के अनुसार महेश्वर अर्थात् शंकर ही परमात्मा हुआ ना।

पहले प्राइमरी नॉलेज देने वाली ब्रह्मा (बड़ी माँ) की मूर्ति बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होती है और फिर एडवांस नॉलेज देने वाली बाप, टीचर व सतगुरू की मूर्ति प्रत्यक्ष होती है।

त्रिमूर्ति शिव की पहली मूर्ति ब्रह्मा

प्राइमरी नॉलेज में त्रिमूर्ति के चित्र पर सिर्फ़ इतना बताया जाता है कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना व शंकर द्वारा विनाश का कर्तव्य रूहानी बाप शिव संगमयुग पर आकर करते हैं; परंतु मुरलियों में बाबा ने डाइरैक्शन दिया है कि समझाने का यह क्रम राँग है; क्योंकि जिस क्रम से इन मूर्तियों के कर्तव्य हैं उसी क्रम से उनकी बायोग्राफी है। जैसे मु.ता.19.12.89 पृ.1 के मध्य में बाबा ने कहा है- 'पहले ऐसा नहीं कहना होता है स्थापना, पालना, विनाश। नहीं। पहले स्थापना, फिर विनाश, बाद में पालना- यह राइट अक्षर हैं।' इसी तरह मु.ता.22.1.78 पृ.2 के आदि में बाबा ने बोला है- 'ब्रह्मा द्वारा वाइसलेस वर्ल्ड देवताओं की स्थापना हो रही है। शंकर द्वारा विनाश भी होने वाला है, फिर वैष्णो राज्य होगा।' • परमपिता परमात्मा ब्रह्मा

द्वारा नई दुनियाँ की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है- स्थापना, विनाश, पालना। (मु.ता.14.1.00 पृ.2 आदि)

त्रिमूर्ति शिव की पहली मूर्ति है- 'ब्रह्मा' , जो बच्चों के सामने पहले प्रत्यक्ष होती है। नाम ही है- ब्रह्म+माँ। बड़ी माँ। तो बच्चों के सामने तो पहले माँ ही प्रत्यक्ष होगी। छोटे-2 बच्चे होते हैं, गोद के बच्चे होते हैं, अबोध होते हैं, उन्हें बच्चा बुद्धि कहा जाता है। तो वो माँ को ही महत्व देते हैं। माँ से जितना उनका प्यार है उतना और कोई से नहीं होता है। वो समझते हैं हमको सारी प्राप्ति माँ से ही होनी है और होती है बचपन में। ब्रह्मा जो पहली मूर्ति है, उसके द्वारा हम ब्राहमण बच्चों को जन्म मिलता है। माँ द्वारा जन्म होता है; लेकिन जन्मदाता कोई दूसरा होता है। ब्राहमण भी साकार हैं। आत्मा तो निराकार होती है; लेकिन शरीर में प्रवेश करने के बाद साकार बनती है। तो जब ब्राहमण साकार हैं तो साकार के मात-पिता भी साकार ही होने चाहिए; लेकिन जब बच्चे बड़े होते हैं तब वो बालिग़ बच्चे समझ जाते हैं कि माँ से हमको वर्सा नहीं मिलना है। वर्सा तो जन्मदाता, जो माँ को भी रचने वाला है उसी से मिलता है। माँ को स्वीकार करने वाला बाप होता है। स्वीकार करना माना रचना। तो बच्चों के सामने पहली-2 मूर्ति ब्रह्मा की आती है; लेकिन मुरलियों में ये बताया हुआ है कि 'ब्रह्मा से कोई प्राप्ति नहीं होती। जन्म मिलता है, प्यार तो मिलता है; लेकिन ईश्वरीय वर्से की प्राप्ति ब्रह्मा से नहीं होती है। ब्रह्मा द्वारा तो होती है; लेकिन ब्रह्मा वर्सा देने वाला नहीं है। वर्सा देने वाला बाप होता है।' इसलिए मुरली में पूछा- 'ब्रह्मा का बाप कौन?' • मुझे प्रजापिता ब्रह्मा ज़रूर चाहिए।... ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बतावे। (मु.ता. 4.11.73 पृ.2 म.) ज़रूर कोई होगा तब तो पूछा, 'ब्रह्मा को भी जन्म देने वाला रचयिता कौन?' तो जैसा शब्द है ब्रह्मा माना 'बड़ी माँ', तो उसको रचने वाला बाप भी ज़रूर कोई है। वो व्यक्तित्व जो आदि में था, बीच में गुप्त हो गया और अंत में वही बीजारोपण करने वाला, ज्ञान का बीज बोने वाला, जिसने ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में बीज बोया, वही बाप अंत में बच्चों को वर्सा देने के लिए फिर प्रत्यक्ष हो जाता है। तो जो प्रत्यक्ष रूप होता है उसी को दुनिया वालों ने शिव-शंकर के रूप में नामांकित कर दिया।

ब्रह्मा को साक्षात्कार

यज्ञ के आदि में भक्ति करते-2 जब दादा लेखराज को सन् 1936/37 में सिंध हैदराबाद में साक्षात्कार हुए तो उन्होंने उसके अर्थ को नहीं जाना। हम बच्चों में से बहुतों ने यह समझ लिया (कि) उनको साक्षात्कार हुए माना शिव बाप का प्रवेश हुआ। साक्षात्कार तो तुलसीदास को हुए, सूरदास को हुए, रैदास को हुए, मीरा को हुए, जाने कितने भक्तों को साक्षात्कार हुए। तो क्या

यह मान लिया जाये कि उनमें परमात्मा शिव ने प्रवेश कर लिया? नहीं। साक्षात्कारों से ये तो साबित नहीं होता कि ब्रह्मा/दादा लेखराज में परमात्मा शिव ने प्रवेश कर लिया। साक्षात्कार होना अलग बात है और प्रवेश होना अलग बात है। मुरली में बोला है कि साक्षात्कार होने को कोई प्रवेश होना नहीं कहा जाता। ब्रह्मा को साक्षात्कार तो हुए; लेकिन परमात्मा शिव ने उस समय उनमें प्रवेश नहीं किया। मु.ता.7.12.89 पृ.3 के आदि में और मु.ता.1.1.91 पृ.3 के अंत में बाबा ने कहा है कि 'शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता ही नहीं पड़ता कब आया। ऐसे भी नहीं सा॰ हुआ तब आया। नहीं, अंदाज लगा सकते हैं। मिनिट-सेकेंड का हिसाब नहीं बता सकते। उनका अवतरण भी अलौकिक है।'

यही कारण है कि मुरलियों में आता है कि ब्रह्मा बाबा को जब विष्णु चतुर्भुज का, पुरानी दुनिया के विनाश का और नई दुनिया अर्थात् स्वर्ग का और श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ तो बाबा को कुछ समझ में नहीं आता था। मु.ता.26.7.88 पृ.2 के आदि में ये बात आई है कि • बाबा अनुभव अपना बतलाते हैं, शुरू में बनारस गए तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था यह क्या है; क्योंकि यह तो जैसे बेबी बन गए। और मु.ता.4.8.83 पृ.3 के आदि में बोला है- 'बाबा को तो हुआ है विनाश और स्थापना का सा॰। इनको भविष्य का सा॰ एक्यूरेट हुआ; परंतु पहले यह समझ में नहीं आया कि हम यह विष्णु बनेंगे।' तो यह राज़ ज़रूर किसी ने उनको समझाया होगा। बाबा ने पहले अपने लौकिक गुरू से पूछा; लेकिन उसने अनभिज्ञता जताई। तब बाबा की गुरू से श्रद्धा हट गई। बाबा वाराणसी गए। वहाँ के विद्वान, पंडित, आचार्यों आदि से पूछा; लेकिन सन्तुष्टि नहीं हुई। बाबा को साक्षात्कारों का रहस्य जानने की तीव्र उत्कण्ठा हो गई।

दूसरी मूर्ति प्रजापिता (राम बाप)

ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति को देखा-परखा था, जो ज्यादा से ज्यादा उनके प्रति सच्चा साबित हुआ, जिनके ऊपर अपने जीवन में उन्होंने सबसे जास्ती विश्वास किया। वो व्यक्ति था उनका साझीदार, भागीदार, जिसके ऊपर उन्होंने कलकत्ते की सारी हीरे, जवाहरात की दुकान सौंपी हुई थी। उस भागीदार की ब्रह्मा बाबा को याद आती है तब अंत में वे कलकत्ता चले जाते हैं। अ.वा.1.2.79 पृ.259 के आदि में बंगाल-बिहार ज़ोन से बात करते हुए बाबा ने बोला हुआ है 'साकार तन को ढूँढा भी यहाँ से ही है।' (यह नहीं कहा सिंध हैदराबाद से)

• इस्टर्न ज़ोन महान लक्की ज़ोन है। क्यों लक्की है? क्योंकि ब्रह्मा बाप की कर्म भूमि और प्रवेशता भूमि है। (इस्टर्न ज़ोन- बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल) से अ.वा.17.11.94. पृ.15 अंत

• बंगाल में बाप की पधरामणी हुई है, प्रवेशता हुई है। (अ.वा.2.2.08 पृ.3 अं.)

• सबसे पहले बंगाल में सूर्योदय होता है तो माया का अंधकार तो आ नहीं सकता।

(अ.वा.19.1.95 पृ.113 आ.)

जैसे कहीं-2 मुरलियों में बाबा ने ये भी कहा है 'धन्धे में भी पहले अपने भाइयों आदि को ही भागीदार बनाते हैं। यह भी ऐसे है।' (मु.ता.27.12.84 पृ.2 अंत, 12.12.89 पृ.2 अंत)

• सेल्समेन जब होशियार देखा जाता है तो फिर उनको भागीदारी बनाया जाता है। ऐसे ही थोड़े ही भागीदारी मिल जाती है। (मु.10.11.88 पृ.1 अंत)

राम और कृष्ण की आत्माएँ इस सृष्टि रूपी रंगमंच के मुख्य पार्टधारी हैं। इनका जन्म-2 का व युगों-2 का साथ है। कलियुग के अंत में भी कृष्ण की आत्मा दादा लेखराज के रूप में पार्ट बजाती है तो राम की आत्मा भी भागीदार के रूप में उनके साथ होती है। मु.ता.25.7.67 पृ.2 के अन्त में बाबा ने स्पष्ट भी किया है- '10 वर्ष (साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डाइरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा-बाबा भी उनसे सीखते थे।' इस मुरली से साबित होता है कि दादा लेखराज के साथ 10 वर्ष से रहने वाला उनका भागीदार याने रामवाली आत्मा और कोई यज्ञमाता (सीता वाली आत्मा) भी थी जो ध्यान में जाती थी। उन दोनों में ही शिवबाबा प्रवेश कर डाइरैक्शन देते थे। कलकत्ता में बाबा की हीरे-जवाहरातों की दुकान थी। दुकान को उनका भागीदार चलाता था। भागीदार पहले दुकान में नौकर था। बाद में उसकी योग्यता, बुद्धिमत्ता व ईमानदारी से प्रभावित होकर बाबा ने उसे अपना पार्टनर बना लिया। मेहनत उसकी, धन बाबा का और इन्कम में आधा-2। बाबा अपने जीवन में सबसे अधिक मान्यता उस भागीदार को देते थे। उसी से अपने साक्षात्कारों का रहस्य जानने के लिए ब्रह्मा बाबा उसी भागीदार के पास पहुँचे। डाइरैक्ट नहीं पहुँचे, दो माताएँ बीच में निमित्त बनीं। जिन माताओं के लिए अव्यक्त वाणी में भी बाबा ने कहा है -

• संगमयुग में 'शक्ति फर्स्ट' का बाप-दादा का नारा है।... ब्रह्मा बाप की भी माता गुरु है।

(अ.वा.23.1.77 पृ.40 आ.)

• बापदादा भी मीठी-2 माताओं को 'वंदे मातरम्' कहते हैं; क्योंकि नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में ब्रह्मा बाप ने भी माता गुरु को सब समर्पण किया। (अ.वा.3.4.83 पृ.113 आ.)

• माता गुरू बिगर कोई का उद्धार नहीं होना है। माता को ही निमित्त रखा जाता है। (मु.13.7.72 पृ.3 मध्यांत)

एक माता थी ब्रह्मा बाबा की नज़दीकी सम्बंध की माता(अर्थात् छोटी माता) और एक बड़ी माता और भी थी। बाबा ने जो भी साक्षात्कार हुए, उन साक्षात्कारों की बात अपनी नज़दीकी सम्बंध की माता(अर्थात् छोटी माता) को पहले सुनाई होगी या बड़ी माता को सुनाई होगी? छोटी माता को ही सुनाई होगी। छोटी माता की डायरैक्ट प्रजापिता से बताने की हिम्मत नहीं पड़ी तो बड़ी माता को बताया। वो बोलने में सिद्धहस्त थी। उसने तुरंत सारी बात प्रजापिता को बता दी। गीता में एक श्लोक आया है -

तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।। 15/4।।

• उसी आदि पुरुष शिव के साकार रूप-आदिदेव की शरण लेनी चाहिए, जिससे इस सृष्टि वृक्ष की पुरानी प्रक्रिया प्रसारित हुई है। {(तो ज़रूर सृष्टि-वृक्ष की पुरानी प्रक्रिया प्रसारित करने वाला कोई आदिदेव होगा ना।)

• आदि देव अर्थात् साकार मनुष्य सृष्टि का रचयिता बाप। (अ.वा.19.10.75 पृ.199 आदि)

जब सृष्टि प्रक्रिया का आरम्भ होता है चाहे हद में, चाहे बेहद में, तो स्त्री-पुरुष दोनों ही सक्रिय होते हैं। (वैसे ही यहाँ पर जब बेहद में नई सृष्टि का आरम्भ होता है तब) ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा शिव उस माता और प्रजापिता (भागीदार) में साथ-ही-साथ प्रवेश करते हैं अर्थात् उस माता द्वारा साक्षात्कार की बात सुनने-सुनाने का कार्य करते हैं और प्रजापिता द्वारा समझने-समझाने का कार्य करते हैं। प्रजापिता समझता है और माताओं को सुनाता है। प्रजापिता ब्रह्मा तो कहते ही तब हैं जब शिवबाबा इनमें प्रवेश करें। (मु.ता.23.9.89 पृ.1,2 / मु.ता.18.9.04 पृ.2 मध्य) मु.ता.17.3.73 पृ.2 अन्त में बोला है- 'ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं।... अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।'

शिव बाप की प्रवेशता के कारण वह माता ही वास्तव में ब्रह्मा (बड़ी माँँ) अर्थात् जगदम्बा साबित होती है। उस जगत माता को ज्ञान का सूक्ष्म जन्म देने वाली साकार में कोई माता नहीं होती। अब उस बड़ी माँ ब्रह्मा अर्थात् गऊ मुख से रूहानी बाप शिव की वाणी को सुनने वाला पहला-2 मुखवंशावली ब्राह्मण हो गया प्रजापिता अर्थात् भागीदार। माता सुनाती है और

प्रजापिता सुनता है। सुना इसलिए कि जब तक ब्रह्मा मुख से सुने नहीं तब तक प्रजापिता नहीं बन सकता। इसलिए मुरली में बोला है मुखवंशावली नहीं तो वो प्रजापिता कैसे होगा? 'ब्राह्मण बने बिगर प्रजापिता था क्या?'

- पहले जब तक ब्राह्मण नहीं बने तब तक कोई भी कर्तव्य के निमित्त नहीं बन सकते।

(अ.वा.30.6.73 पृ.115 अं.)

ब्राह्मण माना ब्रह्मा की औलाद। तो यज्ञ के आदि में जिस माता के द्वारा साक्षात्कारों का वर्णन किया गया, सुनाया गया (उस) माता के द्वारा भक्ति का फाउंडेशन भी पड़ा। क्या सुनने के साथ-2 समझने वाला समझ नहीं सकता? एक ने सुनाया और दूसरे ने सुना। जो दूसरा सुनने वाला है वो सुनने के साथ-2 समझने का फाउंडेशन (भी) डाल सकता है। तो सुनना और समझना- ये दोनों प्रक्रिया साथ-2 हुई। भागीदार ने सुना और साथ ही साथ समझा भी अर्थात् सुनने और समझने का भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग का फाउंडेशन साथ-2 पड़ गया। और प्रजापिता के द्वारा ज्ञान (समझने और समझाने) का बीजारोपण भी हुआ। गीता में भी ये बात आई है कि

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।। 14/3।।

ये ब्रह्मा ही मेरी योनि है जिसको मैं गर्भ धारण कराता हूँ। और गीता मंे ये भी कहा है कि ' अहम् बीजप्रदः पिता' ।। 14/4।।

अहम माने कौन? अहम माने मैं। मैं माने कौन? प्रजापिता नहीं, उनके अर्थों का, उन साक्षात्कारों का निरूपण करने वाला स्वयं शिव था।

प्रजापिता के थ्रू जब सारा रहस्य मिला होगा तो दोनों माताएँ मौजूद थीं। उस(बड़ी माता) को जो भी रहस्य मिला, बोलने में सिद्धहस्त होने के कारण (उस माता ने) तुरन्त ब्रह्मा बाबा को बता दिया। अब ब्रह्मा बाबा को उस माता के ऊपर विश्वास हुआ होगा या उन्होंने अपनी नज़दीकी सम्बंध की माता(अर्थात् छोटी माता) से कन्फर्म किया होगा? छोटी माता से जब तक कन्फर्म न करें, तब तक ब्रह्मा बाबा को विश्वास नहीं हो सकता। वो तो अनुभवी थे। इसलिए उस छोटी माता के बताने पर ब्रह्मा बाबा को विश्वास हुआ। तब उन्होंने माना कि ये जो विष्णु का साक्षात्कार होता है इसका मतलब है कि अब विष्णु की नई दुनिया आने वाली है। स्वर्ग स्थापन होने वाला है। विनाश का जो साक्षात्कार होता है इसका मतलब है अब पुरानी दुनिया गई-कि-गई और जो ब्रह्मा का सफेद पोश का साक्षात्कार होता है इसका मतलब है कि अब मेरे द्वारा ब्रह्मा का पार्ट चलने वाला है। कृष्ण का साक्षात्कार का अर्थ है कि मैं कृष्ण के रूप में

नई दुनिया में जन्म लेने वाला हूँ। माता के बताने पर ही विश्वास हुआ। यहाँ संगमयुगी दुनिया में फाउंडेशन पड़ गया तो उसका रिजल्ट सतयुग में निकलता है। शूटिंग के आदि में शूटिंग हो गई कि कृष्ण किसका बच्चा था? लक्ष्मी-नारायण का बच्चा था। तो यहाँ लक्ष्मी-नारायण बनने वाली आत्मा साबित होती है- छोटी माँ और प्रजापिता। प्रजापिता के द्वारा ज्ञान का बीज डाला गया। छोटी माँ के द्वारा विश्वास बैठाया गया। इसलिए कृष्ण उर्फ दादा लेखराज की आत्मा को निश्चय बैठ गया। निश्चय बैठना माना (पैदा) जन्म होना। ये वही दो माताएँ हैं जिनको बाबा मुरलियों में सच्ची गीता और झूठी गीता कहकर सम्बोधित करते हैं। सच्ची गीता वो जिसकी बुद्धि में निराकार शिवशंकर भोलेनाथ की छाप पड़ी हुई है और झूठी गीता वो जिसकी बुद्धि में कृष्ण बच्चे की छाप बैठी हुई है। जिस माता के द्वारा ब्रहमा बाबा को विश्वास बैठाया गया वो हो गई सच्ची गीता और जो बोलने में सिद्धहस्त थी वो हो गई झूठी गीता।

सुप्रीम सोल शिव भी जब इस सृष्टि पर आता है तो तीन मूर्तियों के साथ आता है। सन् 1936/1937 में ये तीनों मूर्तियाँ सामने थीं। ब्रहमा माना पहली मूर्ति जिस माता के द्वारा उन साक्षात्कारों की बात को सुनाया गया वो ब्रहमा और प्रजापिता के द्वारा पहली बार सुना गया, वो दूसरी मूर्ति जो समझाने वाली थी, जिसमें सुप्रीम सोल शिव ने प्रवेश किया; क्योंकि शिव शंकर में ही प्रवेश करता है। विष्णु और ब्रहमा में प्रवेश करके बाप के रूप में पार्ट नहीं बजाता है। ज्ञान का बीजारोपण राम बाप के द्वारा होता है। कृष्ण तो बच्चा है। बच्चा बुद्धि के द्वारा बीजारोपण की बात ही नहीं। राम बाप जिसमें शिव सुप्रीम सोल मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है, आदि में भी प्रवेश किया था और अंत में भी संसार के सामने प्रत्यक्ष होता है। वो है-मुकर्रर रथ राम बाप, जो शंकर के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होता है। दूसरी भी माता थी, जो साथ में थी। (सुनने-सुनाने के साथ-2, वो आत्मा ज्ञान के बीज को धारण करती है। प्रैक्टिकल जीवन में ऐसा सम्पूर्ण रूप से धारण करती है कि वो प्रैक्टिकल जीवन दादा लेखराज ब्रहमा को पूरा ही प्रभावित करता है। उसने सुना भी और साथ-2 अंदर से समझा भी वो हो गई तीसरी मूर्ति अर्थात् विष्णु जो लव और लॉ में बैलेंस रखने वाली है।

अब क्योंकि साक्षात्कार तो प्रैक्टिकल में ब्रहमा बाबा को ही हुए थे। क्लारिफिकेशन देने वाले व्यक्ति प्रजापिता/भागीदार को तो साक्षात्कार हुए नहीं थे तो ब्रहमा बाबा को पक्का निश्चय बैठ गया। इसलिए उस ज्ञान को उन्होंने अच्छी तरह से पकड़ लिया। यज्ञ के आदि में प्रजापिता के थ्रू अर्थात् राम वाली आत्मा के थ्रू परमात्मा शिव ने प्रवेश करके ब्रहमा के साक्षात्कारों का क्लारिफिकेशन दे दिया और ब्रहमा बाबा स्थिरियम हो गये। मु.ता.12.5.87 पृ.2 के आदि में ये

बात आई है कि 'जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे, फिर बड़े बाबा ने कहा- यह अविनाशी ज्ञान-रत्नों का धन्धा करना है। इससे तुम यह बनेंगे। चतुर्भुज का साक्षात्कार करा दिया। अब विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है तो उनको मारी ठोकर। भल कमाई अच्छी थी; परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी कि अब अल्फ और बे को याद करो।' अलफ को मिला अल्लाह, बे को मिली बादशाही। दूसरा वाक्य क्या बोला? अलफ को मिला अल्लाह, बे बादशाही सारी भागीदार को दे दी। तो इसको क्लारिफिकेशन करने में थोड़ी भूल हो जाती है। भागीदार सिर्फ़ कलकत्ते वाला व्यक्तित्व ही नहीं था; लेकिन उसका भागीदार कौन? ब्रह्मा। दादा लेखराज उसका भागीदार और वो दादा लेखराज का भागीदार। भागीदार तो दोनों ही हुए। तो अलफ़ को मिला अल्लाह माने अल्लाह ने जिसमें पहले प्रवेश किया, उसको मिला अल्लाह और बे को मिली बादशाही। अलफ़ खड़ा हुआ डंडा होता है। उसको कहते हैं 'अलफ़' और बे पड़ा हुआ डंडा होता है। उसको कहते हैं 'बे बादशाही।' मतलब क्या हुआ? कि पुरुषार्थ में आदि में भी जो खड़ा रहता है और अंत में भी खड़ा रहता है, वो होता है- 'अलफ़।' तो परमात्मा शिव ने उस रथ को जो पूर्वी बंगाल से पकड़ा था, वो अलफ़ साबित होता है।

उसके बाद ब्रह्मा बाबा ने अपना सारा कारोबार भागीदार को सौंप दिया और सिंध हैदराबाद में वापस आने के बाद दुनिया से उनकी विरक्ति हो गई और सतसंग चालू कर दिया। उस सतसंग में वो भागीदार (प्रजापिता) भी दुकान समेट करके आ गया। ब्रह्मा बाबा को भागीदार ने हिसाब-किताब दिया। उसने जो भी हिसाब-किताब दिया, ब्रह्मा बाबा ने स्वीकार कर लिया और दोनों मिल करके सतसंग चलाने लगे। सतसंग में वो ही ओम की ध्वनि का उच्चारण हुआ। शास्त्रों में भी लिखा है कि ब्रह्मा के मुख से पहला शब्द निकला- ओम। आ उ म। आ माना ब्रह्मा, उ माना विष्णु, म माना महेश। और परमपिता परमात्मा वही भागीदार के द्वारा भक्तिमार्ग की संस्कृत गीता पढ़कर उसका क्लारिफिकेशन देते थे जिसको- 'पिऊ' की वाणी कहा जाता है। सिंधी भाषा में पिता को पिऊ कहते हैं; लेकिन वो बहुत स्ट्रिक्ट वाणी थी। इसलिए आज भी दीदी-दादियाँ पिऊ का नाम सुनने से डर जाती हैं। उनका आदि में रौद्र रूप था जिसके आधार पर इस यज्ञ का नाम पड़ा अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ। मनुष्यों को बुद्धि में तो वही गीता का ज्ञान है। आगे हमारी बुद्धि में भी वही पुराना गीता का ज्ञान था। वही गीता ओममण्डली में सुनाते थे; परन्तु अभी गुह्य बातें सुनते-2 सारे राज़ को समझ गए हैं। मनुष्य भी कहते हैं आगे आपका ज्ञान और था। अब तो बहुत अच्छा है। (मु.ता.27.1.78 पृ.2 अंत)

इसी तरह यज्ञ के आदि में यज्ञ की स्थापना के निमित्त जो आत्माएँ बनीं उनका मु.ता. 3.5.72, पृ.1 के अन्त में बाबा ने परिचय दिया, 'पहले-2 जिस द्वारा रचना रचते हैं उनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा। वह है ग्रेट-2 ग्रैण्ड फादर।' तो यह प्रजापिता का पार्टधारी (भागीदार) वास्तव में किसकी आत्मा है इसका भी परिचय बाबा ने ता. 6.2.76 पृ.1 मध्यांत/13.2.86 पृ.1 अंत की मु. में दिया है, 'प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है, उनको ग्रेट-2 ग्रैण्ड फादर कहा जाता है।' तो यज्ञ के आदि में प्रजापिता/राम बाप के द्वारा शिव पिता ने दादा लेखराज (ब्रह्मा) के साक्षात्कारों का रहस्य खोला। इसलिए मु.ता.6.9.70, पृ.3 के मध्य में बोला है, 'राम कहा जाता है बाप को।' मुरलियों में यह कभी नहीं कहा कि बाप कृष्ण को कहा जाता है। सदा यही कहा कि 'कृष्ण तो बच्चा (बुद्धि) है।' मु.ता. 10.2.75, पृ.1 के आदि में बोला है, 'बाप जिसको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने के कारण राम त्रेता वाला समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं (संगम की बात है)।' 'स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं। पुकारते भी उनको हैं- हे राम! हे भगवान! मरने समय भी उनको याद करते हैं।' (मु.ता.29.1.75, पृ.3 आदि)। 'सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं।' (मु.ता.20.2.74, पृ.3 आदि)

राम फेल

आगे चलकर यज्ञ में कुछ ऐसा घटना चक्र बना कि यज्ञ स्थापित होते ही उसमें विघ्न पड़ गया। अ.वा.3.2.74 पृ.13 के अंत में इसका संकेत दिया है-' विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-2 हैं न! तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को।' मु.ता.14.9.87 पृ.1 के अं. में बाबा ने बोला है "इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न ज़रूर पड़ेंगे।" आदि में ही यज्ञ के अंदर दो प्रकार के ब्राह्मण उत्पन्न हो गये। एक विश्वामित्र, वशिष्ठ जैसे दैवी संस्कारों वाले ब्राह्मण तथा दूसरे रावण, कुम्भकर्ण जैसे आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले (विधर्मी और विदेशीयता से प्रभावित)ब्राह्मण। बुद्धिवादी रामबाप ने तो उन विपरीत बुद्धि ब्राह्मणों का सामना किया; लेकिन भावनावादी ब्रह्मा माँ ने उनका साथ दिया। तो माता-पिता के बीच में मतभेद हो गया। बाप ने यज्ञ की जिम्मेवारी छोड़ दी। मु.ता.25.7.67 पृ.2 के अन्त में बाबा ने स्पष्ट भी किया है-' 10 वर्ष (साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय

मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डाइरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा-बाबा भी उनसे सीखते थे। आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था।'

अब प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान पूरा न होने के कारण राम-सीता वाली आत्माएँ ही क्यों फेल हो गईं? ब्रह्मा बाबा क्यों नहीं? उसका कारण यह है कि ब्रह्मा बाबा के द्वारा रूहानी बाप शिव को पहले-2 ब्राह्मण धर्म की स्थापना के लिए स्नेह व ममता की मूर्ति माँ का लवफुल पार्ट बजाना था सो उनको साक्षात्कार कराये। फिर राम (प्रजापिता) के द्वारा रचयिता बाप का लॉफुल सख्त पार्ट बजाना है तो उनमें पहले-2 प्रवेश कर ज्ञान का गुप्त बीजारोपण किया। ब्रह्मा बाबा को उनके साक्षात्कारों का स्पष्टीकरण मिल गया तो वे दृढ़ निश्चयवान हो गए। साक्षात्कारों का प्रैक्टिकल अनुभव होने के कारण उनकी पक्की भावना बैठ गई। वैसे भी माँ होती है भावनावादी। जबकि बाप होता है बुद्धिवादी। ब्रह्मा बाबा को तो पहले साक्षात्कार हुए और बाद में उनका अर्थ भी स्पष्ट हो गया। तो उनको पक्का निश्चय हो गया। जबकि रामवाली आत्मा (भागीदार) को तो साक्षात्कार हुए नहीं थे। उनके द्वारा तो रूहानी बाप शिव ने ब्रह्मा के साक्षात्कारों का रहस्य खोला। सो वो आत्मा बुद्धिप्रधान होने के कारण दृढ़ निश्चयवान नहीं रह सकी। बुद्धिवादी आत्माओं को विचार-सागर-मंथन के लिए जब तक पूरा ज्ञान नहीं मिल जाता, (जब) तक आत्मा को अपने पार्ट का, अपने स्वरूप का ज्ञान न हो जाये, तब तक वह निश्चय-अनिश्चय के चक्र में आती ज़रूर है। यज्ञ के आदि में रूहानी बाप शिव ने सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का पूरा ज्ञान तो दिया नहीं था ; इसलिए राम-सीता वाली आत्माएँ किसी बात को लेकर संशय बुद्धि हो गईं। रामवाली आत्मा फेल हो गई। मु.ता.21.8.84 पृ.3 के मध्यांत में बोला है 'रामचंद्र भी (अपने पूर्वजन्म सन् 1937 से 1942 के बीच में) राजयोग सीखता था। सीखते-2 फेल हो गया; इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा।' कथा आती है, मुरली में ही बाबा बताते हैं कि 'बुढ़िया पार चली गई और पंडित जी राम का नाम उसको बताते रह गये, खुद नहीं पार हो पाये। खुद डूब गये।' जो पढ़ानेवाला पंडित था वो तो पंडित ही बनके रह गया और जो पढ़ने वाली बुढ़िया थी ब्रह्मा अर्थात् बड़ी अम्मा वो बुढ़िया पार उतर गई। जब विनाशज्वाला प्रज्वलित हुई अर्थात् झगड़ा शुरू हुआ तब दादा लेखराज सिन्ध हैदराबाद से कराची चले गए।

ब्रह्मा में शिव की प्रवेशता

राम-सीता वाली आत्माओं के द्वारा रुहानी बाप शिव ने यज्ञ की स्थापना कर दी व उनके द्वारा कुछ समय तक यज्ञ का संचालन भी किया। अनेकों मुरलियों में बाबा ने उन आदि वाले

फर्स्ट क्लास बच्चों (राम-सीता) का उल्लेख किया है- ‘अच्छे-2 फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डाइरैक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया।’ (मु.ता.8.7.78 पृ.1 अंत) ‘अच्छे-2 बच्चे 5-10 वर्ष रह अच्छे-2 पार्ट बजाते हैं, फिर हार खा लेते।’ (मु.ता.8.7.78 पृ.1 अंत)

- मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे। डाइरैक्शन देती थी ऐसे-2 करो। टीचर हो बैठती थी। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगी। वह भी गुम हो गये। यह सब समझाना पड़े न। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है। (मु.ता.28.5.74 पृ.2 अन्त)
- बहुत-2 अच्छी बच्चियाँ जो मम्मा-बाबा के लिए भी डाइरैक्शन ले आती थीं, ड्रिल कराती थीं। उनके डाइरैक्शन पर हम चलते थे। सभी से जास्ती दुर्गति में वह चले गए। यह बच्चियाँ भी जानती हैं। (मु.28.5.69 पृ.2 अंत)

अच्छी-2 बच्चियाँ बोला है माना ज़रूर एक से ज्यादा होंगी, एक हो गई जगदंबा माता और एक हो गई वैष्णव देवी। इन दोनों माताओं द्वारा ज़रूर कुछ समय तक कराची में यज्ञ का संचालन हुआ होगा; क्योंकि जब तक ये दोनो माताएँ थीं तब तक दादा लेखराज में सुप्रीम सोल शिव की प्रवेशता नहीं हुई; क्योंकि मु.ता.26.5.78 पृ.1 के मध्यांत में बोला है-‘ कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। रात को दो बजे उठकर 10/15 पेज लिखते थे। बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियाँ निकालते थे।’ और ता.25.2.68 पृ.1 की रात्रि मुरली में बाबा ने कहा है कि ‘शुरू में कराची में रात को 2 बजे हम वाणी लिखते थे।’ मुरलियों से ही साबित होता है कि पहले कराची में दादा लेखराज में शिवबाप की प्रवेशता नहीं होती थी। बाबा जिनको अच्छी-2 बच्चियाँ कहके संबोधित करते थे वो दोनों माताएँ कराची में उपस्थित थीं। वो दोनों माताएँ यज्ञ छोड़कर चली जाती हैं तभी सुप्रीम सोल शिव को दादा लेखराज का आधार लेना पड़ता है। दोनों माताओं में से एक माता के लिए तो मुरली में प्रूफ मिल जाता है कि ज़रूर उनका जन्म 1946/1947 में हुआ होगा। मु.ता.26.6.70 पृ.2 के मध्य में बोला है- ड्रामा अनुसार पाकिस्तान भी हो गया। वह भी शुरू तब हुआ जब तुम्हारा जन्म हुआ। उस समय हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बँटवारे की स्थिति से चारों ओर खून-खराबा व अफरा-तफरी का माहौल था। इसका लाभ उठाकर सिन्ध हैदराबाद से सभी बांधेली गोपियाँ व गोप क्रमशः भागकर एक-2 करके दादा लेखराज के पास कराची पहुँच गए। जब सन् 47/48 तक कराची में सारा संगठन इकट्ठा हो गया तब दादा लेखराज में रूहानी बाप शिव की प्रवेशता हुई और तब उनका नाम ‘ब्रह्मा’ पड़ा। मु.ता.17.3.73 पृ.2 अन्त में बोला है-‘ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें

ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं।... अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।’ प्रवेशता कब से हुई? प्रवेशता की निशानी क्या है? तो उसका जवाब भी मु.ता.27.10.74 पृ.2 के मध्य में दिया है- ‘मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नॉलेज देते हैं।’ सन् 1947/48 से दादा लेखराज में शिवपिता की प्रवेशता सिद्ध होती है। उस समय दादा लेखराज की लौकिक आयु 60 वर्ष होनी चाहिए; क्योंकि वानप्रस्थ अवस्था में ही बाप प्रवेश करते हैं।

~~~~~~~~

• बाप सम्मुख आते और बच्चे अलमस्त होने के कारण देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते। ऐसा खेल अभी नहीं करना है।
(अ.वा. 6.9.75, पृ.96 अंत)

• आप श्रेष्ठ आत्माएँ सम्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो, प्रेरणा द्वारा व टचिंग द्वारा नहीं। मुखवंशावली हो, डायरैक्ट मुख द्वारा सुनते हो। (अ.वा.24.5.77 पृ.170 आदि)

टाइटिलधारी ब्रह्मा द्वारा सिर्फ़ माँ का पार्ट

राम वाली आत्मा के द्वारा आदि में केवल ज्ञान का बीजारोपण करने वाले रचयिता बाप का पार्ट सम्पन्न हुआ। अब बच्चों को जन्म देना, उनकी पालना करना तथा उनको प्राइमरी नॉलेज देना यह सारा कार्य माँ का होता है। कृष्ण की आत्मा को ब्रह्मा के रूप में निमित्त बना करके परमात्मा शिव ने उनके तन से माँ का लवफुल करनहार पार्ट बजाया।

• तुम्हारी बड़ी मम्मी ब्रह्मा है; परंतु कई बच्चों ने पूरा नहीं पहचाना है। अभी अजुन पहचानते रहते हैं। (मु.ता.1.5.73, पृ.2 के आदि)

• असुल रियल्टी में यह (साकार ब्रह्मा) माता है; परंतु पुरुष तन है तो माताओं की चार्ज में इनको कैसे रखा जाए; (क्योंकि दाढ़ी-मूंछ वाले को माता नहीं कहा जाता) इसलिए फिर जगत अम्बा निमित्त बनी हुई है। (मु.ता.18.5.78 पृ.2 मध्य)

• बेहद के भी दो बाप हैं (शिव-प्रजापिता), तो माँ भी ज़रूर दो होंगी- एक जगदम्बा माँ, दूसरी यह (ब्रह्मा) भी माता ठहरी। (मु.ता. 8.2.78, पृ.1 आदि)

• ज्ञान सूर्य तो है बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चंद्रमा। तो जिस तन में प्रवेश किया है वह हो गई ज्ञान चंद्रमा माता और बाकी सब हैं बच्चे, लकी सितारे। इस हिसाब से जगदंबा भी लकी स्टार हो गई; क्योंकि बच्चे ठहरे ना। (मु.ता.7.1.03 पृ.2 अं.)
~~~~~~~~

- बाप कहते हैं, मुझे रथ तो ज़रूर चाहिए। मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। सरस्वती है ब्रह्मा मुखवंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगदम्बा क्यों कहते हैं; क्योंकि यह मेल है ना। तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। अभी तुम समझ गये हो।

(मु.26.10.83 पृ.2 अंत)

उस समय जो 300/400 कन्याएँ माताएँ थीं; उनमें ओम राधे मम्मा ज्ञान,योग,धारणा,सेवा में (बेसिकली) सबसे तीखी थी। इसलिए उनको कन्याओं-माताओं की सम्भाल के लिए निमित्त बनाया गया। ब्रह्मा-सरस्वती ने तो अपने अलौकिक माता-पिता प्रजापिता व गीता माता के द्वारा स्थापित ज्ञान यज्ञ की सम्भाल की। ब्रह्मा बाबा के द्वारा यानी ब्रह्मा बाबा को निमित्त बना करके परमात्मा शिव ने बड़ी माँ का पार्ट बखूबी निभाया। जो गायन है- त्वमेव माता, 'त्वमेव' यानी तू ही है माता। तो वो माता का, जन्मदात्री का, जन्म देने का, प्यार देने का पार्ट ब्रह्मा बाबा ने बखूबी निभाया। ब्रह्मा के समय का एक भी ब्रह्माकुमार-कुमारी ऐसा नहीं हो सकता जो ये कहे कि ब्रह्मा बाबा ने हमको प्यार नहीं दिया। हरेक को बाबा से ये अनुभूति होती थी कि बाबा ने जितना हमको प्यार दिया इतना दुनिया में किसी ने नहीं दिया। कोई पच्छड़ माल भी बाबा से मिलने आए, तो वो भी अनुभूति करके जाता था कि बाबा ने हमको बहुत प्यार दिया। एक बार की अनुभूति, एक बार की दृष्टि और सदा काल के लिए स्थायी हो जाती थी, स्थायी छाप छोड़ जाती थी। तो ये निश्चित है कि परमात्मा से ज्यादा अच्छा माता और पिता का पार्ट कौन बजाएगा? कृष्ण की सोल के द्वारा परमात्मा शिव ने ब्रह्मा के रूप में माँ का पार्ट बजाया। ये नहीं सोचा कि इतनी बड़ी बारात (को) कितने दिनों तक हम खिलायेंगे? जैसे बच्चों के प्रति माँ की श्रद्धा, विश्वास, भावना होती है ऐसे ब्रह्मा बाबा की रही; क्योंकि उनमें तो सुप्रीम सोल पार्ट बजा रही थी।

ब्रह्मा बाबा गुणग्राही थे; क्योंकि त्रिमूर्ति चित्र के अनुसार उनका था राइट हैंड का राइटियस पार्ट। उन्होंने कभी भी बच्चों के अवगुणों को नहीं देखा; परंतु यज्ञ में आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले बच्चों की संख्या ज्यादा होती गई। जब तक प्योरिटी की देवी मम्मा यज्ञ में जीवित थी तब तक आसुरी स्वभाव-संस्कार वाले बच्चे कुछ नहीं कर पाए। जितनी भी समस्याएँ आती थी उनमें से ज्यादा समस्या तो मम्मा ब्रह्मा बाबा तक पहुँचने ही नहीं देती थी, मम्मा खुद सम्भाल लेती थी। जैसे ही 24 जून 1965 को मम्मा ने गले के कैन्सर के कारण शरीर छोड़

दिया, वैसे ही वो आसुरी स्वभाव-संस्कार वाले बच्चे ब्रह्मा बाबा पर हावी होने लगे और प्योरिटी की देवी न रहने के कारण यज्ञ में इम्प्योरिटी बढ़ने लगी।

ब्रह्मा को प्रजापिता का टाइटिल

ता.1.1.73 पृ.3 के अन्त में व मु.31.3.75 पृ.3 के अन्त की रिवाइज़ मुरलियों में बोला है-‘इतनी ब्रह्माकुमारियाँ हैं तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा।’ इससे पहले की मुरलियों में बाबा ने प्रजापिता की बात नहीं उठाई; क्योंकि मम्मा के शरीर छोड़ने से पहले प्रजापिता की बात उठाने का मतलब ही नहीं। उस समय तो वे आत्माएँ यज्ञ में थीं ही नहीं। जब राम-सीता वाली आत्माओं में से पहले कोई एक पुनः यज्ञ में वापस आ गई तब ब्रह्मा बाबा को प्रजापिता का टाइटिल दिया गया। ता.7.9.77 पृ.2 की रिवाइज़ मुरली आदि में बोला है- ‘ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है।’ साक्षात्कार से जो मुख्य चार चित्र बनाये गये हैं उनमें पहले वाले पुराने दो चित्रों-त्रिमूर्ति और कल्पवृक्ष-में सिर्फ़ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय लिखा है और सन् 65/66 के बाद बने दो चित्रों-लक्ष्मी-नारायण व सीढ़ी-में ‘प्रजापिता’ शब्द एड कर दिया गया है। मुरलियों के महावाक्यों से यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है कि हम ब्राह्मण सिर्फ़ ब्रह्मा माँ के ही बच्चे नहीं हैं, बल्कि हमारा बाप भी है- प्रजापिता। हम माता-पिता दोनों की संतान हैं। प्रजापिता चला गया, तो प्रजापिता का कार्यभार ब्रह्मा बाबा ने सम्भाला। ब्रह्मा बाबा को टाइटिल मिल गया ‘प्रजापिता ब्रह्मा।’ ये उनका ओरीजिनल टाइटिल नहीं है। जैसे पाण्डे जी की पत्नी क्या कही जाती है? श्रीमती पाण्डे जी। डा. साहब की पत्नी क्या कही जाती है? डाक्टरनी। लक़ब मिल जाता है। तो इसी तरीके से ब्रह्मा बाबा को प्रजापिता का लक़ब मिल गया। मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद सन् 65 के बाद ये ‘प्रजापिता’ शब्द एड कर डाला। इसका मतलब है कि ये ‘प्रजापिता’ टाइटिल ब्रह्मा बाबा का था। टाइटिल था, ब्रह्मा बाबा कोई प्रजापिता के ओरीजिनल पार्टधारी नहीं थे।

- बाबा ने रात को भी समझाया बी॰के॰ के आगे ‘प्रजापिता’ अक्षर ज़रूर डालना है। यह ऐसे-2 अक्षर भूलो नहीं। ब्रह्मा नाम भी आजकल बहुतों के हैं। फीमेल्स का भी ब्रह्मा नाम है; इसलिए सदैव लिखो प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। (मु.ता.25.10.90 पृ.3 अन्त)
- वर्सा देने के लिए ज़रूर ब्रह्मा तन में आवेंगे। यह प्रजापिता ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़े ही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ स्थूल में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी स्थूल में है। यह राज़ बैठ समझो। (मु.ता. 4.11.72, पृ.2 आदि)

• तुम अगर ब्राहमण हो तो ब्रहमा कहाँ है? तुम्हारा बाप कहाँ है? ब्रहमा नाम तो कह नहीं सके। फिर तुम ब्राहमण कैसे कहते हो? ब्राहमण तो प्रजापिता ब्रहमा की सन्तान थे। यह भी शरीर में है ना। अब तुम हो सच्चे ब्राहमण और वो हैं झूठे ब्राहमण। (मु.ता. 17.9.69, पृ.2 मध्य)

यज्ञ में जो आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले बच्चे थे उन बच्चों ने माँ के लव का नाजायज फ़ायदा उठाया। उन्होंने ब्रहमा माँ के प्यार को वैल्यू नहीं दी। उन आसुरी ब्राहमणों के विपरीत आचरण से ब्रहमा माँ का दिल टूट गया। अन्त समय में जब बाबा ने देखा कि मेरे ही बच्चे मेरे साथ दगाबाज़ी कर गए, सारी ब्राहमणों की सत्ता उन्होंने अपनी मुट्ठी में ले ली, वर्ल्ड रिन्यूअल ट्रस्ट बनाय लिया और मेरा नाम उसमें नहीं रखा। मैं जिन बच्चों को ज्यादा अच्छा, श्रेष्ठ और सच्चा मानता हूँ, उनमें से किसी का नाम नहीं रखा गया। मुझे भी निकाल दिया गया। तो बाबा को सहन नहीं हुआ और हार्टफेल हो गया। यह बात शास्त्रों में भी तो आती हैं- कृष्ण, जिन्होंने इतना बड़ा महाभारी महाभारत युद्ध कराया, गीता का ज्ञान दिया, इतना श्रेष्ठ ज्ञान दिया। कहते हैं अन्त समय उनको एक बहेलिये ने पाँव में तीर मारा और उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। अब ब्रहमा बाबा जो धोखा खा गए, वो भगवान का स्वरूप नहीं हो सकता। धोखा खाने के बावजूद भी अगर जीवित बने रहे, निश्चय दृढ़ बना रहे, निश्चय उखड़े नहीं, तो शरीर छोड़ने की बात नहीं होती। शरीर तब छोड़े जब काम पूरा हो जाए, उसको कहेंगे निश्चयबुद्धि। बाबा ने तो मुरली में ये भी बोला है कि योगी का कभी हार्ट फेल नहीं होता।

ब्रहमा बाप, टीचर, सद्गुरू नहीं!

परमात्मा शिव तीन रूपों में हम बच्चों के सामने मुख्य रूप से प्रत्यक्ष होते हैं- बाप, टीचर और सद्गुरु। कोई कहे, ब्रहमा बाबा के द्वारा ये तीनों पार्ट चले, तो यह बिल्कुल राँग है। वो तीनों रूपों का पार्ट एक ही मूर्ति के द्वारा चलता है। मु.ता.10.7.99 पृ.1 के आदि में ही बाबा ने बता दिया कि 'यह मूर्ति एक ही है; परंतु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं।'

ब्रहमा के द्वारा सिर्फ़ माँ का जन्मदात्री का पार्ट चलता है, प्यार देने का पार्ट चलता है। पिता का काम होता है आदि में बीजारोपण करना और अंत मे वर्सा देना। यह दोनों कार्य ब्रहमा बाबा के द्वारा तो नहीं हुये। बीजारोपण करने वाले या मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाले बाप का पार्ट नहीं चलता है। दुनिया के दुःख-दर्दों से बुद्धि मुक्त हो जाए, ऐसी अनुभूति अपने जीवन में होने लगे, यह वर्सा ब्रहमा बाबा के द्वारा नहीं मिला। ब्रहमा द्वारा हम ब्राहमण बच्चों को सिर्फ़ प्यार मिलता है। बच्चों के रूप में जन्म मिलता है। अगर कोई कहते भी हैं (कि) हमें तो वर्सा

मिल गया, तो ईंटों का शान्तिधाम और सुखधाम कोई स्वर्ग थोड़े ही स्थापन करता है। ऐसे तो ऋषिकेश में वो साधु-सन्यासी हैं उन्होंने भी एक महल बनाया हुआ है और उसका नाम रख दिया है स्वर्गाश्रम। नाम रख देने से स्वर्गाश्रम हो जाता है क्या? नहीं हो जाता। मु.ता.18.9.83 पृ.1 के अंत में बाबा ने बोला है- ' ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना करना, यह ब्रह्मा का काम नहीं। यह परमपिता परमात्मा का ही काम है।' मु.ता.8.7.74 पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है- 'जब फादर है तो ज़रूर फादर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ़ कहे और कब मिले ही नहीं तो वह फादर हो कैसे सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएँ हैं, सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो भी मुराद है, आश है, वह पूर्ण करते हैं।' सारी दुनियाँ की जो भी आत्माएँ हैं क्या ब्रह्मा बाबा उन सभी से मिले? सब बच्चों की जो भी मुराद है, आश है, क्या वह पूर्ण की? नहीं की। इस मुरली के महावाक्य से ही ये स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्मा बाबा के द्वारा बाप का पार्ट नहीं चला।

टीचर का काम होता है जो भी टेक्स्ट बुक है उस टेक्स्ट बुक का क्लारिफिकेशन देना। हमारी टेक्स्ट बुक कौन-सी है? मुरली है हमारी पद्य, कविता और अव्यक्त वाणी है हमारी गद्य, प्रोज। उन दोनों का क्लारिफिकेशन सुप्रीम सोल जिस तन के द्वारा देता है वो बाप भी है, क्लारिफिकेशन देने वाला टीचर भी है। अगर ब्रह्मा बाबा के द्वारा टीचर का पार्ट चला होता तो 1966 में जो घोषणा की गई 'आने वाले 10 वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होने वाला है और होवनहार विश्वयुद्ध के पश्चात सूर्यवंशी श्री ल॰-श्री ना॰ का राज्य शीघ्र ही आने वाला है।' इस दस वर्षीय घोषणा में कौन-सा रहस्य है? उस रहस्य को ब्रह्मा बाबा को स्वयं ही समझ जाना चाहिए था; लेकिन नहीं समझ पाये। ब्रह्मा बाबा ने तो यही समझा कि स्थूल दुनिया के विनाश की घोषणा है; पर मुरलियों में तो बाबा यही कहते हैं कि बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते है। अ.वाणी में बाबा ने बोला है कि 'ब्राह्मणों के लिए इतने बड़े विश्व के अंदर अपना ही छोटा-सा संसार है।' (अ.वा.13.6.73 पृ.97 अं.) इसका मतलब बाबा जो भी बोलते हैं वो पहले ब्राह्मणों की दुनिया के प्रति ही लागू होता है; लेकिन ब्रह्मा बाबा समझ नहीं पाये। बच्चा बुद्धि होने के कारण ब्रह्मा बाबा ने हद में ले लिया और उस समय की जो लौकिक गवर्नमेट थी उनको मेमोरैंडम लिखकर दे दिया कि 1976 में सारी दुनिया का विनाश हो जायेगा और अगर विनाश नहीं होगा तो ब्राह्मणों की सारी प्रापर्टी सरकार की हो जायेगी। मु.ता.25.7.67 पृ.3 के अंत में भी ये बात आई है कि- 'गवर्मेंट को भी कहते हैं 10 वर्ष के अंदर हम यहाँ दैवी राज्य स्थापन करेंगे। न करें तो आप यह मकान आदि सब ले लेना। लड़ना चाहिए ना। बोलो, दूसरा कोई ऐसा नहीं कहेगा कि हम 10 वर्ष के अंदर यह कार्य न करें

तो मकान आपका। तुम लिखत में देते हो तो भी समझते नहीं। ऐसा कोई लिखकर दे न सके। हम तो 5000 ब्राह्मणों की सही लेकर देते हैं।'

जब ब्रह्मा बाबा ही समझ नहीं पाये तो जो भी उस समय के ब्राह्मण बच्चे थे उन्होंने भी नहीं समझा। 1976 में स्थूल दुनिया का विनाश नहीं हुआ तो बहुत से ब्राह्मण बच्चे अनिश्चयबुद्धि हो गए। जिसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों की दुनिया में विघटन हो गया। इसके लिए बाबा ने मुरली में बोला कि 'हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है।' (मु.1.11.00 पृ.2म.) जो चित्र में एक गोले में सफेद पोशधारी ब्राह्मण आत्माएँ ही यहाँ आपस में लड़ते-झगड़ते, विघटित होते दिखाई गई हैं। जबकि दूसरी तरफ दूसरे गोले में जो अटल निश्चयबुद्धि आत्माएँ हैं उनको जयजयकार करते हुए दिखाया गया है।

टीचर तो हमेशा स्ट्रिक्ट होता है। त्रिमूर्ति में ब्रह्मा बाबा लूज होकर बैठे हैं। इसका मतलब ब्रह्मा बाबा लूज़ हो जाते थे। भले मुरली में बोल दिया कि 'मकान नहीं बनाना है तुमको तो प्रापर्टी कुछ भी बनानी नहीं है। हुक्म नहीं है।' (मु.7.1.67 पृ.1मध्य) प्रापर्टी बनाकर अभी क्या करेंगे? सभी विनाश हो जावेगी। और ये भी बोल दिया शादी बरबादी मु.9.3.78 पृ.3 के अंत में बाबा ने बोला है कि 'विकार के लिए शादी बरबादी है। ....आधा कल्प भक्तिमार्ग में विकार के लिए शादी चली। अब संगम पर हैं। अब विकार के लिए शादी करना बरबादी है। परमपिता परमात्मा शिव के साथ सगाई आबादी कर देती है।' लेकिन बाबा से कोई बच्चे आ करके पूछते थे- बाबा बड़ी परेशानी है, हमसे खाना बनाया नहीं जाता है, हमें इतना काम करना पड़ता है और घर में बूढ़ी माता है, तो बाबा का हृदय द्रवित हो जाता था। अच्छा बच्चे, भल शादी कर लो; लेकिन पवित्र रहकर दिखाना। अरे, शादी करने के बाद पवित्र रहकर दिखा ही दें तो फिर मुरली में बाबा को कहने की दरकार क्या थी कि शादी बरबादी। माना माँ का दिल ऐसा होता है कि वो भावनावादी होने के कारण परमीशन दे देती थी। मुरली की व्याख्या देने वाला टीचर का भी पार्ट ब्रह्मा बाबा के द्वारा नहीं चला।

सद्गुरू का काम क्या होता है? सख्त पार्ट बजा करके बच्चों की सद्गति करना। सदगुरू है तो सद्गति करेगा। सद्गति दो प्रकार से होती है। पहले सूक्ष्म रूप में मन बुद्धि की सद्गति, फिर स्थूल रूप में शरीर की सद्गति सम्पन्न होती है। सद्गति सीधी नहीं हो सकती कि एकदम शरीर की सद्गति हो जाए, शरीर निरोगी कंचन-काया बन जाए। नहीं, पहले सद्गति किसकी होगी? मन-बुद्धि रूपी आत्मा की सद्गति होनी चाहिए। तो वो सद्गति दाता बाप भी इस सृष्टि पर ब्रह्मा बाबा के रूप में आकर मन-बुद्धि रूपी आत्मा की सद्गति नहीं करते। मन-बुद्धि की

सद्‌गति की पहचान क्या है? सद्‌गति की पहचान है कि बुद्धि इस विनाशी दुनिया के आडम्बरों में न रमे, देह और देह के सम्बन्धियों से बुद्धि उपराम होने लगे। कहाँ रमण करे? ज्ञान के मनन-चिंतन में रमण करने में आराम महसूस करे। उसको मनन-चिंतन-मंथन ही अच्छा लगे। ईश्वरीय सेवा की बातों में बुद्धि बिज़ी रहे, परमात्मा की याद में और नई दुनिया की प्लानिंग करने में बुद्धि रमण करती रहे। तो यह हुई बुद्धि की सद्‌गति। अगर बुद्धि में दुनियावी संकल्प चल रहे हैं, देह और देह के सम्बन्धियों के संकल्प चल रहे हैं, जो पेट के दुनियावी धंधा-धोरी के संकल्प चल रहे हैं, तो ऐसी बुद्धि को सद्‌गति वाली मन-बुद्धि नहीं कहा जाएगा। वो आत्मा सद्‌गति की ओर नहीं है। अगर मनन-चिंतन-मंथन बुद्धि में नहीं चलता, तो समझ लो आत्मा अभी रोगी है, सद्‌गति पाने वाली नहीं। इसीलिए मुरली में बोला कि • बड़े ज़ोर से धुन लगाते हैं सदगुरू अकालमूर्त.. मूर्त ही नहीं हो तो वह फिर सदगुरू कैसे बनेंगे? सद्‌गति कैसे देंगे? वह सत्गुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। (मु.ता.27.9.84 पृ.2 मध्य)

• स्वर्ग का रचता कोई ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। वास्तव में तुम्हारा गुरू ब्रह्मा नहीं है। सतगुरू है ही एक। यह ब्रह्मा भी उनसे सीख रहे हैं। ऐसे नहीं कि सीखकर वह चला जावेगा तो हम गद्दी पर बैठेंगे। नहीं, ऐसे होता नहीं। सतगुरू एक ही सतगुरू है। हम सब उनसे सीखकर और सद्‌गति को पाते हैं। (मु.28.7.77 पृ.2 अंत)

• ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक सतगुरू है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू तीनों इकट्ठे हैं। (मु.ता.25.9.98 पृ.3 आ.)

मुरली में आई हुई इन सारी बातों से यही क्लीयर हो जाता है कि ब्रह्मा बाबा के द्‌वारा बाप, टीचर, सद्‌गुरू ये तीनों पार्ट नहीं चले। मु.ता.31.3.72 पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है कि 'ब्रह्मा-सरस्वती भी वास्तव में मम्मा-बाबा नहीं हैं।'

गुलजार दादी में शिवबाबा नहीं आते

ब्रह्मा बाबा और सरस्वती जो मात-पिता के रूप में पार्ट बजा रहे थे, उन्होंने शरीर छोड़ा तो इसका मतलब ये नहीं है कि परमात्मा शिव हमेशा के लिए वानप्रस्थी हो गया। नहीं, परमात्मा शिव तो ऊपर से एक बार नीचे अवतरित हो गए तो स्वर्ग स्थापन करके ही, हम बच्चों को वापस ले करके जायेंगे। जो बाबा का विरुद है, 'मैं तुम बच्चों को साथ ले करके जाऊँगा।' तो बीच में कैसे चला जायेगा? फिर अभी शिवबाबा का पार्ट कहाँ चल रहा है? किस तन द्‌वारा चल रहा है? कोई-2 ब्राह्मण ऐसे समझते हैं कि सुप्रीम सोल शिव सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में प्रवेश करते हैं और फिर शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों मिलकर गुल्ज़ार दादी के तन में प्रवेश करके

पार्ट बजा रहे हैं; लेकिन मु.ता.5.11.92 पृ.1 के आदि में ही यह बात आई है कि 'आते भी हैं पतित दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं, मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। सूक्ष्मवतनवासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं।--- मैं इसमें आया हूँ। मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा द्वारा प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहाँ पतितों को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वह सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है।' इस प्वाइन्ट से ही यह सिद्ध होता है कि सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में शिवबाबा नहीं आते। अब रही बात कि कोई कहे- फिर गुलज़ार दादी में कौन आता है? तो स्पष्ट है कि गुलज़ार दादी में ब्रह्मा की सोल प्रवेश करती है। शिवबाबा की सोल प्रवेश नहीं करती। कोई-2 ब्राह्मण ये समझ लेते हैं कि ब्रह्मा बाबा शरीर छोड़ने के बाद आकारी बन गये। आकारी माना वो समझ लेते हैं कि शरीर छोड़ने के बाद बनते होंगे। शरीर छोड़ने के बाद सूक्ष्मवतन में आकारी बना जाता है; लेकिन साकार शरीर में रहते हुए भी हम आकारी बन सकते हैं। अव्यक्त वाणी में बाबा ने हमको डाइरैक्शन दिये हैं कि सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी। साकार में आते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकें।... इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े, सिर्फ़ अमृतवेले नहीं। बीच-2 में यह अभ्यास करो। (अ.वा.10.12.92 पृ.117 म.) शरीर में रहते हुए ही ये प्रैक्टिस करनी है या शरीर छोड़ करके मम्मा-बाबा की तरह करना है? शरीर में रहते हुए ही ये प्रैक्टिस होनी है। आकारी का मतलब कोई सूक्ष्मवतन में चला जाना नहीं, शरीर छोड़ना नहीं। शरीर में रहते हुए आकारी कैसे बना जाए वो भी कोई ब्राह्मण बच्चे नहीं जानते। मनन-चिंतन और मंथन की जो स्टेज है वही है आकारी स्टेज। जिसमें ये साकारी दुनियाँ भूल जाती है। देह और देह के संबंध भूल जाते हैं। फरिश्ते की स्टेज बन जाती है। जिन फरिश्तों का उस समय इस फर्श की दुनियाँ वालों से कोई रिश्ता नहीं रहता। वो है हमारी आकारी स्टेज। वो आकारी स्टेज वाली एडवान्स पार्टी कोई सूक्ष्मवतन में ऊपर नहीं है, जो उन्होंने समझ लिया है। अ.वा.2.8.72 पृ.349 मध्य में ये बात आई है- 'एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। आप लोग के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, ना जाओ; लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिए वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे।' (फील्ड, परिवार व स्टेज ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं होता, बल्कि इसी साकार सृष्टि पर होता है)

69 में शरीर छोड़ने के बाद सूक्ष्मवतनवासी बनकर ब्रह्मा बाबा भी इसी सृष्टि पर कार्य कर रहे हैं। वो कोई ऊपर में सूक्ष्मवतन में नहीं चले गए। सूक्ष्मवतन भी कोई वहाँ नहीं है। वो भी यहीं है। इसलिए मुरलियों में सूक्ष्मवतन को बाबा ने उड़ा दिया। सूक्ष्मवतन कोई चीज़ नहीं। ऐसे मुरली में बोला हुआ है। सूक्ष्मवतन में क्या है? कुछ भी नहीं। सूक्ष्मवतन है ही नहीं। मुरलियों में सूक्ष्मवतन को कट कर दिया है। सूक्ष्मवतन कुछ होता नहीं। इसको तो परमात्मा शिव संगमयुग में साक्षात्कार के लिए सिर्फ़ थोड़े समय के लिए रचते हैं। कहा है 'सूक्ष्मवतन का तो नाम ही नहीं। वहाँ न सफेद पोशधारी होते, न जेवरधारी होते, न कोई नाग-बलाएँ पहनने वाला शंकर आदि होता है। बाकी ब्रह्मा और विष्णु का राज़ बाप समझाते रहते हैं।' (मु.ता.10.1.76 पृ.3 अन्त) इसी तरह मु.ता.12.5.69 पृ.2 के आदि में कहा है- 'हिस्ट्री-ज्योग्राफी सूक्ष्मवतन की तो है नहीं। यह सूक्ष्मवतन आदि है भक्तिमार्ग में। ज्ञानमार्ग में कुछ है नहीं। भल तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो, सा॰ करते हो। वहाँ चतुर्भुज देखते हो। (पहले देखा था) चित्रों में (देखा) है ना तो बुद्धि में बैठा हुआ है तो ज़रूर सा॰ होंगे; परंतु ऐसी कोई चीज़ है नहीं।' इसी तरह अ.वा.22.11.72 पृ.377 के आदि में तो स्पष्ट कह दिया है- 'सूक्ष्मवतन यहाँ ही बनना है।' सूक्ष्मवतन कोई ऊपर में नहीं है जहाँ कि साकार शरीर छोड़कर आकारी शरीरधारी आत्माओं का संगठन रहता हो। बल्कि इस साकार सृष्टि पर ही कोई ऐसे विशेष ब्राह्मण बच्चे हैं जो साकार शरीर में रहते हुये भी अपनी ऐसी आकारी व निराकारी स्टेज बना लेते हैं कि उनके इस आकारी स्टेज के संगठन को सूक्ष्मवतन या एडवांस पार्टी समझ लिया जाता है। ऐसे जो महावाक्य बोले हुए हैं इनसे ये साबित होता है कि इसी सृष्टि पर कोई विशेष ब्राह्मण बच्चे हैं, जो संगठित रूप में अपनी ऐसी मनन-चिंतन की आकारी स्टेज बना लेते हैं उन्हीं का वो सूक्ष्मवतन है।

मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के आधार पर ये साबित हो रहा है कि सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में शिवबाबा नहीं आते। फिर अभी गुलज़ार दादी में कौन आता है? गुलज़ार दादी के तन में सिर्फ़ ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल बीच-2 में पार्ट बजाती है। जिसके लिए मुरलियों में ढेर सारे प्रूफ मिलते हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा में जब शिवबाबा की प्रवेशता होती थी तो ब्रह्मा बाबा चैतन्य अवस्था में रहते थे। उनकी सोल गुम नहीं होती थी और गुलज़ार दादी में ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर के दबाव से उनकी सोल तो गुम हो जाती है। मु.ता.7.2.68 पृ.1 आदि में इसका प्रमाण देखें- 'बाप ही समझाते हैं। जिसमें प्रवेश किया है वह भी सुनते हैं।' इससे साबित होता है उनमें सूक्ष्म शरीरधारी मनुष्य आत्मा की प्रवेशता होती है। मनुष्य आत्माओं को अपना सूक्ष्म शरीर होता है। परमात्मा शिव को अपना सूक्ष्म शरीर नहीं है। वो तो हल्की-फुल्की आत्मा है।

कब आता है, कब चला जाता है पता नहीं पड़ सकता; लेकिन गुलज़ार दादी में पहले से ही घोषणा हो जाती है- कब आना है और कब जाना है। तो वो परमात्मा की सोल नहीं हो सकती। मु.ता.12.4.76 पृ.1 के आदि में बोला है- 'ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते। बाबा को आपे ही आना है।' जबकि गुल्ज़ार दादी में आवाहन करते हैं। पहले से ही डेट फिक्स हो जाती है।

मु.ता.26.6.68 पृ.3 अंत में बाबा ने स्पष्ट बता दिया कि 'सबसे जास्ती पतित कौन है, यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ।' तो क्या गुलज़ार दादी को सबसे जास्ती पतित तन कहा जा सकता है? गुलज़ार दादी तो गृहस्थी के कीचड़ में भी नहीं पली हैं। वो तो बचपन से ही यज्ञ के शुद्ध वातावरण में मम्मा-बाबा के सामने पली हैं। उनके लिए ये कैसे कहा जा सकता है कि वो सबसे जास्ती पतित तन है। इसलिए मु.ता.15.10.69 पृ.2 मध्य में बाबा ने बोला है- '(शिवबाबा) इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋषि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं संन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवें; परंतु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे? ' मु.ता.26.2.74 पृ.2 अन्त में बोला है- 'नम्बरवन काँटे में मैं आकर उनको नम्बरवन फूल बनाता हूँ।' मतलब बाप तो बड़े ते बड़े कामी काँटे में आकर बड़े ते बड़ा फूल, कमल फूल, किंग फ्लॉवर बनाने के लिए प्रवेश करते हैं। गुलज़ार दादी में ब्रह्मा की सोल, देव आत्मा की सोल तो प्रवेश कर सकती है; लेकिन परमात्मा की सोल प्रवेश नहीं कर सकती। ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता का पता नहीं पड़ता था जबकि गुल्ज़ार दादी में जब ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल प्रवेश करती है तो सबको पता पड़ जाता है। मु.ता.26.1.68 पृ.1 के आदि का प्रूफ देखें- 'बाप खुद कहते हैं मैं जब आता हूँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता है; क्योंकि हैं गुप्त। तुम बच्चे भी हो गुप्त।... प्रवेश कब किया, कब रथ में पधारा, मालूम नहीं पड़ता।'

गुलज़ार दादी के द्वारा जो वाणी चलती है वो वाणी धारणायुक्त वाणी है। धारणा के प्वाइन्ट्स उसमें ज्यादा हैं। ज्ञान के प्वाइन्ट्स उसमें उतने नहीं हो सकते। क्यों? क्योंकि ज्ञानसागर की सोल ज्ञान की बातें सुनाएगी और देवात्मा (कृष्ण उर्फ ब्रह्मा) धारणावान होती है तो वो तो धारणा की ही बातें सुनाएगी ना। दिनांक 24.1.71 की मु. पृ.3 के मध्यांत में बोला है- 'लाउडस्पीकर पर कब पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउडस्पीकर पर रेसपांड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े-2 स्टूडेंट को पढ़ाते हैं।' साबित हो जाता है कि गुलज़ार दादी में जब प्रवेशता होती है तो बहुत बड़ा हुजूम इकट्ठा होता है। लाउडस्पीकर पर ही बोला जाता है।

लाउडस्पीकर पर बोलने वाला जो पार्ट है वो परमात्मा का पार्ट नहीं हो सकता। बाप तो थोड़े-2 ग्रुप्स में थोड़े-2 बच्चों से बात करते हैं। बाप कोई बहुत बड़े हुजूम के सामने भाषण करने नहीं जावेगा। बाप तो अपने बच्चों के सामने ही प्रत्यक्ष होता है। इतनी बड़ी दुनियाँ के हुजूम के सामने प्रत्यक्ष (नहीं होता)। लाखों-करोड़ों के पब्लिक में बाप नहीं आते। स्पष्ट है कि गुल्ज़ार दादी भी संदेशी है। उनके द्वारा अव्यक्त बापदादा शब्द का उच्चारण भी इसलिए किया जाता है कि हम बच्चों के मुकाबले ब्रह्मा बाबा बुद्धियोग से सदा शिवबाबा के साथ हैं। मु.ता.17.3.73 पृ.2 अन्त में बोला है- 'ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं।... अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।' अब गुल्ज़ार दादी को तो कोई ब्रह्मा नहीं कहता। इससे भी साबित हो गया कि गुलज़ार दादी में शिव परमात्मा की सोल नहीं आती। ब्रह्मा की सोल ही प्रवेश करती है। तो वो परमपिता परमात्मा का पार्ट नहीं है।

गुलजार दादी में ब्रह्मा की प्रवेशता क्यों ?

अब प्रश्न उठता है कि जब गुल्ज़ार दादी में शिवबाबा प्रवेश नहीं करते तो ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल भी क्यों प्रवेश करती है? तो इसका कारण यह है कि ब्रह्मा बाबा के थ्रू यज्ञ की पालना हुई। भल बच्चों की आसुरी चलन से उनका हार्टफेल हो गया; लेकिन अंत तक भी बच्चों को सुधारने का, उनका कल्याण करने का शुभ संकल्प ब्रह्मा बाबा की मन-बुद्धि रूपी आत्मा में रहा। माँ का पार्ट होने के कारण बच्चों के प्रति उनका शुद्ध मोह भी है ही। जो बच्चे शिवबाबा के लवफुल पार्ट से नहीं सुधरे उनको 'आर' अर्थात् अरई चेतावनी देने वाले अव्यक्त बापदादा के इस पार्ट की भी ज़रूरत थी। यही कारण है कि बीच-2 में ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल गुल्ज़ार दादी के तन से बच्चों को धारणावान बनाने की तथा अपनी चलन सुधारने की चेतावनी देने का पार्ट चला रही है; लेकिन जैसा कहा जाता है कि 'प्यार, आर और मार में से अंत में 'मार' याने सज़ा (दंड) की नीति अपनानी पड़ती है। कहते हैं 'मार' के आगे भूत भी भाग जाते हैं तो यहाँ भी जो बच्चे प्यार व आर की मीठी (संतुलित) भाषा नहीं समझे उनके लिए फिर बाप को धर्मराज के रूप में प्रलयंकारी पार्ट बजाने के लिए इनएडवांस तैयार होना पड़ता है। अ.वा.22.10.70 पृ.310 के अन्त में भी चेतावनी दी है कि 'अभी थोड़े समय के अन्दर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।' उन बच्चों को भी बाबा ने सावधान किया है जो यह समझते हैं कि ऊपर में कहीं कोई सूक्ष्मवतन है जहाँ सज़ायें मिलेंगी। जबकि मु.ता.20.5.77 पृ.1 अंत 'सज़ाएँ भी कैसे खाते हैं? भिन्न-2 शरीर धारण कर।

जिस-2 को जिस रूप से दुख दिया है तो वह सा॰ करते हैं, दंड मिलता जाता है।' और मु.ता.4.10.73 पृ.2 अंत 'बाबा ने समझाया है सज़ा कैसे मिलती है? सूक्ष्म शरीर भी नहीं, स्थूल शरीर धारण करके सज़ा देते हैं।' तो महाकाल का पार्ट बजाने के लिए राम की आत्मा शंकर के रूप में अपना तन, मन, धन (सर्वस्व) बाप-दादा (शिव-ब्रह्मा) को अर्पण करने के निमित्त बनती है। अ.वा.ता.14.11.78 पृ.59-60 में इशारा भी दिया है- 'करन-करावनहार है तो करनहार का भी पार्ट बजाया (पास्ट में ब्रह्मा द्वारा) और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं।' (प्रेजेंट में धर्मराज शंकर द्वारा)

राम को धनुष-बाण

जब ब्रह्मा बाबा का हार्ट फेल हो गया तो परमात्मा शिव को, निश्चित है कि कोई कठोर स्वभाव वाला तन धारण करना पड़े; क्योंकि जो काम प्यार से नहीं होता है वो काम मार से ज़रूर सम्भव हो जाता है। डंडे से भूत भाग जाते हैं। तो ऐसे ही हुआ। आदि में जो बच्चे थे, शरीर छोड़ गये, राम या राम जैसी जो भी आत्माएँ थीं, शरीर छोड़ करके गईं, वही आत्माएँ फिर दुबारा कहीं न कहीं इस संसार में जन्म लेती हैं और बड़ी होकर, समझदार हो करके फिर ज्ञान में आ जाती हैं। रंगमंच तो शूटिंग पीरियड में भी खाली नहीं रहेगा।

बाबा ने मुरली में बोला है कि 'जो बच्चे एक बार ब्राह्मण जन्म ले करके ब्राह्मण बनते हैं, अगर शरीर छोड़ते हैं, तो वो जन्म लेकर के दुबारा फिर आ करके ब्राह्मण बनेंगे। जावेंगे कहाँ?' 'ब्राह्मण धर्म में तुम कितने जन्म लेते हो? (एक जन्म) कोई दो-तीन जन्म भी लेते हैं। समझो, कोई शरीर छोड़ते हैं, वह संस्कार ब्राह्मणपने के ले जाते हैं। तो संस्कार ब्राह्मणपने के होने के कारण फिर भी ब्राह्मण कुल में ही आ जाएँगे। सच्चे-2 ब्राह्मण कुल में आएँगे।'

(मु.ता.8.02.84 पृ.3 अंत)

- कुछ हिसाब-किताब है तो दो-तीन जन्म भी ले सकते हैं। (मु.ता.8.02.84 पृ.3 अंत)

पूर्व जन्म की प्रारब्ध उनको अगले जन्म में फिर से मिलती है। ब्राह्मण जन्म का किया हुआ पुरुषार्थ कभी व्यर्थ जा नहीं सकता।

ब्रह्मा बाबा (और) मम्मा ने भल शरीर छोड़ दिया; लेकिन उनका स्थान लेने वाली आत्माएँ यज्ञ में उनके शरीर छोड़ते ही उसी वर्ष ज्ञान में आ जाती हैं। (माना मम्मा का स्थान लेने वाली आत्मा 1966 में और ब्रह्मा बाबा का स्थान लेने वाली आत्मा 1969 में ज्ञान में आ जाती हैं) और वो आत्माएँ जो ज्ञान में आती हैं तो ज़रूर पूर्व जन्म की प्रारब्ध अपने साथ लाती हैं। मुरलियों में बाबा ने कहा 'रामफेल हो गया।' यह नहीं कहा कि राम फेल हो जावेगा; क्योंकि

फाइनल परीक्षा तो अभी होनी है। इसलिए मु.ता.9.8.74 पृ.1 के मध्य में बोला है- 'बाप समझाते हैं, ऐसे नहीं कहेंगे, रामचन्द्र फेल हुआ। नहीं। (यज्ञ के आदि में) कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर रामचन्द्र बनते हैं। राम वा सीता त्रेता में थोड़े ही पढ़ते हैं जो फेल हुए। यह भी समझ की बात है न। कोई सुने रामचन्द्र फेल हुआ तो कहेंगे, कहाँ पढ़ते थे? आगे (पूर्व) जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है।' मुरली में ये भी बोला है कि

'रामचन्द्र ने जीत नहीं पाई; इसलिए उनको क्षत्रिय की निशानी दी है। तुम सब क्षत्रिय हो न, जो माया पर जीत पाते हो। कम मार्क्स से पास होने वाले को चन्द्रवंशी कहा जाता; इसलिए राम को बाण आदि दे दिए हैं। हिंसा तो त्रेता में भी होती नहीं।' (मु.ता.23.7.74 पृ.3 मध्यांत)

राम की आत्मा की जो विशेषता है वो बाबा ने बताई कि 'राम फेल हो गया तो उसको धनुष-बाण मिला। तीर-कमान मिल गया।' ये कोई वर्सा है क्या? तीर कहा जाता है ज्ञान रत्नों को। ज्ञान के तीर, ज्ञान के बाण जो बुद्धि रूपी तरकस में भरे जाते हैं और धनुष कहा जाता है- ये शरीर जिससे पुरुषार्थ में लचीलापन आता है। जैसे धनुष खींचा जाता है तो लपक जाता है। ऐसे ही पुरुषार्थ में (जितना ही) लचीलापन (होगा) उतना ही पुरुषार्थ तेज होगा। तेज रफ्तार वाला होगा। तो पूर्वजन्म की जो आत्माएँ यज्ञ छोड़ करके गईं, अगले जन्म में जब वो दुबारा आ करके ब्राह्मण बनती हैं तो उनकी ये दो विशेषतायें होती हैं- वो ज्ञान में, ज्ञान बाण चलाने में तीखी होती हैं और पुरुषार्थ करने में तीखी होती हैं। ये तीर-कमान उनको आटोमेटिक पूर्व जन्म से मिलता है। जैसे, कोई बड़ा बच्चा बाप से अलग हो जाता है तो बाप उसको उसके हिस्से की प्रापर्टी दे देता है। छोटे-2 बच्चे तो जब बड़े होंगे तब उनको प्रापर्टी मिलेगी; लेकिन बड़ा बच्चा पहले ही अलग हो गया, अगर जो कुछ भी दिया उससे वो अपना धंधा शुरू कर दे और सही तरीक़े से चले तो छोटों से तो ज़्यादा ही आगे चला जायेगा; क्योंकि भारतीय परम्परा में ये मान्यता है कि जो वर्सा है, राजाई है, घर का कारोबार है वो हमेशा बड़े बच्चे को सौंपा जाता रहा। तो भल उस बच्चे ने अपनी ज़िम्मेवारी को पूरा वहन नहीं किया फिर भी परमात्मा शिव ने भी उसको उसका हिस्सा निकाल कर दे दिया कि जाओ बच्चे, तीर-कमान लो, अपना शिकार करो और कमाओ, खाओ।

'रामचन्द्र ने जीत नहीं पाई, इसलिए उनको क्षत्रिय की निशानी दी है। तुम सब क्षत्रिय हो ना जो माया पर जीत पाते हो। कम मार्क्स से पास होने वाले को चन्द्रवंशी कहा जाता। इसलिए राम को बाण आदि दे दिये हैं। हिंसा तो त्रेता में भी होती नहीं।' (मु.ता. 23.7.74, पृ.3 मध्यांत)

एकलव्य

राम और राम जैसी सशक्त आत्माएँ जो यज्ञ के आदि में बिछुड़ गई थी वो दुबारा जन्म ले करके फिर यज्ञ में आती हैं; लेकिन उनको पुरुषार्थ करने के लिए यज्ञ के भंडारे से कोई अंदरूनी सहयोग नहीं मिल सकता। क्यों नहीं मिल सकता? जो एकलव्य का गायन है। एक को लव करने वाला। किसी का आधार नहीं। जो एक से प्राप्ति हुई उसी के आधार पर चलने वाला। इस तरह की जो आत्माएँ हैं, भल उनको यज्ञकुंड से कोई सहयोग विशेष नहीं मिले तो भी उनको कोई परवाह नहीं है। वो स्वयं ही इतनी पुरुषार्थी होती हैं कि बाबा के वारिसदार स्वतः ही बना लेती हैं। अपने पैरों खड़े हो करके बाबा के ढेर वारिसदार तैयार कर देती हैं। बाबा ने मु.ता.3.8.74 पृ.3 के आदि में बोला भी है- 'भील, अर्जुन से तीखा हो गया। बाहर में रहने वाले ने (ज्ञान) तीर पूरा चट कर लिया।'

सुदामा के चावल

जिसका गायन शास्त्रों में है- दो मुट्ठी चावल। चावल अर्थात् वो आत्माएँ जिनका देहअभिमान रूपी छिलका उतार दिया जाता है। बाबा ने ता.17.1.79 की मुरली में बोला है- 'बाप देते हैं ज्ञान रतन। वह तो दाता हैं। बच्चे चावल मुट्ठी देते हैं, बाप तो देते हैं बेहद की बादशाही। उनकी भेंट में यह तो चावल मुट्ठी हुई ना। तुम सब सुदामा हो। देते क्या हो, लेते क्या हो! विश्व की बादशाही।' दो मुट्ठी चावल (अर्थात) राइट हैंड में एक मुट्ठी और लेफ़्ट हैंड में एक मुट्ठी माना रुद्रमाला के मणके और विजयमाला के मणके। चावल माने आत्मा। जब टीका लगाते हैं तो यहाँ पर चावल रखते हैं (जो) आत्मा की यादगार (है)। सात्विक आत्मा। रुद्रमाला और विजयमाला दोनों प्रकार के आत्मारूपी संगठन को परमात्मा के कार्य में अर्पण कर देता है। तो इस तरह की आत्माएँ इतनी सशक्त आत्माएँ हैं कि वो माला का संगठन बनाने की योग्यता रखती हैं। वारिसदार अर्थात राजा क्वालिटी निकालने की योग्यता रखती हैं। प्रजा बनाने का कार्य उनका नहीं है। श्रेष्ठ आत्माएँ ज़रूर श्रेष्ठ कार्य करेंगी।'

लास्ट सो फास्ट

मु.ता.16.9.70 पृ.3 के आदि में बाबा ने बोला है- 'लास्ट सो फर्स्ट। फर्स्ट सो लास्ट।' फिर ता.8.6.85 पृ.3 के आदि की मुरली में बोला है- 'देरी से आने वाले आगे जा सकते हैं।' इसलिए मुरली में बोला हुआ है कि जो बाद में आयेंगे वो तीखे जायेंगे। लास्ट सो फास्ट और फास्ट पुरुषार्थ करेंगे तो फर्स्ट आयेंगे। अब इसका अर्थ उन ब्राह्मणों की दुनियाँ में उल्टा लगा लिया जाता है। ऐसे ही मुँह पोंछने के लिए, नये जिज्ञासुओं की मक्खनबाज़ी करने के लिए कहा जाता है कि भाई आप तो लास्ट में आये हैं, आपको तो सब बना-बनाया मिल रहा है, आप ही फास्ट

जा सकते हैं। अरे! अब यहाँ तो लाखों, करोड़ों की तादाद में आ रहे हैं। क्या सारे ही फास्ट जा करके फर्स्ट 108 की माला में आ जाएँगे? ये कैसे सम्भव हो सकता है? लेकिन 'लास्ट सो फास्ट' ये भी समझाना पड़ता है। क्या लास्ट सो फास्ट इतने सारे आ जायेंगे? नहीं। जो यज्ञ के आदि में थे, फर्स्ट में थे फिर शरीर छोड़ करके दुबारा जन्म ले करके लास्ट में यज्ञ में आते हैं, वो फिर फास्ट पुरुषार्थ करने वाले आगे-2 जाते हैं।

जो यज्ञ के पुराने हैं वो फास्ट नहीं जायेंगे? मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद यज्ञ में जो नये-2 आये वो लास्ट वाले फास्ट चले जायेंगे? ये कैसे सम्भव हो सकता है? जिन्होंने मम्मा-बाबा का चेहरा भी नहीं देखा, जिन्होंने कोई चरित्र ही नहीं देखा। उसका कारण है- जिन्होंने साकार को देखा, साकार का प्यार लिया, गोद की अनुभूति ली, वो उस प्यार में इतने दीवाने हो जाते हैं कि उनको साकार ब्रह्मा ही याद आता है। उनको बिंदु याद नहीं आता; क्योंकि उन्होंने साकार से पालना ली है। इसलिए मु.ता.8.3.76 पृ.3 के अन्त में बोला है- 'आगे चल नए भी बहुत निकलेंगे। ऐसे नहीं, पहले आने वाले ही आगे जावेंगे। बाप कहते हैं, पिछाड़ी में आने वालों को तख्त मिलता है तो तीखे हो जाते हैं।' तो आगे जाने का मुख्य आधार है परमात्मा बाप की एक्यूरेट याद। मु.ता.4.9.74 पृ.2 के आदि में इसके स्पष्ट संकेत हैं- 'नए-2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाए तो बहुत ऊँच चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर।'

• 'लास्ट में आने वाले बच्चों को ड्रामा अनुसार हाई जम्प द्वारा फास्ट अर्थात् फर्स्ट जाने का गोल्डन चांस विशेष मिला हुआ है।' (अ.वा.22.1.76 पृ.8 आदि)

उनको निराकार ज्योतिबिन्दु आटोमैटिक याद आता है। जब उनको ज्योतिबिन्दु आटोमैटिक याद आता है तो उनको उसे याद करने में कोई कठिनाई नहीं। उनका सहज राजयोग है। इसलिए वो पुरुषार्थ में लास्ट में आने पर भी फास्ट जाते हैं। ऐसी आत्माएँ मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद बड़ी तीव्र गति से पुरुषार्थ करती हैं। उनमें मुख्य है- राम की आत्मा। उसी में परमात्मा शिव का प्रवेश गुप्त रूप में रहता है। उस समय वो आत्मा वाणी में आने का पार्ट नहीं बजाती। इसलिए उस समय 69 की जो अव्यक्त वाणियाँ चलीं उनमें बाबा ने बोला कि बाप वानप्रस्थी हो गया। वानप्रस्थी हो गया माना वाणी से परे चला गया। इसका मतलब ये नहीं कि वो परमधाम चला गया। है तो इसी सृष्टि पर; लेकिन गुप्त रूप में वाणी से परे हो करके मनन-चिंतन-मंथन का पार्ट चल रहा (था)। वो पार्ट भी कब तक? जब तक कि वो मंथन पूरा न हो

जाए। किसी बात को समझने में और उसका निष्कर्ष निकालने में, निर्णय लेने में टाइम तो लगता है।

शंकर को प्रजापिता नहीं कहेंगे

यज्ञ के आदि में जो आदि ब्रह्मा का पार्ट हुआ। ब्रह्मा दो हो गए- एक तो प्रजापिता ब्रह्मा और दूसरा सिर्फ़ ब्रह्मा। प्रजापिता ब्रह्मा जिसके थ्रू ज्ञान का बीजारोपण किया गया था। प्रजापिता का जो ओरिजिनल टाइटिलधारी था वो तो यज्ञ के आदि का व्यक्तित्व था। वो पर्सनैलिटी कौन-सी थी? यज्ञ के आदि में जो पर्सनैलिटी थी, जिसने बीजारोपण का कार्य किया, जिसका यज्ञ में पुरानी-2 बहनें नाम भी लेती थीं- पिऊ की वाणी। अब उन्होंने वो नाम लेना बंद कर दिया। जैसे भक्तिमार्ग में बाप का नाम गुम करके कृष्ण बच्चे का नाम प्रत्यक्ष कर दिया। कृष्ण भगवान हो गया। ऐसे ही यज्ञ में भी हुआ। जो वास्तव में यज्ञ पिता था, उसको गुम कर दिया और जो बच्चा बुद्धि था उसको प्रत्यक्ष कर दिया। वही यज्ञ के आदि वाला व्यक्तित्व जो असली प्रजापिता था वही व्यक्तित्व वाली राम फेल वाली आत्मा दुबारा जन्म ले करके जब यज्ञ में आती है तो वो ब्रह्मा का बच्चा मुखवंशावली ब्राह्मण बनती है। यज्ञ के आदि में भी प्रजापिता ब्रह्माकुमार हुआ। वही आत्मा फिर दुबारा जन्म लेकर आती है तो ज़रूर श्रेष्ठ ब्रह्माकुमार होगी; क्योंकि वो तो हुआ चोटी का ब्राह्मण। ब्राह्मण कौन-सा प्रसिद्ध है? ब्राह्मण चोटी। चोटी माना सबसे ऊँची स्टेज का ब्राह्मण। वही आत्मा जब दुबारा यज्ञ में आती है तो चोटी का पुरुषार्थ करती है। वो चोटी का ब्राह्मण तो है; लेकिन उसको प्रजापिता नहीं कहेंगे।

अकसर हम बच्चों से ये गलती हो जाती है कि हम शंकर को ही प्रजापिता समझ लेते हैं। वह चोटी का ब्राह्मण (अर्थात्) ऊँची स्टेज का ब्राह्मण तो है; लेकिन

'प्रजापिता' नहीं कहा जा सकता। प्रजापिता तो यज्ञ के आदि का व्यक्तित्व था। आत्मा तो वही (है); लेकिन पर्सनैलिटी आदि वाली वही प्रजापिता (की) नहीं है; क्योंकि उसके द्वारा बीजारोपण का, पिता का काम हुआ था। जब यहाँ पिता का काम ही नहीं हुआ तो तब तक प्रजापिता काहे का? प्रजापिता कब कहा जाए? जब काम करके दिखाए। पिता का काम क्या (है)? आदि में काम है बीजारोपण का और अंत में काम है वर्सा देने का। बाप बच्चों को वर्सा देता है। जैसे दुनियाँ वाले गुरु लोग कह देते हैं- 'श्री-श्री 108 जगद्गुरु शंकराचार्य।' सारा जगत् उनको गुरु मानता नहीं है। सब भारतवासी लोग भी नहीं मानते हैं। तो भी जगद्गुरु का टाइटिल (रख लेते हैं)। वो तो झूठा टाइटिल हुआ ना! ऐसे ही वही प्रजापिता वाली सोल दूसरे जन्म में ब्राह्मण बन करके जब तक 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं को बाप का साक्षात्कार न करा दे तब तक वो प्रजापिता

नहीं कही जा सकती; क्योंकि मुरली में बोला हुआ है कि 'प्रजा कितनी है? 500 करोड़' तो 500 करोड़ सारी प्रजा का पिता होना चाहिए।

बाबा ने मुरलियों में ये बात स्पष्ट की है कि 'प्रजापिता कभी सूक्ष्मवतनवासी नहीं हो सकता।' प्रजापिता तो ज़रूर प्रजा के साथ होना चाहिए। सूक्ष्मवतन में थोड़े ही प्रजा रची जाती है। कुछ ब्राह्मण ऐसे समझ लेते हैं कि पहले प्रजापिता था जब साकार में था, अब वो सूक्ष्मवतनवासी हो गया। तो वो प्रजापिता नहीं है, वो सूक्ष्मवतनवासी 'अव्यक्त ब्रह्मा' है। कोई कुछ समझते हैं, कोई कुछ समझते हैं; लेकिन मुरलियों के अनुसार वास्तव में प्रजापिता इस सृष्टि रूपी रंगमंच से कभी ऊपर नहीं जा सकता। उसका सृष्टि में आलराउण्ड पार्ट है। मु.ता.4.3.88 पृ.1 आदि में भी बाबा ने कहा है कि 'प्रजापिता ब्रह्मा, जो होकर गए हैं, वह इस समय प्रेजेंट हैं।' 'प्रजापिता ब्रह्मा तो बहुत ऊँच है ना। इनको कहेंगे- नेक्स्ट टू गॉड।'

(मु.26.11.76 पृ.2 अंत)

प्रजापिता पतित या पावन

अक्सर करके ब्राह्मण बच्चों को यह गलतफहमी हो जाती है कि शिवबाप जिस तन में आए हैं वह तो पावन होना चाहिए, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या 500 करोड़ प्रजा पतित है अथवा पावन है? ज़रूर पतित ही है, तो प्रजापिता का पार्टधारी भी पतित ही है। ता.26.2.74, पृ.2 की मु. के अन्त में बोला है, 'एकदम काँटों को बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी काँटे में किया है। तो काँटों पर भी प्यार है ना। तब तो उनको फूल बनाते हैं।... नम्बरवन काँटे में मैं आकर उनको नम्बरवन फूल बनाता हूँ।' जैसेकि कहावत भी है 'लोहे से लोहा काटा जाता है, विष से विष मारा जाता है, काँटे से काँटा निकाला जाता है।' तो बाप भी काँटों को सुधारने के लिए (बड़े से बड़े काँटे में) प्रवेश करते हैं। कृष्ण (ब्रह्मा) की आत्मा बड़े से बड़ा काँटा नहीं है; क्योंकि वह न ज्यादा सतोप्रधान बनती है और न ज्यादा तमोप्रधान बनती है। जबकि राम की आत्मा आलराउंड पार्टधारी होने के कारण सबसे ज्यादा सतोप्रधान और सबसे ज्यादा तमोप्रधान बनती है। इसलिए राम को चित्रों में काला ही दिखाया जाता है। यह भी संगमयुग की ही यादगार है। राम का प्रजापिता के रूप में जो पार्ट है वह भी तो मनुष्य ही है। भल तीव्र पुरूषार्थी है जो कि एक सेकेंड में टाप मोस्ट शिखर पर और एक सेकेंड में पांचवीं मंजिल से एकदम नीचे पहुँचने की क्षमता रखता है। जैसे कोई नाविक होता है उसको ट्रेनिंग दी जाती है कि कहीं ज़रूरत पड़े तो गिरे हुए को उठा के लावे। तो ऐसे ही राम वाली आत्मा का यह विशेष पार्ट है।... 'खट से डाउन और खट से अप' याने एक सेकेंड में ब्रह्मा सो विष्णु बनने का (बाकी अन्य आत्माएँ नम्बरवार

हैं), तो प्रजापिता (शंकर) का पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो कि दुनिया वालों की समझ में सहज ही नहीं आ सकता; क्योंकि उसमें एक ही शरीर में तीन आत्माएँ पार्ट बजा रही हैं- एवरप्योर शिव, ब्रह्मा, राम बाप। अब जिन बच्चों ने उस पार्ट को पहचाना है उनकी दृष्टि के ऊपर है कि वे किससे प्राप्ति करना चाहते हैं। प्रजापिता से प्राप्ति करना चाहते हैं जो पतित है या उसमें आये हुए एवरप्योर सुप्रीम सोल शिवबाप से प्राप्ति करना चाहते हैं? वे किसको देखते हैं? पतित को देखते या पावन को देखते ? जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

तो प्रजापिता का कार्य तो तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक दुनिया की 500 करोड़वीं आत्मा भी पावन बन परमधाम जाने की स्टेज पर न पहुँच जाए तब 'सर्व का सद्गति दाता राम' कहा जावेगा।

तीसरी दुनियाँ

जब राम वाली आत्मा के द्वारा राजधानी स्थापन हो जाती है तब जो सृष्टि की बीजरूप आत्माएँ हैं वो एक प्रकार से तीसरी दुनियाँ कही जाती है। 'पहली दुनियाँ' तो वो दुनिया है जहाँ से निकलकर बेसिक ज्ञान में आगमन होता है, याने 500 करोड़ की बेहद की दुनिया। फिर जब हमें ब्रह्माकुमारियों से बेसिक ज्ञान मिल जाता है तो वो हो गई तीसरी दुनिया। ये जो तीसरी दुनिया है वो 108 बीजरूप आत्माओं की छोटी दुनिया है। इन 108 बीजरूप आत्माओं में सारे संसार के हर धर्म के अविनाशी बीज समाये हुए हैं। अच्छे ते अच्छे पार्टधारी और बुरे ते बुरे पार्टधारी भी इस रूद्रमाला में समाये हुए हैं। इन बीजों के अंदर सारी दुनिया का दर्शन, सारी दुनिया के चरित्रों का अध्ययन कर सकते हैं। तीसरी दुनिया के ये 108 बीजरूप मणके मनसा, वाचा, कर्मणा, समय, सम्पर्क से , तन से व धन से एकजुट हो करके एक स्वर से उस बाप प्रजापिता को विश्वपिता के रूप में स्वीकार कर लेते हैं तो वह सारी दुनिया का पिता एडम या आदम साबित हो जाता है। अ.वा.ता.24.12.78, पृ.159-161 के मध्य में बोला है, 'लास्ट बाम्ब अर्थात् परमात्म बाम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डाइरैक्ट आलमाइटी अथार्टी का कर्तव्य चल रहा है।... सिखाने वाला डाइरैक्ट आलमाइटी है।... इस अंतिम बाम्ब द्वारा ...हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा।' स्पष्ट तो तभी दिखाई देगा जब विश्वपिता साकार में हो।

पतित-पावन सीता-राम

पतित-पावन राधा-कृष्ण, पतित-पावन ब्रह्मा-सरस्वती, पतित-पावन लक्ष्मी-नारायण नहीं कहा जाता है। गाया भी जाता है पतित-पावन सीता-राम। मु.ता.9.7.61 तो ज़रूर सृष्टि के उद्धार का कार्य अंत तक राम और सीता वाली आत्माओं के द्वारा ही सम्पन्न होता है। इसलिए ' राम राज्य' का गायन है। कृष्ण राज्य, नारायण राज्य या शिव राज्य का गायन नहीं है। शिव तो विश्व का मालिक बनते ही नहीं। विश्व का मालिक जो बनता है वो बच्चों को भी मालिक बना सकता है। इसलिए मु.ता. 29.7.78, पृ.2 के अन्त में बोला है, 'पतितों को पावन करने वाला भी वह है, जगत का मालिक भी वह है।' मु.ता. 17.7.72, पृ.1 के अन्त में बोला है 'राम राज्य राम द्वारा ही मिलता है। सतयुग से राम राज्य शुरू होता है।' तो परमपिता परमात्मा शिव ही राम के द्वारा हम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। अनेकों मुरलियों में बाबा ने इस गुह्य राज को स्पष्ट किया है।

• गाते भी हैं सर्व का सद्गति दाता राम; परंतु बंदर बुद्धि होने के कारण समझते नहीं कि राम किसको कहा जाता है। कहते हैं जिधर देखो राम ही राम रमता है। अभी (संगम पर) रमते तो मनुष्य हैं ना। तो इसको कहा जाता है अज्ञान अन्धियारा। (मु.ता.11.3.75, पृ.1 अन्त)

• बाप को करनकरावनहार पतित-पावन कहते हैं तो ज़रूर यहाँ (सृष्टि पर) आवेंगे न। पतितों को पावन कोई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। ज़रूर यहाँ आना पड़े। (मु.ता.24.2.74, पु.2 अन्त)

• शिवबाबा पार्ट न बजावे फिर तो कोई काम का न रहा। वैल्यु ही न होती। उनकी वैल्यु ही तब होती है जबकि सारी दुनियाँ को सद्गति में पहुँचाते हैं। तब उनकी महिमा होती है। भक्तिमार्ग में गाते हैं। (मु.ता.16.12.74, पृ.1 अन्त) (मुरलियों में बोला है निराकार राम और साकार राम के मेल को बाबा कहा जाता है। तो निराकार बाप शिव जिस साकार तन में प्रवेश कर शिवबाबा बनते हैं वह साकार तन राम वाली आत्मा का संगमयुगी तन है। तो जिस रूप (तन) के द्वारा सर्व की सद्गति होती है उसका ही गायन होता है "सर्व का सद्गति दाता राम")

• जबकि इनको सबकी सद्गति करने आना ही है तो ज़रूर किस रूप में आवेंगे ना। घर बैठे इनको आना है। (मु.ता.6.7.77, पृ.2 अन्त)

• एक ही बाप बैठ सभी को पावन बनाते हैं। एक पावन बनने से सब पावन बन जाते हैं। एक पतित तो सब पतित होते हैं। मु.ता.21.3.74, पृ.3 आदि (तो वह एक ही है राम बाप)।

• बाप पतित-पावन आते हैं तो सारी दुनियाँ के मनुष्य मात्र तो क्या प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाते हैं। अभी तो प्रकृति भी तमोप्रधान है। (मु.ता.20.1.75, पृ.2 मध्य)

• बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेंट हूँ। आकर सबको सद्गति देता हूँ। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। (मु.ता.28.3.74, पृ.2 आदि)

• पतित-पावन बाप के सिवाय न कोई पावन निराकारी दुनियाँ में जा सकते, न पावन साकारी दुनियाँ में आ सकते। (मु.ता.19.4.78, पृ.2 मध्य)

• पतित-पावन बाप आकर जब पावन बनावें तब हम जा सकते हैं। अब बाप तुम बच्चों को पावन होने की युक्ति बता रहे हैं। मु.ता.1.11.71, पृ.3 (ब्रह्मा बाबा के द्वारा पावन बनने की युक्ति नहीं बताई गई; क्योंकि उनका पतित-पावन बाप का पार्ट नहीं था। उनका तो माता का पार्ट था। उनके द्वारा केवल ज्ञान निकला। ज्ञान का गुह्य रहस्य बताने वाले सत् शिक्षक का पार्ट तो राम बाप के द्वारा सन् 76 से आरम्भ होता है। पावन बनने की युक्ति भी बाप अभी बता रहे हैं)

• पुकारती हैं- हे पतित-पावन आओ! तो ज़रूर उनको रथ चाहिए ना जिसमें आकर पावन बनावे। ज्ञान के बाण से तो पावन नहीं बनेंगे। मु.ता.30.5.70, पृ.2 आदि (तो वह रथ वही हो सकता है जिसका गायन होता है 'सर्व का सद्गति दाता राम')

राम बाप कहा जाता है, कृष्ण बाप नहीं

• बाप जिसको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने के कारण राम त्रेता वाला समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं। मु.ता.10.2.75, पृ.1 आदि (संगमयुग की बात है; क्योंकि संगमयुग पर ही निराकार राम शिव साकार तन प्रजापिता में प्रवेश करते हैं)।

• सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं। (मु.ता.26.2.68, पृ.3)

• वास्तव में राम भी परमपिता परमात्मा को कहते हैं। (मु.26.7.73 पृ.2 आदि)

• राम कहा जाता है शिवबाबा को। (मु.ता.6.9.68 पृ.3)

• प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता उनको ग्रेट-2 ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ। (मु.ता. 6.2.76, पृ.1 मध्यांत)

ब्रह्मा और प्रजापिता -आत्माएँ जुदा-जुदा

अब प्रजापिता ब्रह्मा ये दोनों आत्माएँ तो अलग-2 हैं ना। प्रजापिता अलग चीज़ और ब्रह्मा अलग। यज्ञ में गल्ती से दोनों को मिला करके एक व्यक्तित्व समझ लिया है। ये भूल हो गई। जैसे लौकिक संसार में माँ अलग होती है, बाप अलग होता है, ऐसे ही हमारे ब्राह्मणों के परिवार में भी माँ अलग है और बाप अलग है। बाप का पार्ट बजाने वाली राम वाली आत्मा अलग और

(कृष्ण) ब्रह्मा के रूप में मृदुल पार्ट बजाने वाली, मीठा पार्ट बजाने वाली माँ अलग है। कैसे अंतर करें? तो मुरली में बताया हुआ है कि 'शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्र॰कु॰कुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं।' (मु.ता.1.3.76 पृ.3 मध्य) तो दोनों काम अलग-2 हो गये। वर्सा देने का काम पहले होगा या ब्राह्मणों के रचने का काम पहले होगा? पहले रचना होगी। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की रचना हुई है; लेकिन उनको विश्व की बादशाही का कोई वर्सा नहीं मिल गया। वर्सा तो तब मिले जब राजधानी स्थापन हो जाए। अभी राजधानी स्थापन हुई कहाँ है? धर्म सत्ता, राज्य सत्ता एक के हाथ में आई कहाँ है? एक भाषा, एक राज्य, एक धर्म की स्थापना हुई कहाँ है? प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना कहाँ हुई? ये जो स्थापना हो तब वो 'प्रजापिता' साबित हो। मु.ता.15.11.87 पृ.3 के आदि में बाबा ने कहा है 'मुझे ब्रह्मा ज़रूर चाहिए तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए, जिसमें प्रवेश करके आऊँ, नहीं तो कैसे आऊँ? यह मेरा रथ मुकर्रर है। कल्प-2 इसमें ही आता हूँ।' (ब्रह्मा तो टेम्परी रथ है)
मुरलियों से ही ये भी सिद्ध हो रहा है कि ब्रह्मा अलग है और प्रजापिता ब्रह्मा अलग है।

- प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ कल्प के संगम पर होना चाहिए तब तो ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची जाए। (मु.ता. 17.3.78, पृ.3 मध्य)
- व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता नहीं होता है। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ चाहिए। (मु.ता. 5.8.73, पृ.2 मध्यांत)
- शिवबाबा... खुद कहते हैं जब मैं ब्रह्मा तन में प्रवेश करूँ तब तो ब्राह्मण सम्प्रदाय हो। ब्रह्मा यहाँ ही चाहिए। वह सूक्ष्मवतन वासी तो अव्यक्त ब्रह्मा है। मैं इस व्यक्त में प्रवेश करता हूँ। (मु.ता. 2.5.92, पृ.1 अंत)

त्रिमूर्ति की बायोग्राफी - ब्रह्मा लवफुल, शंकर लॉफुल

त्रिमूर्ति के चित्र में जो तीन मूर्तियों का चित्रण किया गया है उनमें ब्रह्मा को जिस पोज में बैठाया गया है, वो पोज इस बात को साबित कर रहा है कि उनके स्वभाव-संस्कारों में लिनियन्सी है, कठोरता नहीं है और शंकर को जो बैठक दिखाई गई है उससे ये साबित होता है कि उसके स्वभाव-संस्कारों में कठोरता है। जैसे बाप कठोर होता है और माँ मृदुल होती है। ऐसे ही यहाँ पुराने चित्रों में जो दिखाया गया है वो बिल्कुल क्लीयर दिखाया गया है कि ब्रह्मा जो है वो लवफुल स्टेज में बैठा हुआ है सहज और शंकर को ऐसे दिखाया गया है जैसे ठंड में अकड़ के ठिठुर रहा हो। ये अकड़ की जो बैठक है, वो कठोर स्वभाव की सूचक है। जैसे लॉ, कानून। कानून बहुत कठोर होता है। कानून कभी झुकता नहीं है। तो ऐसे ही ये पक्का

अहमदाबादी है। कैसा? अहम्-दा बादी। माना? अहम् माने अहंकार, दा माने देने वाला। अहमदाबादी माने बाद में। सबको झुकाने के बाद फिर अपने अहंकार को झुका देता है। वैसे अपने अहंकार को किसी के सामने झुकाने वाला नहीं है। सारी दुनिया को झुकाने के बाद फिर झुकेगा। ये पार्ट की जो बैठक दिखाई गई है एक्यूरेट दिखाई है।

ब्रह्मा वस्त्रधारी और शंकर निर्वस्त्र

त्रिमूर्ति चित्र में ब्रह्मा को तो कपड़े पहने दिखाया गया है और शंकर जी को तो लँगोट भी नहीं दिखाया गया है। क्यों? फ़कीरों को भी कपड़े मिल जाते हैं। शंकर को कपड़े नहीं मिले क्या? उन कपड़ों की तो बात ही नहीं। हमारा तो बेहद का ज्ञान है। कपड़े का मतलब है शरीर रूपी वस्त्र। ब्रह्मा जब तक जीवित रहे उनको अपने शरीर रूपी वस्त्रों का भान रहा। उनकी निराकारी स्टेज नहीं बन सकी। कोई कहे इसका प्रूफ़? तो प्रूफ़ है। जितने भी इस सृष्टि रूपी रंगमंच के मुख्य-2 धर्मपितायें हैं उनके फ़ोटो को ध्यान से देखेंगे चाहे क्राइस्ट हो, चाहे बुद्ध हो, चाहे गुरुनानक हो, चेहरे को देखने मात्र से लगता है कि वो जैसे इस सृष्टि पर नहीं हैं। उनकी आँखें, उनकी दृष्टि और वृत्ति ऊपर चली गई है। चेहरा उनका निराकारी स्टेज बताता है। ऐसी निराकारी स्टेज ब्रह्मा की किसी भी फ़ोटो में नहीं मिल सकती। इसलिए मृत्यु पर्यन्त ब्रह्मा साकारी स्टेज वाले रहे और मुरली में भी बाबा ने बोला है। 'माँ होती है साकार और बाप होता है निराकार।' निराकार का मतलब महीन बुद्धि वाला। माँ उतनी महीन बुद्धि वाली नहीं हो सकती, विशाल बुद्धि वाली नहीं हो सकती। तो शंकर को जो नग्न दिखाया गया है उसका मतलब है कि वो निराकारी स्टेज वाला है। बिंदुरूपी स्टेज में टिकने वाला है। निराकार का मतलब ये नहीं कि कोई बिंदी को ही निराकार कहा जाता है। निराकार का असली अर्थ क्या है? निराकार का अर्थ है- निराकारी स्टेज में रहने वाला।

शंकर का व्यक्त रूप में अव्यक्त पार्ट

अब कोई-2 ब्राह्मण ये कहते हैं कि शंकर का तो पार्ट बाबा ने बताया ही नहीं है। मु.ता.29.5.85 पृ.2 के आदि में बाबा ने तो कहा है- 'शंकर का पार्ट कुछ भी है नहीं।... शंकर क्या करते हैं? परंतु मुरलियों में बाबा ने यह भी कहा है- 'शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको।' मु.ता.14.5.70 पृ.2 आदि • सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी मंदिर यहाँ है; क्योंकि आते तो हैं न। (मु.ता.25.6.73 पृ.1 अन्त)

शंकर का पार्ट अस्वीकार करने वाले बच्चों से बाबा ने डायरैक्ट प्रश्न किया है 'कुमारका, बताओ, शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते हैं 500 करोड़, कोई कहते एक बच्चा ब्रह्मा है।

क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब शंकर किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाकी रहा शंकर तो दो हुए ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देते हो? भल त्रिमूर्ति कहते हैं; परंतु आक्युपेशन तो अलग-2 है ना।' (मु.ता.14.5.72 पृ.2 अंत)

कोई-2 ब्राह्मण यह भी कहते हैं वो तो समझाने के लिए ऐसे ही चित्र रख दिया है। तो क्या जवाब दिया जाए? चित्र रखा गया है समझाने के लिए। मु.ता.7.5.69 पृ.1 के मध्य में बाबा कहते हैं- 'यह त्रिमूर्ति तो दिखाया जाता है, उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव, न कि शंकर; परंतु बाजू में शिव (बिन्दु) को कैसे रखें तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव (बिन्दु) ऊपर में रखा है। इससे शोभा अच्छी होती है। सिर्फ़ दो से शोभा न हो। नहीं तो वास्तव में शंकर का कोई पार्ट है नहीं।' यानी जो नंगा बैठा हुआ है, उस नंगे के बिना त्रिमूर्ति के चित्र की शोभा ही उड़ जायेगी। ये कैसे हो सकता है? शोभा तो विष्णु से हो जायेगी। बोला कि इस त्रिमूर्ति में शंकर की जगह शिव को कैसे रखें? शिव तो बिंदु (है)। तो इसलिए शंकर को रखा है। चित्र चरित्र का चित्रण करने के लिए बनाया जाता है। शंकर का जो चित्र है, वो उसकी निराकारी स्टेज को चित्रण करने के लिए रखा गया है। निराकारी स्टेज में रहकर जो कर्म किये जाते हैं उनका पाप और पुण्य नहीं बनता है, तो कर्म किया और न किया बराबर हो जाता है; इसीलिए बोला है कि शंकर का कोई पार्ट नहीं; क्योंकि पार्ट रंगमंच पर कर्मेन्द्रियों द्वारा बजाया जाता है। सूक्ष्मवतन या मूलवतन में पार्ट नहीं बजाया जाता। पार्ट तो इस साकार सृष्टि पर चलेगा ना! तो शंकर का कोई पार्ट नहीं। वास्तव में उसे तो चित्रों में सिर्फ़ ध्यानमग्न अवस्था में बैठे हुए दिखाया जाता है। मतलब वो आत्मा कोई कर्मइन्द्रियों से पार्ट बजाने वाली आत्मा नहीं है जिसका चित्रण हो सके।

- शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है। (मु.ता.26.2.73 पृ.1 अन्त)
- शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है; लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है जिससे संहार करना है। (अ.वा.ता. 9.10.71, पृ.194 अंत)
- ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ, यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह-रूहान करना। (अ.वा.ता. 1.1.79, पृ.166 आदि)

• जो-2 मैंने काम किये हैं वह नाम रख दिये हैं। कहते हैं हर-हर महादेव। सभी के दुःख काटने (हरने) वाला। वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाजिर है, ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है। (मु.ता.4.11.73, पृ.2 मध्य)

• विष्णु को, शंकर को भी देह का अहंकार हो सकता है। (मु.ता.7.4.72, पृ.1)

• शंकर नहीं होता तो हमको (त्रिनेत्री शिव और ब्रह्मा ज्ञान चन्द्रमा को) शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे शंकर के साथ मिला दिया है। शिव-शंकर महादेव कह देते। तो महादेव बड़ा हो जाता। (मु.ता.5.7.85, पृ.2 अन्त,)

• शंकर भी देवता है। उन्होंने फिर शिव-शंकर इकट्ठा कर दिया है। अब बाप कहते हैं हमने इसमें प्रवेश किया है तो तुम कहते हो बापदादा। वह फिर कहते हैं शिव-शंकर। शंकर-शिव नहीं कहेंगे, शिव-शंकर कहते हैं। (मु.ता. 11.2.75, पृ.2 आदि)

• बाप बहुत मोहजीत है। कितने ढेर बच्चे हैं जो काम चिक्षा पर जल मरे हैं। परमपिता परमात्मा आते ही हैं शंकर द्वारा पुरानी दुनियाँ का विनाश कराने। फिर मोह कैसे होगा?
(मु.ता.1.5.71, पृ.1 मध्य)

• बहुत मनुष्य पूछते हैं शंकर का क्या पार्ट है ? प्रेरणा से कैसे विनाश कराते हैं? बोलो, यह तो गाया हुआ है। चित्र भी है। तो इस पर समझाया जाता है। वास्तव में तुम्हारा कोई इन बातों से कनेक्शन है नहीं। (मु.ता.23.3.78 पृ.3 आदि)

• शंकर के लिए कहते हैं ना एक सेकेंड में आँख खोली और विनाश। यह संहारकारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। (मु.ता.4.11.76, पृ.1 अन्त)

• वास्तव में तो शिव का बहुत पार्ट है, पढ़ाते हैं। शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। (मु.ता.14.5.70 पृ.2 आ.)

• बाप ने समझाया है शंकर का इतना पार्ट नहीं है। वह नेक्स्ट टू शिव है।
(मु.ता. 8.3.76, पृ.2 मध्य)

• चित्र भी दिखाया जाता है त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है; परन्तु तीन मूर्ति ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया, विष्णु और शंकर क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं, कुछ भी नहीं जानते। (मु.ता. 30.6.01, पृ.1 मध्य)

शंकर अर्थात् मिक्स पार्ट

शंकर यानी राम वाली आत्मा पूर्वजन्म से ही इतनी तमोप्रधान बन चुकी कि जब वह यज्ञ में सन् 1969 में दुबारा जन्म ले करके आती है तो अपने पाप कर्मों का बोझा ले करके आती है।

अपने इस दूसरे ब्राहमण जन्म में यदि वो लगातार याद करने का पुरुषार्थ न करे तो उसके पापों का खात्मा हो नहीं सकता। इसके लिए उसका तो सिर्फ़ याद का एक ही काम है, जिसको पार्ट नहीं कहा जा सकता; क्योंकि पार्ट कर्मेन्द्रियों की हलन-चलन को कहा जाता है। याद करना कोई कर्मेन्द्रियों से नहीं होता। याद करने का पार्ट नहीं कहेंगे। वो तो बुद्धि की बात है। बुद्धि से याद करने का कार्य उस आत्मा को करना होता है। इसलिए मुरली में कहा गया है- 'शंकर का कोई पार्ट नहीं है।' बाकी ये नहीं कहा कि शंकर नहीं है। शंकर तो है। शंकर का अस्तित्व है तब तो दुनियाँ में जितनी भी बड़ी-2 खुदाइयाँ हुई हैं, उनमें शंकर की नग्न मूर्तियाँ जितनी जास्ती तादाद में मिली हैं, उतनी दूसरे देवताओं की मूर्तियाँ नहीं मिली हैं। इससे ये साबित होता है कि ये जो मूर्ति है वो तो करीब सारे संसार में माननीय रही है और अभी भी है। मंदिरों में लिंग रूप जो दिखाया जाता है वो सिर्फ़ इसलिए दिखाया जाता है (क्यों)कि लिंग शरीर का वाचक है। जो सारा शरीर है वही लिंग है और उसमें जो ज्योतिबिंदु सुप्रीम सोल प्रवेश है वो है- स्टार, सुप्रीम सोल; इसलिए शिवलिंग पर बिंदी रखी जाती है। सोमनाथ मंदिर में शिवलिंग के बीच में हीरा लगाया गया था। हीरा है- सुप्रीम सोल और लिंग है- निराकारी स्टेज वाले शरीरधारी शंकर की यादगार। मोस्टली (ज्यादातर) लिंग काला बनाते हैं, लाल भी दिखाते हैं। लाल रंग क्रांति का सूचक है और काला रंग तामसी स्टेज का सूचक। शरीर एक ही है; लेकिन उसमें सतोप्रधान शिव की सोल भी कार्य कर रही है तो रजोप्रधान ब्रहमा की सोल भी कार्य कर रही है, तो तामसी स्टेज वाली राम वाली आत्मा भी उसी शरीर में बैठी हुई है। एक ही शरीर में शिव-कृष्ण-राम तीन आत्माएँ अलग-2 पार्ट बजाती हैं। कभी सतस्वरूप शिव की सोल कार्य कर रही है। कभी रजोप्रधान ब्रहमा की सोल कार्य कर रही है और तमोप्रधान राम की आत्मा तो स्वयं उसमें बैठी ही है। तो शंकर का वंडरफुल पार्ट है जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। शंकर तो निश्चित रूप में है; लेकिन उसकी आत्मा परमपिता शिव की याद में निरंतर लीन है। बाकी उसके तन से पार्ट बजाने वाली आत्मा या तो शिव की है या ब्रहमा की सोल है।

शिव की सोल ज्ञान सुनाने का, राजधानी को संगठित करने का पार्ट बजाती है; क्योंकि जो सोल एवर प्योर है वही यूनिटी बना सकती है। प्योरिटी के बगैर यूनिटी नहीं हो सकती।

• बच्चे जब स्नेह के गीत गाते हैं, तो बापदादा भी खुशी में नाचते हैं ना। इसीलिए शंकर डान्स बहुत मशहूर है। (अ.वा.14.12.83 पृ.52 मध्य)

स्थापना सो विनाश

ब्रह्मा की सोल उसमें क्या पार्ट बजाती है? जो कैसेट्स में उन्होंने गीत बजाय रखे हैं। वो बजाने वाले खुद ही नहीं जानते कि इसका अर्थ क्या है? 'गूँजी विनाश की वाणी फिर भी कितनी कल्याणी।' तो विनाश की वाणी जो गुँजायेगा, मुख से बोलेगा वो कोई तो व्यक्तित्व होगा। दादा लेखराज वाले व्यक्तित्व के द्वारा तो ऐसी कभी भी कोई विनाश की वाणी गूँजी नहीं; लेकिन वही सोल किसी ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके विनाश की वाणी गुँजाती है। क्यों? जिस आत्मा ने इतना मधुर पार्ट बजाया, इतना प्यार भरा पार्ट बजाया, वो विनाशात्मक वाणी कैसे चलायेगी? ब्रह्मा के द्वारा मुरली तो चली; लेकिन मुरली चलने के बाद ये जो कार्य हुआ वो तो बच्चों को दूध पिलाने का हुआ। वो तो स्थापना का ही कार्य हुआ; लेकिन (मुरली में) बताया (है कि) 'हर आत्मा का पार्ट है स्थापना, पालना और विनाश का।' जो स्थापना करेगा वो विनाश भी करेगा। जब तक वो विनाश का कार्य सम्पन्न न करे तब तक स्वर्ग के गेट में पास नहीं हो सकता। गेट वे टू हेविन इज़ महाभारत। महाभारत युद्ध से हर आत्मा को पसार ज़रूर करना पड़े। सत्य और असत्य के धर्मयुद्ध को हर आत्मा को लड़ना ज़रूर पड़े। मन्सा की पावर से लड़े या वाचा की पावर से लड़े, वो दूसरी बात।

ब्रह्मा की सोल उस ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके ऐसी-2 तीखी बातें सुनाती है (जिससे) ब्राह्मणों की दुनियाँ में जो असुर घुसे हुए हैं, उनको तलख पैदा हो जाती है। उनका दिल छटपटाने लगता है। उनको जैसे घाव लगते हैं; क्योंकि सच्ची बात सुन करके मिर्ची लगती है। मु.ता.9.5.73 पृ.3 के अन्त में बाबा ने बोला है- 'सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं।... तुम किसको सच बताते हो तो जैसे मिर्ची लगती है।' तो ब्रह्मा की सोल उस तन के द्वारा ऐसी तीखी बातें सुनाती है; लेकिन कैसी स्टेज में? निराकारी स्टेज में। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा जो अभी भी गुलज़ार दादी के द्वारा कार्य कर रहा है, वो विनाशात्मक वाणी नहीं चला सकता। बीजरूपी स्टेज ही वो सशक्त स्टेज है। तो राम वाली आत्मा के सानिध्य में पहुँच करके जैसेकि वो माँ पति के संरक्षण में पहुँच गई। विधवा माता होती है तो वो बच्चों से दबती है। बच्चों के अंडर दी कंट्रोल रहती है; लेकिन माँ जिसको खोया हुआ पति मिल जाए तो वो बच्चों के कंट्रोल में नहीं रह सकती। तो इस समय ब्रह्मा की सोल का वही पार्ट बीजरूपी स्टेज में शंकर के अंदर चलता है। भक्तिमार्ग में चित्रों में शंकर के माथे पर जो ब्रह्मा की यादगार चन्द्रमा दिखाया जाता है, वो इसी समय की यादगार है। वो शीतल पार्ट बजाने वाली आत्मा, शंकर के मस्तक पर धारण की हुई है यानी सर माथे पर उठाई हुई है। दूसरी आत्माओं को इतना सर माथे पर नहीं उठाया हुआ है, जितना उस आत्मा को उठाया हुआ है। मस्तक पर जो

चन्द्रमा है वो 16 कला सम्पूर्ण नहीं अधूरा चन्द्रमा दिखाते हैं। ये विनाशात्मक पार्ट ब्रह्मा की सोल ही बजाती है।

परमात्मा का नया पार्ट

अब अधिकांश ब्रह्माकुमार/कुमारी यह प्रश्न करते हैं कि अगर शंकर का पार्ट है तो बाबा ने मुरलियों और अव्यक्तवाणियों में स्पष्ट क्यों नहीं बताया कि जैसे ब्रह्मा का साकार में पार्ट है ऐसे शंकर का भी प्रैक्टिकल में पार्ट होगा। तो इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि बाबा ने मुरलियों में कहा है 'जो असली ब्राह्मण सो देवता बनने वाले हैं उनके लिए इशारा ही काफी है।' सीधे बता दिया जाय तो फिर परीक्षा किस बात की? बाप को पहचानने की भी एक परीक्षा है। • पहले-2 ज्ञान का आधार ही है बाप को पहचानना अर्थात् परखना कि यह बाप का कर्तव्य चल रहा है। पहले परखने की शक्ति आवश्यक है। परखने की शक्ति को नॉलेज़फुल की स्टेज कहते हैं। (अ.वा.8.6.73 पृ.93 अंत) यह बाप की पहचान का पेपर या परीक्षा सबसे बड़ी परीक्षा है। ज्ञान का मुख्य सब्जेक्ट भी बाप की पहचान का ही है। इस सब्जेक्ट को पास किये बगैर याद की यात्रा भी सम्पन्न नहीं हो सकती। सहज राजयोग नहीं हो सकता। बिंदी को तो खींच के याद करना पड़ता है। सहज नहीं। सहज नहीं होगा तो निरन्तर याद भी नहीं होगी और अगर सहज राजयोग नहीं हुआ, निरन्तर याद न हुई तो ऊँचा पद नहीं पाया जा सकता।

भगवान जब इस सृष्टि पर आता है तो उसको पहचानना सबके बस की बात नहीं है। उसको पहचानने के लिए ज्ञान नेत्र चाहिए। परमात्मा का पार्ट तो ज्ञान यज्ञ के अंदर कहीं दूसरी जगह ही बज रहा है। जो गीतापाठी यानी मुरलियों के पढ़ने वाले ब्राह्मण होंगे, वो ही उस पार्ट को समझ सकेंगे। जिन्हें मुरली से प्यार नहीं होगा वो उस पार्ट को भी नहीं पहचानेंगे।

बाबा हमेशा मुरलियों में कहते हैं 'बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं।' हद की दुनिया में बुद्धि लगाने वाले बच्चे उन बेहद की बातों का भी हद में अर्थ लगा लेते हैं। बाबा ने परमात्मा के नये पार्ट की पहचान के लिए तो मुरलियों में अनेकों इशारे दिये हैं।

जैसे मु.ता.23.8.73 पृ.3 के आदि में बोला है- 'एक दिन टेलीविज़न भी निकलेगा; परंतु सभी तो देख नहीं सकेंगे। देखेंगे, बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज़ भी सुनेंगे।' सब बच्चे तो देख नहीं सकेंगे; क्योंकि बहुत से बच्चे तो ब्रह्मा-सरस्वती, मनमोहिनी दीदी की तरह शरीर ही छोड़ करके सूक्ष्म शरीरधारी बन जायेंगे। उनको शरीर धारण ही नहीं करना है। वो किसी में प्रवेश करके पार्ट बजायेंगे। सब बच्चे तो टेलिविज़न देख नहीं सकेंगे। टेलिविज़न में देखेंगे बाबा मुरली चला रहे हैं। अब ब्रह्मा बाबा के समय तक तो टेलिविज़न भारत में आया ही नहीं था। उस समय की

तो बात ही नहीं हो सकती। बाद में ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ दिया। तो टेलिविज़न में बाबा कैसे मुरली चलावेंगे? अब रही गुलज़ार दादी की बात, गुलज़ार दादी को कोई शिवबाबा कहा जा सकता है? नहीं। अगर शिवबाबा कहा जाए तो फिर उनको 'ब्रह्मा ' भी कहा जाये। फिर तो धोती-कुर्ता पहना के बैठा लो; लेकिन नहीं। साड़ी-ब्लाउज वाला ब्रह्मा तो शास्त्रों में, चित्रों में कहीं नहीं दिखाया गया। तो स्पष्ट है कि बाबा का कोई प्रैक्टिकल पार्टधारी रथ है ज़रूर। जो आगे चलकर टेलिविज़न के माध्यम से भी प्रत्यक्ष होना है।

अ.वा.ता.16.1.75 पृ.16 की आदि में भी स्पष्ट किया है- 'घबराओ मत! बैक-बोन बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति(व्यक्त तन) द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं।' 'घबड़ाओ मत' - ये आश्वासन किसको दिया? ज़रूर कोई बच्चे हैं जो घबरा रहे हैं। बड़े-2 महारथियों की ऊपर-नीचे की चलन देख करके उनको घबराहट पैदा होती है कि ये कैसा स्वर्ग स्थापन हो रहा है? तो उनको बाबा ने आश्वासन दिया- घबड़ाओ मत। जैसे रीढ़ की हड्डी होती है। हड्डी तो पीछे होती है और व्यक्ति सामने होता है। वो व्यक्ति जो सामने दिखाई पड़ रहा है अगर उसकी रीढ़ की हड्डी निकाल दी जाए तो वो खड़ा रह सकेगा? नहीं खड़ा रह सकता। इसी तरीके से बाप और दादा बैक-बोन के रूप में उस ब्राह्मण बच्चे में कार्य कर रहे हैं यानी पीछे से तो शिव की और ब्रह्मा की शक्ति उस ब्राह्मण बच्चे में कार्य कर रही है; लेकिन सामने वो साधारण व्यक्ति दिखाई पड़ रहा है जो ना के बराबर है; क्योंकि साधारण पार्ट है। साधारण रूप; लेकिन उसके पीछे जो पावरफुल बैक-बोन है उसको कोई देख नहीं सकता। बैक-बोन बापदादा सामना करने के लिए लेकिन सामना किसका किया जाता है? दोस्तों का या दुश्मनों का? दुश्मनों का सामना किया जाता है। तो ब्राह्मणों की दुनिया में बापदादा किसका सामना करने की बात कर रहे हैं? ज़रूर ब्राह्मणों की दुनियाँ में ही कोई आस्तीन के साँप बन करके यज्ञ के अंदर घुसे हुए हैं जो यज्ञ को तहस-नहस कर रहे हैं। जैसे शास्त्रों में दिखाया गया कि विश्वामित्र के यज्ञ में असुरों ने कचड़ा डाला, यज्ञ विध्वंस किया। ज्ञान यज्ञ नहीं होने देते थे। ऐसे जो दुनियावी धनबल या बाहुबल की आसुरी ताकत वाले राक्षस यज्ञ में घुसे हुए हैं, बड़े-2 बिच्छू-टिण्डन, बड़े-2 डंक वाले, उनका सामना करने के लिए बैक-बोन बापदादा को प्रत्यक्ष होना पड़ता है। जो किताब छापी गई है उसमें 'व्यक्त' शब्द हटा दिया। व्यक्त तन की जगह लिख दिया- 'व्यक्ति' । उस समय की जो छपी हुई अव्यक्त वाणी है, वो देखिए। उसमें 'व्यक्त तन' है और किताब में छाप दिया 'व्यक्ति' । ताकि बात गोल-मोल हो जाए; क्योंकि व्यक्ति कहेंगे तो गुलज़ार दादी साबित हो सकती हैं; लेकिन 'व्यक्त' तन कहा जायेगा तो गुलज़ार दादी

साबित नहीं होंगी; क्योंकि गुलज़ार दादी तो तन से अव्यक्त हो जाती हैं। ब्रह्मा बाबा व्यक्त तन थे। जब उनमें शिव प्रवेश होता था तो वो व्यक्त पार्ट था। ब्रह्मा बाबा अव्यक्त नहीं होते थे। वो आत्मा गुम नहीं होती थी। मूँझ पैदा करने के लिए व्यक्त तन को बदल करके व्यक्ति कर दिया। तो 'व्यक्त तन द्वारा' यानी ज़रूर व्यक्त रूप में कोई ब्राह्मण बच्चा है, उसके द्वारा बैक-बोन बापदादा प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। ये 74/75 की वाणी है। इससे साबित हुआ कि वो ब्राह्मण बच्चा 74/75 से ही यज्ञ के अंदर उन असुरों का सामना करता चला आ रहा है। इससे साबित हो गया कि बाप का पार्ट ज़रूर प्रैक्टिकल साकार रूप में उस समय से ही चल रहा है।

अव्यक्त वाणी में ये बात भी आई है कि- 'व्यक्त में भी अब सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा है। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरा परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही।... साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है।' (अ.वा.18.1.70 पृ.166 अन्त)

- ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे।.... वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव(फाउंडेशन) बीच से निकल सकती है क्या? (अ.वा.30.6.74 पृ.84-85)
- ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। (अ.वा.30.6.74 पृ.83 मध्य)
- साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप है। (अ.वा.18.1.79 पृ.229 अंत)
- मैं थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह तो पुरानी जूती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं पुरानी जूती गई, अभी फिर नई लेते हैं। यह भी पुराना तन है ना।
(मु.ता. 11.7.70 पृ.2 मध्यादि)
- सबसे बड़े ते बड़ा संगमयुग का फल है जो स्वयं बाप प्रत्यक्ष रूप में मिलता। परमात्मा भी साकार रूप में साकार मनुष्य रूप में मिलने आता। इस फल में और सब फल आ जाते।
(अ.वा.31.5.77, पृ.202)
- हम इतनी श्रेष्ठ आत्माएँ हैं जो स्वयं परम आत्मा बाप, शिक्षक और सतगुरू बने हैं। इससे बड़ा भाग्य और किसी का हो सकता है? ऐसा भाग्य तो कभी सोचा भी नहीं होगा कि सर्वसम्बंधों से परम आत्मा मिल जायेगा। यह असम्भव बात भी सम्भव साकार में हो रही है। तो कितना भाग्य है। (अ.वा. 3.12.79, पृ.81 आदि)

• बाबा चला गया यह कह अविनाशी (साकार) सम्बंधों को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ़ पार्ट (ब्रहमा से शंकर) परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी (स्थूल में) सेवा स्थान चेंज करते हो ना। तो ब्रहमा बाप ने भी (स्थूल में) सेवा स्थान चेंज किया है। (अ.वा.18.1.78, पृ.35 आदि)

एडवांस पार्टी

• एडवांस पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है; लेकिन कोई-2 का पार्ट अंत तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवांस पार्टी का पार्ट है, किसका अन्तःवाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-2 महत्व है। फर्स्ट सेकेण्ड की बात नहीं। वैराइटी पार्ट का महत्व है। एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह जोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामी-ग्रामी हैं। (अ.वा.25.1.80, पृ.245 अन्त, पृ.246 आदि) (नामी-ग्रामी साकार सृष्टि पर होते हैं)

• बहुत बच्चे एडवांस में भी जाने वाले हैं। उनका कोई अफसोस नहीं करना है। जाकर रिसीव करेंगे। रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना। माँ-बाप तो पहले जाने चाहिए।

(मु.ता.27.2.73, पृ.4 मध्य)

• एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। आप लोग के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, ना जाओ; लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिये वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। अ.वा. 2.8.72, पृ.349 मध्य (फील्ड, परिवार व स्टेज ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं होता बल्कि इसी साकार सृष्टि पर होता है।)

• एडवांस का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामी-ग्रामी आत्मायें हैं उनका संगठन बहुत मजबूत है। (दिल्ली राजधानी में कृष्ण की प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म दिलाने के लिए) श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए धरनी तैयार करने का वंडरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्रगति से चल रहा है। (अ.वा. 18.1.80, पृ.222 अन्त)

• एडवांस पार्टी में किसका पार्ट है वह दूसरी बात है। बाकी यह सीन देखना तो बहुत आवश्यक है। जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया।... तो जाने का संकल्प नहीं करो।... अकेले जायेंगे तो भी एडवांस पार्टी में सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए जाना है यह नहीं सोचो, सबको साथ ले जाना है यह सोचो। (अ.वा.26.11.84, पृ.32 अन्त)

• वह (एडवांस पार्टी) भी अपना संगठन मजबूत बना रहे हैं। उन्हों का कार्य भी आप लोगों के साथ-2 प्रत्यक्ष होता जायेगा। अभी तो सम्बंध और देश के समीप हैं इसलिए छोटे-2 ग्रुप उन्हों

में भी कारणे अकारणे आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं।... कर्मणा वाले भी गये हैं, राज्य स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गये हैं। साथ-2 हिम्मत, हुल्लास बढ़ाने वाले भी गये हैं।... ग्रुप तो अच्छा बन रहा है; लेकिन दोनों ग्रुप साथ-2 प्रत्यक्ष होंगे।... वह (एडवांस) पार्टी भी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लान बना रहे हो ना, तो वह भी यूथ हैं अभी।... अंदर तो बहुत जोश है; लेकिन बाहर से कुछ कर नहीं सकते हैं, यह भी एक स्थापना के राज़ में सहयोग का पार्ट है।... अभी स्थापना की गुह्य रीति-रसम स्पष्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है और हम क्या कर रहे हैं। अभी आप भी क्वेश्चन करते हो कि वह क्या कर रहे हैं और वह भी क्वेश्चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं! लेकिन दोनों ही ड्रामा अनुसार बढ़ रहे हैं। (अ.वा. 18.1.85, पृ.133 मध्य, पृ. 134 आदि)

अव्यक्त वाणियों के उपरोक्त सभी महावाक्यों तथा बाबा की साकार मुरलियों के मनन-चिंतन-मंथन से यह गुह्य राज़ स्पष्ट होता है कि एडवांस पार्टी में तीन प्रकार के ग्रुप बाबा ने बताये हैं,

1. प्लानिंग पार्टी- यज्ञ के आदि में प्रजापिता और गीता माता के रूप में ज्ञान का बीजारोपण करने वाली राम-सीता की आत्माएँ साकार शरीर परिवर्तन कर एडवांस पार्टी में हेड्स के रूप में सन् 76 से प्रत्यक्ष होती हैं। जिनके लिए मु.ता. 27.2.73, पृ.4 के मध्य में बोला है, 'रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना। माँ-बाप तो पहले जाने चाहिए।' तो ये राम-सीता और उनके ग्रुप की आत्माएँ तीक्ष्ण बुद्धि होने के कारण नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना का सारा प्लान सेट करती हैं। कैसे स्वर्ग स्थापन होगा; कहाँ-2, किस-2 का नई दुनिया के आरम्भ करने का जन्म होगा आदि सारा प्लान उनकी बुद्धि में तैयार होता रहता है।

2.इन्स्पिरेटिंग पार्टी- उमंग-उत्साह दिलाने वाली, प्रेरित करने वाली आत्माएँ जो अन्तःवाहक शरीर द्वारा याने सूक्ष्म शरीर द्वारा सेवा करती हैं। जैसे मम्मा-बाबा, मनमोहिनी दीदी, विश्वकिशोर भाऊ आदि की आत्माएँ समय-2 पर बच्चों में प्रवेश कर उनको सेवा के लिए उमंग-उत्साह दिलाती हैं, प्रेरित करती हैं। मुरली में भी बाबा ने बोला है, 'मम्मा का भल शरीर नहीं है तो भी पुरुषार्थकरती रहती है, सर्विस पर जाती है। बच्चों के तन में विराजमान हो पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताती है।' (मु. ता. 22.7.72, पृ.2 आदि) 'यह मुकर्रर तन है। दूसरे कोई में कब आते ही नहीं। हाँ, बच्चों में कब मम्मा, कब बाबा आ सकते हैं मदद करने के लिए।' (मु.ता. 8.1.75, पृ.2 अन्त)

3. प्रैक्टिकल पार्टी- ऐसी प्योरिटी की पावन धारण करने वाली आत्माओं का ग्रुप जो पवित्रता और योगबल के द्‍वारा नई सतयुगी सृष्टि में कृष्ण जैसे सतोप्रधान बच्चों को जन्म देने के लिए योगबल से गर्भमहल तैयार करने का प्रैक्टिकल पुरुषार्थ करती है।

तो एडवांस पार्टी कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं है और न ही ऊपर में कोई ऐसी सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं का संगठन है। अ.वा.ता. 15.9.74, पृ.131 के मध्य में बोला है, 'बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।' इस महावाक्य का अर्थ भी कथित ब्राह्मण उल्टा लगा लेते हैं। समझते हैं कि ब्रह्मा (दादा लेखराज) जो साकार था वो आकारी सूक्ष्मवतन में चला गया है और वही फिर परमधाम में जाकर निराकारी तथा नये सतयुग में पुनः साकारी बनेगा; परंतु इस महावाक्य का यह अर्थ लगा लेना एकदम राँग है; क्योंकि पहली बात तो यही है कि ब्रह्मा का पार्ट बाप का नहीं बल्कि माँ का था। वो कृष्ण बच्चा बुद्धि वाली आत्मा है। तीक्ष्ण बुद्धि वाली राम बाप की आत्मा नहीं है। दूसरी बात- मुरलियों में, अव्यक्तवाणियों में कहीं भी ऐसी शिक्षा नहीं दी गई है कि बच्चों को शरीर छोड़कर ऊपर सूक्ष्मवतन या मूलवतन में जाकर आकारी व निराकारी बनना है। बाबा ने तो डाइरैक्शन दिया है कि तुम बच्चे शरीर में रहते हुए भी घड़ी-2 साकारी से आकारी व निराकारी बनने की प्रैक्टिस करो। शरीर में होते हुए भी आत्मा की ऐसी स्टेज हो जाय कि बुद्धि में देह और देह के सर्व सम्बंध भूल जाय; केवल ज्ञान में ही बुद्धि रमण करती रहे वो हो गई फरिश्ता की स्टेज। तो ऐसी फरिश्ताई आकारी स्टेज वाली आत्माएं अर्थात् एडवांस पार्टी कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं है जैसा कि बी.के. समझते हैं।

सन् 1969 में जब ब्रह्मा (दादा लेखराज) का शरीर छूटा तो उनकी आत्मा कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं चली गई। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा जिसे संदेशियाँ ध्यान में देखती हैं वह कोई ऊपर में नहीं है। वो ब्रह्मा तो यहीं इसी साकार सृष्टि पर हम नम्बरवार बच्चों में प्रवेश कर सर्विस करते हैं। इसी साकार सृष्टि पर ही कोई ऐसे विशेष ब्राह्मण बच्चे हैं जो साकार शरीर में रहते हुए भी अपनी ऐसी आकारी स्टेज बना लेते हैं कि उनके इस आकारी स्टेज के संगठन को 'सूक्ष्मवतन' या 'एडवांस पार्टी' समझ लिया जाता है। इसलिए बाबा ने मुरलियों में सूक्ष्मवतन को कट कर दिया है। तो यह महावाक्य राम वाली आत्मा के लिए साबित होता है; क्योंकि यज्ञ के आदि में जो राम बाप प्रजापिता के रूप में साकारी था वही पुनर्जन्म के पश्चात 1969 में जब ज्ञान में आता है तो ब्रह्मा की आत्मा और परमपिता शिव की आत्मा उनमें प्रवेश कर जाती है और महादेव शंकर के रूप में उसकी आकारी स्टेज बन जाती है। उसकी बुद्धि में ज्ञान

घुमड़ने लग जाता है। ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन चलने लग पड़ता है। शास्त्रों में जो गायन है 'शंकर की जटाओं में गंगा समाई' और 'सागर-मंथन हुआ' वह भी इसी अर्थ में है। तो प्रजापिता (राम बाप) जो यज्ञ के आदि में साकार था वही फिर 1969 से 1976 के बीच आकारी बन गया। वह देह और देह के सर्व सम्बंधों को लौकिक से अलौकिक में परिवर्तित करने वाला बन गया। फिर आकारी से वो निराकारी बन गया। निराकारी अर्थात् निःसंकल्प स्टेज। उस आत्मा को अपने पार्ट का, अपने स्वरूप का पक्का निश्चय हो गया कि मैं कौन? तो वह निश्चय-अनिश्चय रूपी जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो गया याने अमरनाथ (शंकर) की स्टेज पर सेट हो गया।

बाप का नाम, रूप, देश, काल

बाबा भी कहते हैं मैं तो साधारण गुप्त रूप में आता हूँ। मैं जब आता हूँ तो इतने गुप्त रूप में आता हूँ कि मूढ़मति लोग मुझे पहचान नहीं सकते। गीता में भी आया है-

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।। 9/11।।

मूर्ख लोग मानवीय शरीर का आधार लेने वाले मुझ परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, वे मूर्ख प्राणियों के ईश्वर स्वरूप मेरे श्रेष्ठतम ज्योतिर्बिन्दु अव्यक्त भाव को नहीं जानते।

• वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। (मु.ता.27.9.84. पृ.2 मध्य) गीता में भी अर्जुन ने भगवान से यही कहा है कि -

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।। 10/15।।

हे आत्माओं में श्रेष्ठतम्! हे प्राणियों को {ज्ञान द्वारा नया} जन्म देने वाले! हे भूतनाथ! हे देवाधिदेव! हे जगदीश्वर! आप स्वयं ही अपने द्वारा अपने यथार्थ स्वरूप को जानते हैं।

अपने द्वारा अपने यथार्थ स्वरूप को जानने वाले उस भूतेश्वरनाथ, देवाधिदेव, जगदीश्वर, ब्राह्मणों की भाषा में कहे तो परमपिता परमात्मा शिव सतगुरू ने अनेकों मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में अपना परिचय दिया है। ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद वो शिव सतगुरू किस नाम से, किस रूप में, किस देश में, कहाँ कार्य कर रहे हैं उसके पहचान के ढेर सारे महावाक्य मुरलियों में और अव्यक्त वाणियों में आये हुए हैं जो उस व्यक्ति पर ही लागू होंगे और किसी दूसरे पर लागू नहीं होंगे।

(I) देश

(I) लौकिक जन्मस्थान:- मु.ता.17.8.71 पृ.2 अन्त व 8.6.75 पृ.3 अन्त में बाबा ने बोला है 'बाप कहते हैं मैं भी मगध देश में आता हूँ।' (मगध देश कहा जाता है गंगा-यमुना के बीच के प्रदेश को जो कि यू.पी. में है, सिंध हैदराबाद में नहीं।) यू.पी. में भी कहाँ ढूँढेंगे इसलिए एक ही जिले की तरफ इशारा देते हुए बाबा ने ता.14.1.73 पृ.2 अंत व 12.1.78 पृ.2 अंत की मु. में बोला है 'जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परन्तु वास्तव में विश्व का वा सृष्टि का मालिक तो ल॰ना॰ बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनते नहीं। तो उनसे पूछना पडे कि वह मालिक निराकार है वा साकार है? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके।' विचार करने की बात यह है कि बाबा ने इतने बड़े भारत देश में जहाँ अनेकों जिले हैं वहाँ केवल फर्रुखाबाद जिले का ही नाम मुरलियों में क्यों लिया है? क्या सिर्फ़ फर्रुखाबाद के ही लोग मालिक को मानते हैं और दुनिया में कोई मालिक को नहीं मानता? यहाँ विचारणीय बात यह भी है कि बाबा ने 'भगवान' को मानने की बात नहीं कही बल्कि 'मालिक' को मानने की बात कही है। इसलिए बाबा ने मुरली में प्रश्न किया है- 'निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके तो उनसे पूछना पड़े कि वह मालिक साकार है व निराकार? स्पष्ट है कि मालिक से मतलब ज्योतिबिंदु शिवबाप से नहीं है बल्कि कोई साकार व्यक्तित्व है जो विश्व का मालिक बनता है और वह फर्रुखाबाद जिले का रहने वाला ही होगा। इसलिए अनेकों मुरलियों में बाबा ने फर्रुखाबाद का नाम लिया है।

अब फर्रुखाबाद में भी ढेर ब्रह्माकुमार। यहाँ तो एडवान्स पार्टी में एक संगठन ऐसा भी था गिना जाता है, जो कुछ साल पहले कन्नौज साइड में दो बसें भरके माउण्ट आबू ले गया था कुछ साल पहले वो भी अपनी वाणी चलाते हैं। वो तो छुटक-मुटक वाणी चलाते हैं। मुरली पढ़ते भी नहीं। तो बड़ा घपला हो गया। फर्रुखाबाद में विश्व के मालिक को कहाँ ढूँढें ? फर्रुखाबाद है; लेकिन फर्रुखाबाद में भी तो ढूँढना बड़ा मुश्किल। जैसे मु.ता.10.11.77 पृ.2 अन्त में बाबा ने ये भी बता दिया कि 'जहाँ बाप का जन्म होता है वह भूमि सबसे ऊँच (सब तीर्थों का भानजा) तीर्थ है।' तीर्थ माना क्या? तीर माना किनारा और थ माना स्थान; किनारे अथवा ठिकाने लगाने वाला स्थान। ठिकाने लगाने वाला स्थान तो इसी धरती पर होगा; लेकिन वहाँ होगा जहाँ सारे विश्व का पिता होगा। जहाँ सारे विश्व का पिता नहीं होगा वहाँ दुनिया का कल्याण नहीं हो सकता; क्योंकि बाप,टीचर,सद्‌गुरू ये तीनों ही सम्बन्ध संसार में कल्याणकारी माने जाते हैं। ये तीनों ही सम्बन्ध कभी भी अपने बच्चे का, शिष्य का और अपने फालोअर का अकल्याण नहीं

चाहते। वो सबसे ऊँच तीर्थ फिर फर्रुखाबाद की तरफ कहाँ ढूँढ़े? 'इतना ऊँच ते ऊँच बाप कैसे छी-2 गाँव में आते हैं। बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं।' (मु.ता.6.7.84 पृ.2 मध्य) (ब्रह्मा बाबा के तन में शिवबाबा की प्रवेशता कराची में होना सिद्ध होती है। कराची व माउंट आबू को गाँव नहीं कहा जा सकता। फिर वह गाँव कहाँ है तथा कौन-सा है? तो वह गाँव ज़रूर फर्रुखाबाद की तरफ कोई प्राचीन व ऐतिहासिक गाँव होना चाहिए।) उक्त गंदा गाँव माउंट आबू में तो कहीं देखने में नहीं आता। हाँ, यदि फर्रुखाबाद की तरफ चाहे तो देख सकते हैं। 'बंदरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल मिलता, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आए, गोद में लेकर, बच्चा बनाए गोद में लेता हूँ। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूँ।' (मु.ता.15.8.76 पृ.3 मध्यादि) (विचार करें क्या यह महावाक्य माउंट आबू पर लागू होता है?)

• यह वंडरफुल विश्व-विद्यालय है। देखने में घर भी है; लेकिन बाप ही सत शिक्षक है। घर भी है और विद्यालय भी है; इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं कि यह घर है या विद्यालय है; लेकिन घर भी है और विद्यालय भी है; क्योंकि जो सबसे श्रेष्ठ पाठ है, वह पढ़ाया जाता है। (अ.वा.22.4.84 पृ.265 आदि) (ऐसा वंडरफुल विश्व-विद्यालय जिसे देखकर लोगों को संशय हो कि यह घर है अथवा विद्यालय है। माउंट आबू में तो ऐसा वंडरफुल विश्व-विद्यालय कहीं है नहीं; क्योंकि वहाँ जाने वाले पहले से ही यह निश्चय करके जाते हैं कि वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में जा रहे हैं। फिर संशय की तो बात हो ही नहीं सकती। तो ऐसा वंडरफुल विश्व-विद्यालय फर्रुखाबाद जिले के उस प्राचीन गाँव कंपिल में है जहाँ वंडरफुल पार्टधारी शंकर ने 'कामरूपी विष-पी-लिया' याने काम विकार पर जीत पाई।)

• ज्ञान सागर को कोई महल तो नहीं है, झोपड़ी है। ज्ञान सागर झोपड़ी में रहना पसंद करते हैं। मु.ता.15.9.78 पृ.1 आदि (झोपड़ी भी असली होनी चाहिए। माउंट आबू में बनी हुई बनावटी झोपड़ी की तरह नहीं।) कोई कहे कि कंपिल में तो इतना बड़ा मकान बन रहा है, झोपड़ी तो दिखाई नहीं देती। फिर अभी वर्तमान में कम्पिल में जो मकान बन रहा है वो तो बच्चों के लिए बन रहा है। ज्ञानसागर तो उस महल में रहते भी नहीं।

• सोमनाथ मंदिर में बैठने वाला शिवबाबा आज कहाँ पढ़ा रहे हैं। भक्तिमार्ग में उनको हीरों-जवाहरों के महल दे दिए हैं। कितना मान है! यहाँ इनको पहचानते नहीं तो पूरा रिगार्ड भी नहीं रखते। राजऋषि, भारत को स्वर्ग बनाने वाले, पढ़ते देखो कितना साधारण हैं। जैसे गरीबों का

सतसंग होता है। साहुकारों के तो बड़े-2 हाल होते हैं। यहाँ देखो, कैसे पढ़ते हैं! (मु.ता.12.3.78 पृ.3 अन्त) (माउंट आबू में भी जहाँ सतसंग होता है वहाँ तो बड़े-2 हाल हैं।)

• जब गोरा है तो ताज होना चाहिए और साँवरा है तो ताज कहाँ से आवेगा? उनको कहा जाता है गाँवरे का छोरा, तो ताज कहाँ से हो सकता! गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना! मु.ता.8.2.75 पृ.2 मध्य (ब्रह्मा बाबा में जब शिवबाबा की प्रवेशता हुई तब वे गरीब नहीं थे बल्कि हीरे-जवाहरातों के बहुत बड़े व्यापारी थे।)

• बाबा इतना अंग्रेजी नहीं पढ़ा हुआ है। तुम कहेंगे- बाबा, अंग्रेजी नहीं जानते! बाबा कहते, वाह! मैं कहाँ तक सब भाषाएँ बैठ सीखूँगा! मुख्य है ही हिंदी, तो मैं हिंदी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका शरीर धारण किया है वह भी तो हिंदी ही जानता है। मु.ता.26.11.73 पृ.2 मध्य (ब्रह्मा बाबा की मातृभाषा तो सिंधी थी जबकि शिवबाबा बाप के रूप में जिस तन से विश्व के आगे प्रत्यक्ष होते हैं उसकी मातृभाषा हिंदी ही है।)

• सभी बच्चों पर मालिक को ही तरस पड़ेगा। बहुत हैं जो सृष्टि के मालिक को मानते हैं; परंतु वह कौन है? उनसे क्या मिलता है? वह कुछ पता नहीं है। फर्रुखाबाद में सिर्फ़ मालिक को मानते हैं। समझते हैं वह मालिक ही हमारा सब कुछ है। (मु.ता.22.2.78, पृ.1 मध्य)

• फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं न। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है मालिक हम उनके बच्चे हैं। तो ज़रूर वर्सा मिलना चाहिए न। (मु.ता.7.12.73 पृ.2 मध्य)

• जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं ना। अच्छा, उस मालिक से फिर क्या मिलेगा? कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे याद करें ? उनका नाम, रूप क्या है? कुछ पता नहीं है। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता, हम हुए रचना।
(मु.ता.22.1.72 पृ.1 आदि)

• फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं, परंतु अजुन इतनी ताकत नहीं। वहाँ मालिक को मानने वाले हैं तो समझाना चाहिए तुम कहते हो वह मालिक है। बाप फिर कहते हैं तुम मालिक हो।
(मु.ता.22.1.72 पृ.3 आदि)

• फर्रुखाबाद में सिर्फ़ मालिक को मानते हैं।... ऐसे तो नहीं, मालिक से हमको दुःख मिला है। याद करते ही हैं उनको सुख-शांति के लिए। (मु.ता. 22.2.78, पृ.1 मध्य)

• यह घर का घर भी है और यूनिवर्सिटी भी है। इसको ही गॉड फादरली यूनिवर्सिटी कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनियाँ के मनुष्य मात्र की सद्‌गति होती है। रीयल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी यह है। घर

का घर भी है। मात-पिता के सन्मुख बैठे हो। ...स्प्रीचुअल नॉलेज सिवाय स्प्रीचुअल फादर के और कोई भी मनुष्य दे नहीं सकता। (मु.ता. 18.8.76, पृ.1 आदि)

(II) <u>अलौकिक जन्म स्थान</u> - बाबा ने मुरलियों में बोला है भक्तिमार्ग में जो ड्रामा चलता है उसकी रिहर्सल संगमयुग पर होती है। भक्तिमार्ग में द्वापर के आदि में सोमनाथ मंदिर की स्थापना राजा विक्रमादित्य के द्वारा होती है। उसकी रिहर्सल/शूटिंग संगमयुग पर राजा विक्रमादित्य की आत्मा (ब्रह्मा) करती है। ब्रह्मा बाबा के द्वारा द्वापरयुग की शूटिंग के अपने जीवनकाल में यज्ञ के पैसों से एक भव्य सेवाकेंद्र खोला गया। वह सेवाकेंद्र था अहमदाबाद का 'हे प्रभु पार करो' की यादगार 'प्रभु-पार्क' में स्थित पालड़ी सेवाकेंद्र। वही सागर के कंठे पर भक्तिमार्ग का सोमनाथ मंदिर साबित होता है। ज्ञान सागर मधुबन (माउंट आबू) और उसका कण्ठा (किनारा) अहमदाबाद का उक्त पालड़ी सेवाकेंद्र जो उस समय का सबसे नज़दीकी सेवाकेंद्र था। बाबा ने मुरलियों में बोला है कि जिसका मंदिर बनाते हैं ज़रूर उससे कुछ प्राप्ति होती है। यहाँ भी बाबा ने सोमनाथ मंदिर रूपी सेवाकेंद्र बनाया तो ज़रूर उक्त व्यक्तित्व सोमनाथ से उन्हें भी कुछ प्राप्ति हुई है। मु.ता.4.3.75 पृ.2 के आदि में बोला है- 'सोमनाथ नाम रखा है; क्योंकि सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।' इसका मतलब बापदादा ने इशारा दे दिया कि उक्त सेवाकेंद्र से दो मूर्तियाँ (शंकर-पार्वती या लक्ष्मी -नारायण) प्रत्यक्ष होती हैं जो अंत में सारे विश्व को ज्ञानामृत व ज्ञानप्रकाश देने के निमित्त बनती हैं। यज्ञ के आदि में ब्रह्मा बाबा को अपने भागीदार (सोमनाथ) से यज्ञ की सारी ज़िम्मेवारी (बादशाही) मिली। चूँकि सम्पूर्ण मनुष्य सृष्टि वृक्ष के बीजरूप रचयिता बाप प्रजापिता की आत्मा शंकर का अलौकिक जन्म अहमदाबाद के उक्त पालड़ी सेवाकेंद्र में हुआ है। इसलिए अव्यक्त बापदादा ने अहमदाबाद को सर्व सेंटर्स का बीजरूप कहा है। अ.वा.ता.24.1.70 पृ.190 के मध्य में बोला है- 'अहमदाबाद को सभी से ज्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है।'

• गुजरात को सैम्पुल तैयार करने चाहिए। .... गुजरात को लाइट हाउस बनाओ। न (जो) सिर्फ़ गुजरात (का) लाइट हाउस हो बल्कि विश्व लाइट हाउस। (अ.वा.4.1.79 पृ.178)

• अहमदाबाद में स्वामीनारायण के 108 मंदिर हैं। करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामीनारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबाद पाण्डव भवन तैयार होने पर संगमयुगी

विश्व महाराजन श्री नारायण व उनके सहयोगी विश्व विजेता 108 मणकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए) सभी सेन्टर्स से भी यहाँ ही आवेंगे ना। (मु.ता. 5.3.75, पृ.3 आदि)

(ii) <u>बाप का अति साधारण रूपः</u>-

राम की आत्मा जिसके द्वारा शिवबाबा पिता का पार्ट बजाते हैं वह यज्ञ के आदि में भी साधारण व्यक्तित्व वाला था और अभी अंत में भी ऐसे ही है। मुरलियों से यह बात सिद्ध होती है।

• इनका तो 'वही' साधारण रूप जो है, 'वही' ड्रेस आदि है। फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। (मु.ता.5.2.74, पृ.2 आदि)

• वह है निराकारी, निरअहंकारी, कोई अहंकार नहीं। कपड़े आदि सब वही है, कुछ भी बदला नहीं है।... इनका तो वही साधारण तन, साधारण पहरवाइस है। कोई फर्क नहीं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन लेता हूँ। मु.ता.8.4.74 पृ.1 अन्त ('वही' माने यज्ञ के आदि वाला)

(शिवबाबा ब्रह्मा तन से यह मुरली चला रहे हैं। फिर 'वह' और 'इनका' इन शब्दों से किसकी तरफ इशारा किया है? ज़रूर यह दूसरी मूर्ति शंकर की तरफ इशारा किया है।)

• बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ। इसलिए कोई विरला पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझ नहीं सकते हैं। (मु.ता.4.2.74 पृ.3 अन्त) ब्रह्मा बाबा का तन तो साधारण नहीं था और उनके साथ में रहने वाले भी उन्हें अच्छी तरह से पहचानते थे कि ये ब्रह्मा है। फिर यह महावाक्य किसके ऊपर लागू होता है? ज़रूर शंकर के ऊपर; क्योंकि उनके लिए ही मु.ता.14.5.70 पृ.2 के आदि में बोला है- 'शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको।'

• वही महाभारत लड़ाई है तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है, वह सिवाय तुम बच्चों के किसको पता नहीं है। कहते भी हैं मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के (अर्थात् ब्रह्मा के असाधारण सुंदर) तन में नहीं आता हूँ।

(मु.ता.13.8.76 पृ.3 अन्त)

• तुम जानते हो कि ऊँच ते ऊँच भगवान, फिर सेकेंड नम्बर में ब्रह्मा। उनसे ऊँच कोई होता नहीं। इससे बड़ी आसामी कोई है नहीं; परंतु चलते देखो कितना साधारण हैं! कैसे साधारण रीति बच्चों से बैठते हैं! ट्रेन में जाते हैं! कोई क्या जाने कि यह कौन हैं? (मु.13.8.76 पृ.3 मध्य)

(iii) <u>बाप का लौकिक नामः</u>-

जैसे कृष्ण की आत्मा 'ब्रह्मा' बाबा का लौकिक नाम उनके अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप 'लेखराज' अर्थात् भाग्य का लेखा लिखने वालों का राजा पहले से ही निश्चित था, ठीक वैसे ही 'राम' की आत्मा 'शंकर' का लौकिक नाम मायावी रावण और उसके सम्प्रदाय से युद्ध करने में महान वीरता के अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप पहले से ही निश्चित होना चाहिए। महावीर को ही 'वीरों' का राजा इन्द्रदेव कहा जाता है। जिसके नाम पर बसाई गई 'इन्द्रप्रस्थ नगरी'और 'इन्द्र सभा' आज भी मशहूर है। पाण्डवों की विख्यात राजधानी माउन्ट आबू में नहीं बल्कि दिल्ली क्षेत्र में थी। जैसे ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) 'बडग' जाति के ब्राह्मण थे वैसे ही (रामबाप) की आत्मा शंकर भी कुलीन ब्राह्मण वर्ग से है। सच्चे ब्राह्मणों की रक्षा के लिए ज्ञान यज्ञ रचने में 'दक्ष' अर्थात् 'दीक्षित' होने के कारण उसे शास्त्रों में 'दक्ष-प्रजापति' कह दिया है। पति का अर्थ ही है रक्षा करने वाला।

<u>बाप का अलौकिक नाम</u>

जिस ब्राह्मण बच्चे के शरीर रूपी रथ के द्वारा शिवबाबा परमपिता के रूप में सारे विश्व में विख्यात होते हैं। उसके प्रमुख अलौकिक नाम शंकर, महावीर, सोमनाथ, सनत्कुमार आदि हैं।
शंकर अर्थात् शं+करोति। अर्थात् जो शांति कर देता है। गीता में भी आया है-

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।। 5/29।।

सब प्रकार के यज्ञ और तप का भोग स्वीकार करने वाले और सब प्राणियों के मित्रस्वरूप मुझ सर्व लोकों के महान ईश्वर को जानकर शांति को प्राप्त करता है।

(I) <u>विश्वनाथ-शंकर या सनत्कुमार</u>- मु.ता.24.1.75 पृ.2 के आदि में बाबा ने कहा है- 'उन (शिव) की आत्मा का ही नाम शिव है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते। जैसे ब्रह्मा, शंकर आदि।' मु.ता.22.2.75 पृ.1 के आदि में बोला है- 'बाप जब आते हैं तो ब्र॰वि॰शं॰ भी ज़रूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिवभगवानुवाच्य। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी हैं। मु.ता.10.2.72 पृ.4 के अन्त में बोला है-

'गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं।' भारतीय परम्परा में बड़े बच्चे को ही पहले राजाई देने का प्रावधान है। इसलिए रात्रि क्लास मु.ता.3.5.73 पृ.1 के मध्य में कहा है- 'बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। यह भी बड़ा है। जैसे मम्मा भी बड़ी है। यह सारा ज्ञान के ऊपर है।

जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो; परन्तु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य पद में बड़ा (विश्वनाथ) बनने वाला है। ऐसे बड़ों का फिर रिगार्ड भी रखना चाहिए; क्योंकि ज्ञान में तीखे हैं।'

विश्व में बड़ा अर्थात् महान बनने वाला महादेव शंकर ही वास्तव में ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र 'योगीश्वर सनत्कुमार' कहा गया है; क्योंकि योगियों का ईश्वर तो एक ही होगा। एक के ही दो नाम दे दिये हैं। योगबल के आधार पर आदिदेव बनने वाले इसी सनतकुमार के आधार पर आदि सनातन देवता धर्म का नाम सार्थक होता है। धर्मपिता के नाम पर ही धर्म का नाम विख्यात होता है। जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन, बुद्ध से बौद्ध धर्म आदि-2। ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र सनतकुमार का भक्तिमार्ग में जिक्र आया है। वास्तव में ब्रह्मा-सरस्वती को आदिदेव और आदिदेवी नहीं कह सकते; क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी; परंतु वही ब्रह्मा-सरस्वती अपना पतित शरीर त्यागकर जब विशेष ज्ञानी और योगी तू आत्मा शंकर-पार्वती में प्रवेश करते हैं तो आदि देव और आदि देवी के नाम से संसार में प्रत्यक्ष होते हैं।

(II) महावीर- वास्तविकता तो यह है कि जैन तीर्थंकर 'महावीर' और हिन्दुओं में नग्न वेशधारी 'शंकर' भी एक ही व्यक्तित्व के दो अलग-2 नाम हैं जिसकी साकारी सम्पूर्ण अवस्था की यादगार तपस्वी मूर्ति दिलवाड़ा मंदिर में स्थापित है। महान वीरता के कर्तव्य के आधार पर शिवबाबा ने भी मु.ता.8.1.74 पृ.1 के मध्य में उनका अलौकिक नाम 'महावीर' ही रखा है। 'हनुमान का भी दृष्टांत है न। इसलिए तुम्हारा महावीर (तीर्थंकर) नाम रखा है। अभी तो एक भी महावीर नहीं।... अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे।'

(III) <u>सोमनाथ</u>- सोम चंद्रमा को कहते हैं। ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा को ज्ञान यज्ञ में नाथने वाली, यज्ञ के आदि में ब्रह्मा के साक्षात्कारों का रहस्य बताने वाली प्रजापिता की आत्मा ही अपने वर्तमान पुनर्जन्म में सोमनाथ बनती है। योगबल से बनने वाली इनकी निरोगी कंचन काया की यादगार में आज भी मंदिरों में मूर्तियों को सजाने का उल्लेख करते हुए बाबा ने मु.ता.5.7.75 पृ.1 के मध्य-अंत में कहा है- 'सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है। कितना सजाते हैं।... आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमआत्मा(परमात्मा) की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह शरीरों की है।.... अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो, हम सोमनाथ बन रहे हैं।' (यहाँ ब्रह्मा बाबा के शरीर रूपी रथ की सजावट की बात नहीं है; क्योंकि वे शरीर रहते जीते जी अपनी सम्पूर्ण निरोगी कंचन काया नहीं बना सके।

सोमनाथ-सोमनाथिनी के रूप में पार्ट बजाने वाली शंकर-पार्वती की आत्माओं की एक्यूरेट पहचान के लिए बाबा ने मुरलियों में उनका नाम, रूप, देश, काल, यहाँ तक कि लौकिक शरीर की आयु भी बताई है। यानी उन आत्माओं का पूरा हुलिया बता दिया। सिर्फ़ मुरलियों के उन महावाक्यों का अर्थ समझने की दरकार है। सन् 1965 में मम्मा के शरीर छोड़ने के पश्चात ब्रहमा बाबा को यह महसूस हुआ कि यज्ञ में तो बिच्छू-टिंडन जैसे बच्चे घुसकर बैठ गये हैं। श्रेष्ठ बच्चे तो वही थे जो कि यज्ञ के आदि में ब्रहमा बाबा को डाइरैक्शन देते थे। बाबा को उन बच्चों की बार-2 स्मृति आने लगी। इसलिए सन् 1965 के बाद की मुरलियों में बाबा ने बोला- 'बाप तो अनन्य (अन्)+अन्य अर्थात् उन जैसा अन्य कोई सैम्पल न (हो, ऐसे) बच्चों को ही याद करेंगे। सबको तो याद नहीं करेंगे।' उन्हीं अनन्य बच्चों के पुनर्जन्म के वर्तमान शरीर की आयु का उल्लेख करते हुए बाबा ने मु.ता.17.2.75 पृ.1 के अन्त में कहा है- 'आगे जो मरे हैं, फिर भी बड़े हो कोई 20, कोई 25 वर्ष के हो गए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं।' (सन् 1967 में चलाई हुई इस वाणी के अनुसार उस समय 20 और 25 वर्ष वाली एडवांस पार्टी की आत्माएँ यानी पार्वती और शंकर का शारीरिक जन्म क्रमशः सन् 1946/1947 व सन् 1941/1942 में(हुआ) होना चाहिए।)

• भल कितने भी बड़े संन्यासी, पंडित, विद्वान आदि हैं; परंतु तीसरा नेत्र देने की कोई में ताकत नहीं। यह तीसरा नेत्र देने के लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है। (मु.4.10.74 पृ.1 अंत)

• सूत ही सारा मुँझा हुआ है। सिवाय बाप के उसको कोई सुलझा न सके। (मु.20.5.72 पृ.2 अंत)

• तुम बच्चों को तो वण्डर खाना चाहिए। बाप बिगर कोई भी यह बातें समझा नहीं सकते। यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। यह तो हमारा बाबा है। इनका कोई माँ-बाप है नहीं। कोई कह नहीं सकते, शिवबाबा किसका बच्चा है। यह बातें बुद्धि में घड़ी-2 याद रहे- यही मन्मनाभव है। टीचर पढ़ाते हैं; परन्तु खुद कहाँ से पढ़ा नहीं है। इनको कोई ने पढ़ाया नहीं। वह नॉलेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। ज्ञान का सागर है। चैतन्य होने कारण सब कुछ सुनाते हैं।

(मु.ता.17.6.84 पृ.1 अंत)

टीचर- सुप्रीम सोल शिव ब्रहमा बाबा के द्वारा माँ का पार्ट बजाता है। माँ के रूप में ब्रहमा के द्वारा जो ज्ञान दूध दिया उसको मुरली कहा जाता है; लेकिन उस मुरली को गीता ज्ञानामृत नाम नहीं दिया जा सकता; क्योंकि शास्त्रों में गायन है अमृत कलश कब निकला? जब मंथन हुआ। जब तक मुरली के महावाक्यों का मनन-चिंतन-मंथन नहीं होता तब तक वो गीता

ज्ञानामृत नहीं कहा जा सकता। सुनने-सुनाने का काम हुआ; लेकिन उसमें क्या रहस्य भरा हुआ है, वो रहस्य माना वो सार किसी की बुद्धि में नहीं आया। वो गीता ज्ञानामृत देने वाला प्रैक्टिकल रूप में कौन है? ब्रह्मा बाबा तो मुरलियों के रहस्य को नहीं समझ पाये। 76 की घोषणा का अर्थ किसने समझा? शिव ने ब्रह्मा बाबा के मुख से जो ज्ञान सुनाया उस ज्ञान की गहराई को, उसके क्लैरिफिकेशन को, उसके मनन-चिंतन-मंथन को, उसकी तह को कोई मनुष्य आत्मा नहीं पकड़ सकती। शिव का जो एक्सप्लेनेशन देने का टीचर का रूप है वो टीचर का रूप शंकर का ही है और किसी मनुष्य आत्मा का नहीं हो सकता। शिव जो कुछ भी कहना चाहते हैं, जो कुछ भी समझाना चाहते हैं, वो समझने वाला पहला बच्चा कौन जिसके द्वारा सब समझते हैं? वो एक ही रूप है। वो सोल ही परमात्मा बाप की बताई हुई गहराई की बातों को पूरा समझ सकती है और वो ही कार्य में ला सकती है। वो ही बाप-टीचर-सद्गुरू का रूप बन सकती है। इसीलिए मुरली में भी ये बात आई है कि • तुम राजऋषि हो ना। जटाएँ खुली हों और मुरली चलाओ। साधु-सन्त आदि जो भी सुनाते हैं, वह सब है मनुष्यों की मुरली। यह है बेहद बाप की मुरली। (मु.ता.25.11.84 पृ.3 अंत)

- वास्तव में जटाएँ तुमको हैं। राजऋषि तुम हो। ऋषि हमेशा पवित्र रहते हैं। राजऋषि हो घरबार भी सम्भालना है। (मु.ता.4.9.77 पृ.2 अंत)

भक्तिमार्ग में जटाएँ कौनसे देवता को दिखाते हैं? शंकर को ही दिखाते हैं। इसका अर्थ टीचर का रूप शंकर के द्वारा ही हुआ ना। और सतगुरू माना साथ ले जाने वाला। आत्मा को सच्ची गति प्रदान करने वाला। कल्पवृक्ष के चित्र में सबसे ऊपर आत्माओं को साथ ले जाने वाले के रूप में शंकर को ही दिखाया गया है। सद्गुरू का काम क्या होता है? सख्त पार्ट बजा करके बच्चों की सद्गति करना। सदगुरू है तो सद्गति करेगा। पहले मन-बुद्धि की सद्गति की शुरुआत की निशानी (हैं) वो जो ज्ञान देते हैं वो सुनने से बुद्धि चलायमान हो जाती है। सतगुरू अकालमूर्त गाया जाता है। अकालमूर्त माना जिसकी मूर्त को काल खा नहीं सकता। वो मूर्त उसी की है जिसे कालों का काल महाकाल कहा जाता है।

विष्णु चतुर्भुज

त्रिमूर्ति के चित्र में ब्रह्मा है लवफुल और शंकर है लॉफुल। फिर भी जो परिवर्तन होना चाहिए वो परिवर्तन नहीं हो रहा है। कारण कि जब तक लव और लॉ का बैलेन्स रखने वाली वो तीसरी मूर्ति परिवर्तन शक्ति नहीं आती तब तक परिवर्तन नहीं हो सकता। वो तीसरी मूर्ति है विष्णु।

विष्णु माना नो विष एट आल। त्रिमूर्ति के पुराने 30 ×40 के चित्र में विष्णु की मूर्ति के नीचे की लिखत में जो चार नाम 'लक्ष्मी-नारायण' और 'राम-सीता' दिये हुए हैं वे विष्णु की भुजाओं के रूप में चार सहयोगी आत्माएँ हैं। यही विष्णु चतुर्भुज का वास्तविक स्वरूप है; लेकिन बाद में जो अंग्रेजी और गुजराती भाषा में त्रिमूर्ति का चित्र बनाया गया उसमें से अज्ञानतावश राम-सीता का नाम उड़ा दिया गया। ब्रह्मा बाबा ने भी इस पर गौर नहीं किया। इसका मतलब उनकी बुद्धि में भी यह बात नहीं आई कि चार भुजाओं का वास्तविक अर्थ क्या है? उन्होंने दो भुजा लक्ष्मी की और दो भुजा नारायण की समझ ली। यह नहीं समझा कि संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण तथा सतयुगी 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्मी-नारायण के स्वभाव-संस्कारों का जो मेल संगमयुग में होता है वही विष्णु का रूप है। यही चार आत्माएँ सतयुग और त्रेता में नारायण का राज्य और रामराज्य स्थापित करने के लिए निमित्त बनती हैं। तभी तो बाबा ने मुरलियों में बोला है- 'विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण के तो बच्चे पैदा होते हैं, जो तख्त पर बैठते हैं।' (मु.ता.6.9.92 पृ.2 मध्य) बाप ही आकर पवित्र प्रवृत्तिमार्ग की स्थापना करते हैं इसलिए 'विष्णु की भी 4 भुजा फिर ब्रह्मा-सरस्वती और शंकर के साथ पार्वती दिखाते हैं।' (मु.ता.28.9.90 पृ.1 अन्त)

इस तरह विष्णु का जो चित्र है वह भी यहाँ अर्थ सहित है। उसमें जो अलंकार है वे इस बात के सूचक हैं कि संगमयुग में लक्ष्मी-नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माएँ गुणों से व ज्ञान रत्नों से भरपूर होंगी; इसलिए विष्णु का सम्पन्न रूप दिखाया जाता है। ब्रह्मा का रूप सम्पन्न रूप नहीं है। शंकर का जो रूप है वह भी सम्पन्न रूप नहीं है; क्योंकि वह गॉडफादर इज़ वन कहा जाता है तो अकेला हुआ ना; लेकिन जब जगदम्बा और पार्वती तथा ब्रह्मा और सरस्वती स्वभाव, संस्कारों से कम्बाइंड होते हैं तो विष्णु का टाइटिल धारण करते हैं। विष्णु द्वारा पालना कौन-से जन्म से शुरू होती है? 21 जन्मों में से जो पहला जन्म है वहाँ से विष्णु की पालना शुरू होती है। यह सतयुगी लक्ष्मी-नारायण की बात नहीं है बल्कि संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण की बात है। विष्णु की चार भुजा में से दो भुजा ब्रह्मा की तरफ तथा दो भुजा शंकर की तरफ दिखाई गई है; लेकिन शंकर कोई भुजा नहीं है, वह तो स्वयं भुजाओं का चलाने वाला, डाइरैक्शन देने वाला, करावनहार परमात्म पार्ट है। अ.वा.ता.18.1.78 पृ.35 के मध्य में भी इसका उल्लेख है- 'हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएँ बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएँ बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं।' तो कराने

वाला बाप धर्मराज शंकर का पार्ट तो वर्तमान समय चल रहा है; लेकिन हज़ार भुजाओं में मुख्य चार भुजायें कौन? चार भुजायें हैं- ब्रह्मा-सरस्वती, और पार्वती-जगदम्बा।

विष्णु के चित्र में जो भुजाएँ दिखाई गई हैं, वो चार भुजाएँ वो हैं जो कि अज्ञानता के आधार पर जड़ है। चाहे वो सीता वाली आत्मा हो, चाहे वो सरस्वती वाली आत्मा हो, चाहे वो ब्रह्मा वाली आत्मा हो और चाहे वो जगदम्बा वाली आत्मा हो। चार आत्माएँ हैं जो जड़ भुजाओं के रूप में इस समय वर्तमान ब्राह्मणों की दुनिया में प्रैक्टिकल में पार्ट बजाने वाली हैं। ब्रह्मा की आत्मा, सरस्वती की आत्मा, जगदम्बा की आत्मा, सीता की आत्मा। चारों भुजाओं के चार आयुध दिखाए गए हैं।

लेफ्ट हैंड (में) कमल फूल। राइट हैंड के मुकाबले लेफ्ट हैंड अच्छा होता है या बुरा होता है? बुरा होता है। उससे सफाई का काम किया जाता है। कचड़े को साफ किया जाता है। इस दुनिया के जो सब दुखदाई काँटे हैं (वो) साफ कर दिए जाएँगे। वो कौन-सी शक्ति है? जगदम्बा, जो महाकाली बनती है। महाकाली क्या करेगी? दुनिया से सब असुरों का, सब काँटों का सफाया कर देगी। उसको कमल फूल के रूप में दिखाया गया है। कमल फूल कीचड़ में रहता है। बाहर की दुनिया कीचड़ है। जगदम्बा अभी कहाँ पार्ट बजा रही है? कीचड़ की दुनिया में पड़ी हुई है; लेकिन बुद्धि से उसकी लगन कहाँ है? महाकाली के पुराने चित्रों में पाँव के नीचे भले शंकर की मूर्ति है; लेकिन माथे पर शंकर का चित्र रखा हुआ है। माने किसकी याद है? वो भी शिव-शंकर भोलेनाथ की याद में रहती है। जीवन कहाँ है? संसार रूपी कीचड़ में; लेकिन बुद्धि से उपराम है, तो वो कमल का फूल यादगार है। ऐसे कमल फूल के रूप में जिंदगी बिताने वाली और दुनिया में कोई आत्मा नहीं है।

उसके ऊपर लैफ्ट हैंड में पहुँचो। कौन है? शंख। लक्ष्मी। जो लक्ष्मी है वो नारायण के लैफ्ट हैंड में रहती है। पत्नी है ना! वामांगी है ना! बाईं ओर ऊपर का, जो ऊँची स्टेज वाला हाथ है (उसमें) शंख दिखाया गया (है)। माना एडवांस पार्टी में वो जब अपना पार्ट बजाना शुरू करती है तो जैसे महाभारत युद्ध शुरू होता है। पहले कौन से बाजे बजते हैं? शंखनाद होता है। युद्ध शुरू हो रहा है तो शंखनाद करते हैं। शंख माना ज्ञान का शंख चारों तरफ फूँका जाता है, बेसिक में भी जगते हैं, एडवांस में भी सोए हुए जगते हैं और बाहर की दुनिया में भी सोए हुए संन्यासी मीडिया की रणभेरियों द्वारा जगते हैं। शंख की आवाज़ चारों तरफ फूँकती है, वो शंख का पार्ट है।

राइट हैंड में राइटियस पार्ट बजाने वाले ब्राह्मणों की दुनिया में कौन हैं, जिन्होंने अभी तक राइटियस ही पार्ट बजाया है, लैफ्टिस्ट का पार्ट बजाते हुए किसी ने नहीं देखा होगा? ब्रह्मा-

सरस्वती। जो ऊपर हाथ दिखाया गया है, उसमें आयुध है- स्वदर्शनचक्र। ज्ञान के चक्र में सबसे मुख्य ज्ञान की बात कौन-सी है, जो मम्मा ने निकाली? मम्मा ही थी, जिसने यह ज्ञान का प्वाइंट निकाला, यह चक्र चलाया, भले सारा चक्र नहीं चलाया; लेकिन एक मुख्य बात मम्मा ने निकाल दी कि जैसे हम आत्मा ज्योतिबिन्दु हैं, साँप का बच्चा साँप और साँप का बाप भी साँप जैसा लम्बा। तो हम आत्मा बिन्दु, हमारा बाप भी ज्योतिबिन्दु। पहले लिंग के रूप में याद करते थे। पहले भक्तिमार्ग में अंगुठाकार आत्मा को मानते थे। शालीग्राम के रूप में अंगुठाकार मानते थे; लेकिन मम्मा ने साबित कर दिया कि आत्मा ज्योतिबिन्दु है तो आत्मा का बाप भी ज्योतिबिन्दु ही होना चाहिए; इसलिए तब से जो लिंगाकार बनाया गया उसमें बिन्दु डाल दिया। तो यह ऊपर की जो भुजा है वो साबित हो जाती है- ज्ञान का चक्र। सारी दुनिया के बीच में, सारी दुनिया के कल्याण के लिए ओमराधे मम्मा ने फर्स्ट क्लास चक्र चलाया।

राइटियस भुजाओं में नीचे की भुजा है- गदा। गदा धारदार तलवार नहीं है, मोटा हथियार है। ज्ञान की धार तीखी होनी चाहिए; लेकिन ब्रह्मा बाबा तो बच्चा बुद्धि थे, तो गदा चलाते थे। कोई भी बात आ जाए, कोई भी परीक्षा आ जाए, ड्रामा की ढाल कहो, गदा कहो। अब ड्रामा तो गोल-2। गदा हाथ में आया, ऊपर गोल-2 लगा हुआ है, सीधा गदा मारा। जो हुआ स्थिर, हिलने वाले नहीं। ड्रामा। तो उनका गदा का पार्ट है। चार आयुध दिखाए जाते हैं। ये चारों आयुधधारी जो भुजाएँ हैं, नम्बरवार जड़त्वमय बुद्धि वाली भुजाएँ हैं, यह आत्मा का पार्ट नहीं है। आत्मा का पार्टधारी वो है जिसमें बुद्धिमानों की बुद्धि सुप्रीम सोल प्रवेश करता है और उस राम वाली आत्मा के बगैर वो चारों भुजाएँ चालू नहीं हो सकतीं। विष्णु के पार्ट में ये पाँच आत्माएँ हैं।

वास्तव में ये त्रिमूर्ति का चित्र यथार्थ नहीं है। इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है कि तुम बच्चों को त्रिमूर्ति का यथार्थ चित्र निकालना चाहिए। • अभी शिवजयंती आती है, तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। त्रिमूर्ति ब्र॰वि॰शं॰ का एक्यूरेट क्यों न निकालें। (मु.ता.19.1.75 पृ.3 मध्यादि) इसलिए पहले जब हम अपनी बुद्धिरूपी पॉकेट में ज्ञानदाता बाप के ज्ञान के आधार पर यथार्थ चित्र चित्रित करेंगे तभी रियल में भी यथार्थ चित्र चित्रित कर सकेंगे।

जब इन तीन मूर्तियों को यथार्थ रूप से हम बुद्धिरूपी पॉकेट में धारण करेंगे तभी हम सम्पूर्ण द्विज कहलायेंगे। द्विज माना दो जन्म लेने वाले। ब्राह्मण कुल में बच्चे का जन्म होता है तो पहला जन्म मानते हैं और ब्राह्मण का दूसरा जन्म तब माना जाता है जब यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। यज्ञोपवीत धारण करने का मतलब है तीनों सूत्रों की पहचान हो जाना कि

असली प्रैक्टिकल देहधारी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर कौन हैं। ये द्विजन्मा जन्म होता है जिस कारण से ब्राह्मणों को द्विज कहा जाता है।

- शुरू-2 में अख़बार में निकाला गया था कि ओम मंडली इज़ दि रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड। तो यही बात फिर अंत में, सबके मुख से निकलेगी। (अ.वा.13.9.74 पृ.125 मध्य)

त्रिमूर्ति और तिरंगा

इसी ओम मंडली अर्थात् तीन मूर्तियों की मंडली की यादगार में आज भी झण्डारोहण करते हैं। ज़रूर ये कुछ करके गये हैं। ये तीन कपड़े हैं, तीन शरीर रूपी वस्त्र हैं। एक केसरिया वस्त्र क्रांति करने वाला, सारी दुनिया में ज्ञान की क्रांति कर देता है; इसलिए केसरिया वस्त्र दिखाया है। संकल्पों की क्रांति होती है और संकल्पों की क्रांति से बढ़ करके सारी दुनिया में खूनी क्रांति भी हो जाती है। बड़ा भारी रिवोल्यूशन हो जाता है। उसकी यादगार में झण्डा में केसरिया वस्त्र विनाशकारी शंकर की क्रांतिकारी यादगार दिखाया है। फिर सात्विक दुनिया की स्थापना हो जाती है; इसलिए विष्णु का सतोप्रधान सफेद रंग दिखाया गया है। विष्णु द्वारा नई दुनिया की पालना (होती है)। जो नीचे हरा रंग दिखाया है वो हरित क्रांति का सूचक (है)। जो भी ब्रह्मा द्वारा परमात्मा बाप की वाणी सुनता है उसका मन हरा हो जाता है। दुःखों की दुनिया भूल जाती है; इसलिए हरा वस्त्र भी दिखाया हुआ है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के 3 प्रतीक वस्त्र दिखाए जाते हैं जिनकी यादगार में गाते हैं विश्व विजय करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा। झंडा ऊँचा रहे हमारा। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। कपड़े का झण्डा विश्व विजय करेगा या मनुष्य विश्व विजय करते हैं? मनुष्य विजय करते हैं। ऐसे कोई तीन वस्त्रधारी मनुष्य इस सृष्टि पर हुए हैं जिन्होंने सारी दुनिया के ऊपर विजय पाई है। उनकी यादगार में भारत वर्ष में झण्डारोहण करते हैं, फिर गाते है विश्व विजय करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा। आज भी इन त्रिमूर्ति की याद में रास्तों पर, टिवाटों पर, मकानों पर नाम रखे हुए (हैं) त्रिमूर्ति भवन, त्रिमूर्ति रास्ता, त्रिमूर्ति रोड। उसका मतलब क्या है? इन तीन के बताये हुऐ रास्ते पर चलो। उसकी यादगार में रोड का नाम रख दिया त्रिमूर्ति रोड।

- चित्र भी दिखाए जाते हैं त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है; परंतु तीन मूर्ति ब्र॰वि॰शं॰ को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया? विष्णु और शंकर क्या करते हैं? कहाँ रहते हैं? कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। (मु.ता.22.6.91 पृ.1 मध्य)
- त्रिमूर्ति में तीन शेर देते हैं। यह तो है ही शेर, बकरी, घोड़े। तो कोर्ट ऑफ आर्म्स की भेंट में यह दिया जाता है। बाकी जानते हो वह दुनिया तो कोई है नहीं। (मु.ता.22.4.69 पृ.2 मध्य)

• गवर्मेन्ट जो त्रिमूर्ति बनाती है उनमें होना चाहिए ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। यह फिर जानवर लगा देते हैं। सिद्ध करते हैं सभी जानवर ही है।... बाप रचयिता का चित्र है नहीं और नीचे चक्र भी लगा हुआ है। वह समझते हैं चरखा है; परंतु है यह ड्रामा सृष्टि का चक्र। अब चक्र का नाम रखा है अशोक चक्र।... अभी तुम इस चक्र को जानने से अशोक बन जाते हो।

(मु.ता.10.1.73 पृ.2 आदि)

एक्यूरेट याद

अंत में फिर ये बात आती है जैसे बताया कि हमारी पढ़ाई के चार मुख्य सब्जेक्ट्स हैं- ज्ञान,योग,धारणा,सेवा। ज्ञान अर्थात् बाप की पहचान, वो तो हमें मिल गई। फिर अगला मुख्य सब्जेक्ट है- योग। योग अर्थात् याद का बल ही एकमात्र आधार है जिसके द्वारा इन्द्रिय जीते जगतजीत बना जा सकता है; लेकिन याद भी यथार्थ और एक्यूरेट चाहिए। एक्यूरेट से मतलब सिर्फ़ ज्योतिर्बिंदु निराकार शिव को याद करना नहीं; क्योंकि मु.ता.9.5.71 पृ.2 के मध्य में बोला है- 'अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वह क्या चीज है? तुम कहते हो अखण्ड ज्योति स्वरूप है; परंतु ऐसे है नहीं। अखण्ड ज्योति को याद करना रॉंग हो जाता है। याद तो एक्यूरेट चाहिए ना। सिर्फ़ गपोड़े से काम नहीं चलेगा। एक्यूरेट जानना चाहिए।'

अपनी एक्यूरेट पहचान के लिए बाबा ने मुरलियों में तो संकेत दिया ही है। साथ ही साक्षात्कार के द्वारा त्रिमूर्ति का चित्र भी बनवाया है। चित्र में एक है ब्रह्मा के रूप में माँ का साकार पार्ट, प्रत्यक्ष पार्ट और दूसरा है शंकर के रूप में त्रिमूर्ति शिव का निराकारी स्टेज का गुप्त पार्ट। बाप, टीचर व सदगुरू का पार्ट। अब याद किस रूप को करना है? जिन बच्चों ने ब्रह्मा के रूप में माँ का साकार पार्ट देखा, उससे प्यार की पालना ली, गोद की अनुभूति ली वे उस प्यार में इतने दीवाने हो गये कि उनको ब्रह्मा माँ का वो साकार स्वरूप ही याद आता है। जबकि ब्रह्मा का विनाशी तन होने के कारण बाबा ने मुरलियों में पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि उस विनाशी रूप को याद नहीं करना है। मु.ता.28.3.76 पृ.2 के आदि में बोला है-

'ख़त्म होने वाली चीज़ को याद नहीं किया जाता है। नया मकान बनता है तो फिर पुरानी से दिल हट जाती है। यह फिर है बेहद की बात।' इसमें बेहद की बात यही है कि ब्रह्मा का तन तो पुराना मकान होने के कारण खतम होने वाला था और शिवबाबा का नया मकान-शंकर का तन-निर्माणाधीन था। तो दिल उससे लगाने की बात है। मु.ता.19.4.78 पृ.1 के आदि में बाबा ने स्पष्ट किया है- 'मैं यहाँ (ब्रह्मा के) इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ

(शंकर के तन में) करना है, जहाँ अब (भविष्य में) आना है। ऐसे नहीं यहाँ (ब्रह्मा को) याद करना है।'

- बाप कहते हैं कि तुम इन(ब्रह्मा) के शरीर को भी याद न करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते। (मु.ता.27.11.77 पृ.3 अंत)
- ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिए उनका फोटो भी न रखो। (मु.ता.17.5.71 पृ.4 मध्य)

जिन बच्चों ने बाबा की मुरलियों के महावाक्यों का गूढ़ अर्थ नहीं समझा वे अब भी ब्रह्मा बाबा के जड़ चित्रों को याद करते रहते हैं और शिवबाबा को सिर्फ़ बिंदु समझकर परमधाम में याद करते हैं। जबकि मु.ता.2.3.78 पृ.2 के मध्य में बोला हैं- 'बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हों उनको तुम्हें याद नहीं करना है।'

जो बच्चे मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात ज्ञान में आये, उन्होंने साकार (ब्रह्मा) से पालना नहीं ली तो उन्हें साकार याद भी नहीं आता। वे सुप्रीम सोल को ही याद करते हैं। बाबा ने मुरलियों में जो बिंदु को याद करने का डाइरैक्शन दिया वह ऊँची स्टेज तक पहुँचने का एक साधन मात्र था। इस पर जिन्होंने अमल किया उन्हें बिंदु को याद करने की पक्की प्रैक्टिस हो गई। ज्योति को याद करने से आत्मा में ज्ञान का प्रकाश आता है। बुद्धि महीन और सूक्ष्म बनती है। महीन बुद्धि ही विचार-सागर-मंथन कर ज्ञान की गहराई में जा सकती है। ज्ञान की गहराई में पहुँचने पर उन आत्माओं को यह ज्ञान होता है कि परमात्मा निराकार है, निराकार को याद करो। इसका वास्तविक अर्थ क्या है? जब हम कहते हैं कि परमात्मा निराकार है, निराकार को याद करो। तो ये समझ लिया जाता है कि बिंदु को याद करो; लेकिन ये तो छोटे स्तर की पढ़ाई थी। जबकि ये बात बताई गयी कि बिंदु को याद करो। वो तो ऊँची स्टेज तक पहुँचने के लिए एक साधन दिया था कि बिंदु को याद करेंगे तो बुद्धि महीन बनेगी और महीन बुद्धि परमात्मा को पहचान सकेगी, परमात्म पार्ट को पहचान सकेगी। अगर बुद्धि मोटी होगी तो परमात्मा के पार्ट को और अपने पार्ट को भी पहचान नहीं सकती। तो साधन मिल गया और साधन के द्वारा साध्य को प्राप्त कर लिया माना परमात्मा को पहचान लिया। फिर बिंदु को याद करना (चाहिये) या परमात्मा के असली स्वरूप को याद करना (चाहिये) ? असली स्वरूप को याद करना चाहिये।

निराकार का अर्थ सिर्फ़ बिंदु नहीं बल्कि बाप का वो प्रैक्टिकल पार्ट (है) जो बुद्ध, क्राइस्ट, नानक की तरह निराकारी स्टेज में स्थित है। बाप के उस निराकारी स्टेज का सूचक नग्न चित्र त्रिमूर्ति

में दिखलाया हुआ है। तो जिन्होंने परमात्मा का प्रैक्टिकल रूप पहचान लिया हो वे सिर्फ़ बिंदु को क्यों याद करेंगे?

इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक आदि जितने भी विधर्मी धर्मपितायें और उनके फालोअर्स हैं वे सब निराकार को याद करते हैं। वे साकार को नहीं मानते। वे राम-कृष्ण को भगवान के रूप में नहीं मानते; क्योंकि वे सब हैं निवृत्तिमार्ग के, जबकि हमारा है प्रवृत्तिमार्ग का धर्म। प्रवृत्तिमार्ग के धर्म में शरीर और आत्मा दोनों की प्रवृत्ति को मानकर चलना पड़े। सिर्फ़ आत्मा बिंदु को याद करने वाले केवल मुक्ति पायेंगे। वे जीवनमुक्ति नहीं पा सकते अर्थात् डायरैक्ट स्वर्ग में नहीं जा सकते। सुप्रीम सोल बाप जिस साकार तन के द्वारा स्वर्गीय राजधानी की स्थापना करते हैं उस साकार व निराकार के कम्बाइन्ड रूप को याद करने वाली आत्माएँ ही जीवनमुक्ति को प्राप्त करने वाले चरित्रवान देवताएँ बनते हैं।' अ.वा.ता.18.1.70 पृ.166 के आदि में बोला है-' विचित्र (निराकार)के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जाएँगे। अगर सिर्फ़ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आए।'

- परमपिता परमात्मा हमको सम्मुख बैठ नॉलेज देते हैं। उस बाप की ही अव्यभिचारी याद रहनी है। और कोई नाम-रूप की याद नहीं रहनी है। (मु.ता.4.8.72 पृ.1 आदि)

गीता में भी आया है -

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।। 8/7।।

इसलिए हर समय मुझे याद कर और {स्व} माया से युद्ध कर। निस्सन्देह मुझमें मन-बुद्धि से अर्पित हुआ तू मेरे ईशत्व अर्थात् शासकीय भाव (राजाओं के स्वभाव) को ही पाएगा।

सवेरे उठने का प्रयत्न करो, रात को जागो। रात को ये बुद्धि की यात्रा करना बहुत सहज है और तुमको मदद भी बहुत मिलेगी। दिन में तो याद भल न भी ठहरे। रात को पुरुषार्थ करना सहज है। अच्छा, ज्यादा नहीं, 5 मिनिट से ही शुरुआत करो। किस बात की शुरुआत? अपनी आत्मा को याद करने की। आत्मा ज्योतिबिंदु याद आवेगी तो परमपिता परमात्मा भी सहज-सहज याद आवेगा। ये स्वधर्म में टिकने की बात है। स्व माना आत्मा, धर्म माना धारणा। आत्मिक स्थिति की धारणा में तुम 5 मिनिट से भी शुरुआत करेंगे तो भी तुमको बहुत फायदा होगा।

भक्तिमार्ग में भी गीता लिखी है। जब गीता लिखी गई थी तो द्वापरयुग सतोप्रधान था। सतोप्रधानता में सच्ची बातें लिखी गई होगी। वहाँ भी आया है- स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। अध्याय 2 ।। 40।।

ये आत्मिक स्थिति के धर्म में थोड़ा भी टिकना भी महान भय से रक्षा कर देता है। ऐसा भी समय आवेगा (जब) चारों तरफ भय के बादल मंडरा रहे होंगे, उस समय तुम्हें थोड़ी-सी भी याद होगी, आत्मिक स्थिति की थोड़ी-सी भी प्रैक्टिस होगी तो तुम उस भय से बच जायेंगे।

- बच्चे कहते हैं- बाबा, योग में रह नहीं सकते। अरे, तुमको सम्मुख कह रहा हूँ मुझे याद करो, फिर योग अक्षर तुम क्यों कहते हो? योग कहने से ही तुम भूलते हो। बाप को याद कौन नहीं कर सकते? लौकिक माँ-बाप को कैसे याद करते हो? यह भी माँ-बाप हैं ना। यह भी पढ़ते हैं। सरस्वती भी पढ़ती है। पढ़ाने वाला एक बाप ही है। (मु.15.1.84 पृ.2 अंत)
- इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती। (मु.ता.23.6.99 पृ.2 म.)
- तुमको तो आँख बंद भी न करनी चाहिए। याद में बैठना है ना। आँखें खोलने से डरना न चाहिए। आँखें खुली हों, बुद्धि में माशूक ही याद हो। आँखें बंद करना तो गोया अंधा हो गया। यह कायदा नहीं। बाप कहते हैं याद में बैठो। ऐसे थोड़े ही कहते हैं आँखें बंद करो। आँख बंद कर वा कांध ऐसे नीचे कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे?.... आँखें बंद हो जाती हैं। कुछ दाल में काला होगा। और कोई को याद करते होंगे। (मु.28.3.75 पृ.3 मध्य)
- तुम बाप को भी भृकुटी के बीच में देखेंगे। बाबा भी यहाँ है, तो भाई (ब्रह्मा की आत्मा) भी यहाँ है। (मु.ता.12.3.04 पृ.3 आ)
- बच्चे कहते हैं- बाबा, याद कैसे करें? अरे, अपने को आत्मा तो समझते हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है तो उनका बाप भी इतना छोटा होगा। वह पुनर्जन्म में नहीं आता है, यह बुद्धि में ज्ञान है। बाप याद क्यों नहीं आएगा? (मु.ता.3.9.04 पृ.4 अं.)
- सबसे मुख्य बात है बाप को बहुत प्यार से याद करना है। जैसे बच्चे माँ-बाप को एकदम चटक जाते हैं वैसे बहुत प्यार से बुद्धियोग द्वारा बाप को एकदम चटक जाना चाहिए। (मु.ता.22.2.99 पृ.3 म.)

याद करने के लिए सबसे अच्छा टाइम कौन-सा है? उसके लिए भी मुरली में बताया कि

- बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ, फिर 2 बजे, 3 बजे उठकर याद करो। (मु.3.5.75 पृ.1 अंत) भक्तिमार्ग में भी कहा जाता है- 'राम सुमिर प्रभात मेरे मन।'

• याद क्या है? बाप की याद वा बाप के कर्म द्वारा बाप की याद वा बाप के गुणों द्वारा बाप की याद है तो वह याद ही हुई ना। रूप की याद हो वा नाम की वा गुण की वा कर्तव्य की, याद तो एक ही हुई ना। आप लोग बड़ा मुश्किल बना देते हो।... बाबा के सिवाए कुछ है ही क्या। जब प्रैक्टिकल में सर्व स्नेही बाप को ही समझ लिया तो फिर उसको याद करने लिए कोई प्लैन सोचा जाता है क्या? (अ.वा.4.7.71 पृ.124 मध्य)

• अमृतवेले का समय अच्छा है। उस समय बाहर के विचारों को लॉकप कर देना चाहिए। कोई भी ख़याल न आए। बाप की याद रहे। (मु.2/6/85 पृ.1)

• अमृतवेले उठ बाप से रूह-रूहान करो तो सब परिस्थितियों का हल स्पष्ट दिखाई देगा। कोई भी बात हो उसका रेस्पान्ड रूह रूहान में मिल जायेगा। (अ.वा. 14/2/78 पृ. 49)

• अमृतवेले का ठीक करेंगे तो सभी ठीक हो जायेगा। जैसे अमृत पीने से अमर बन जाते हैं। तो अमृतवेले को सफल करने से अमर भव का वरदान मिल जाता है। फिर सारा दिन कोई भी विघ्नों में मुरझायेंगे नहीं। सदा हर्षित रहने में और सदा शक्तिशाली बनने में अमर रहेंगे। अमृतवेले जो अमर भव का वरदान मिलता है वह अगर न लेंगे तो फिर मेहनत बहुत करनी पड़ेगी। (अ.वा.8/7/73 पृ. 98)

• संकल्प ही नीचे लाता है ; संकल्प को ब्रेक देने की पावर होगी तो ज़्यादा समय अव्यक्त स्थिति में स्थित रह सकेंगे। अपने को आत्मा समझ उस स्वरूप में स्थित होना है। जब स्व-स्थिति में स्थित होंगे तो भी अपने जो गुण हैं वह तो अनुभव होंगे ही।... आत्मिक स्वरूप में बाबा की याद नहीं रहे- यह तो हो नहीं सकता है। (अ.वा. 23/7/69 पृ. 108)

ओमशान्ति